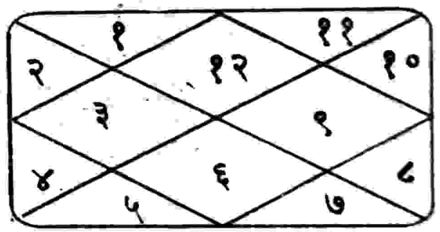
श्रीकाशीनाथेन विरचिता

लग्नचन्द्रिका

'सुबोधिनी' हिन्दीव्याख्योपेता

M.Katyayana

टीकाकार :- देवज्ञवाचस्पतिः **श्रीवासुदेवः**



प्रकाशक

ठाकुर प्रसाद कैलाशनाथ बुक्सेलर

राजादरवाजा, वाराणसी

फोन : ३५५०५८

सन् २००१ मूल्य : ३२/-

मुद्रक- सावित्री प्रिंटिंग प्रेस, वाराणसी।

लग्नचन्द्रिकास्थविषयाणामनुक्रमणिका

॥ श्री ॥ M. Katyayana

लग्नचन्द्रिका

मङ्गलाचरणम्—

नत्वा गुरु गणेशं च वासुदेवः सतां मुदे ।
अलं करोम्यहं भाषाटीकया लग्नचन्द्रिकाम् ॥

तमिस्रया जगद्ग्रस्तं यो जीवयति भूतले ।
तं वन्दे परमानन्दं सर्वसाक्षिणमीश्वरम् ॥

सम्पूर्ण जगत् के साक्षी और परमानन्दस्वरूप सूर्य भगवान् की मैं वन्दना करता हूँ। क्योंकि वे ही इस अन्धकाराच्छन्न जगत् के प्राणियों को जीवन देते हैं।

अथ विशेषसंज्ञाः ।

तनुर्धनं च भ्राता च सुहृद्पुत्रो रिपुर्वधूः ।
मृत्युश्च धर्मः कर्माऽयो व्ययो भावाःप्रकीर्तिताः ॥ १ ॥

तनु, धन, भ्राता, सुहृद्, पुत्र, रिपु, स्त्री, मृत्यु, धर्म, कर्म आय और व्यय, ये क्रम से बारह भावों के नाम कहे गये हैं ॥ १ ॥

विषमोऽथ समः पुंस्त्री क्रूरः सौम्यश्च नामतः ।
चरः स्थिरो द्विस्वभावो मेषाद्या राशयः क्रमात् ॥ २ ॥

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन ये बारहों राशियाँ क्रमशः विषम-सम, पुरुष स्त्री, क्रूर सौम्य और चर-स्थिर, द्विस्वभाव संज्ञक हैं ॥ ६ ॥

दुश्चिक्यं स्यात्तृतीयं च सुखं सद्म चतुर्थकम् ।
बन्धुसंज्ञं च पातालं हिबुकं, पञ्चमं च धीः ॥ ३ ॥

तृतीय भाव की दुश्चिक्य, चतुर्थ भाव की सुख, गेह, बन्धु, पाताल तथा हिबुक है। पञ्चम भाव की धी (बुद्धि) संज्ञा है ॥ ३ ॥

द्यूनं द्युनमथास्तं च जामित्रं सप्तमं स्मृतम् ।
दशमं त्वंबरं मध्यं छिद्रं स्यादष्टमं गृहम् ॥ ४ ॥

सप्तम भाव को द्यून, द्युन अस्त और जामित्र कहते हैं। दशमभाव को अम्बर तथा मध्य कहते हैं, अष्टम भाव की छिद्र संज्ञा है ॥ ४ ॥

एकादशं भवेल्लाभः सर्वतोभद्रमेव च ।
व्ययो रिष्फं द्वादशं च त्रिकोणं नवपञ्चमे ॥ ५ ॥

ग्यारहवें भाव को लाभ और सर्वतोभद्र भी कहते हैं। बारहवें भाव की व्यय और रिष्फ संज्ञा है। नवम और पञ्चम भाव की त्रिकोण संज्ञा है ॥ ५ ॥

त्रिषष्ठदशलाभानां भवेदुपचयाख्यकम् ।
चतुर्थाष्टमयोः संज्ञा चतुरस्रं स्मृता बुधैः ॥ ६ ॥

तीसरे, छठें, दशवें और ग्यारहवें स्थानों को उपचय कहते हैं। चतुर्थ और आठवें भाव की चतुरस्र संज्ञा है ॥ ६ ॥

केन्द्र चतुष्टयकंटकसंज्ञाऽद्यचतुर्थसप्तदशमानाम् ।
परतः पणफरमापोक्लिमं च वेद्यं यथाक्रमतः ॥ ७ ॥

प्रथम, चतुर्थ, सप्तम और दशम भावकी केन्द्र चतुष्टय और कण्टक संज्ञा है। द्वितीय, पञ्चम, अष्टम और एकादश भाव की पणफर, तृतीय, षष्ठ, नवम और द्वादशभाव को आपोक्लिम कहते हैं ॥ ७ ॥

वर्गोत्तमनवमांशाश्चरादिषु प्रथममध्यांत्याः ।
होरा विषमेऽर्केन्द्वो समराशौ चन्द्रसूर्ययोः क्रमतः ॥ ८ ॥

चर-स्थिर द्विस्वभाव राशियों को क्रम से प्रथम, पञ्चम और नवम नवांश वर्गोत्तम होता है। यथा चरसंज्ञक राशियों का प्रथम, द्विस्वभाव संज्ञक राशियों का पञ्चम और स्थिर संज्ञक राशियों का नवम नवांश वर्गोत्तम जाने। विषम राशियों में १५ अंश तक सूर्य की होरा होती है तदनन्तर चन्द्र की होरा होती हैं एवं सम राशियों में पहले १५ अंश तक चन्द्रमा की पश्चात् सूर्य की होरा समझना ॥ ८ ॥

स्वगृहाद्द्वादशभागाद्रेष्काणाः प्रथमपञ्चनवमानाम् ।
मेषाद्याश्चत्वारःसधन्विमकराः क्षपाबला ज्ञेयाः ॥९॥
पृष्ठोदयाः स्मृताः पञ्चयात्रायां नैव शोभनाः ।
सिंहाद्या ये च चत्वारः कुंभो युग्मं दिवाबलाः ॥१०॥
शीर्षोदयाश्च मीनस्तु बली रात्रौ तथा दिने ।
क्षीणचन्द्रो रविर्भौमः पापो राहुः शनिः शिखी ॥११॥

प्रत्येक राशि में स्वगृह से बारह भाग द्वादशांश होता है, सभी राशियों में तीन-तीन द्रेष्काण होते हैं, उसमें प्रथम द्रेष्काण उसी राशि का द्वितीय उससे पञ्चम राशिका, तृतीय नवम राशिका होता है। मेष से चार अर्थात् मेष, वृष, मिथुन, कर्क तथा धनु और मकर ये ६ राशियाँ रात्रि में बलवती होती हैं। इनके अतिरिक्त सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ और उपरोक्त रात्रि बलशाली राशियों में मिथुन को छोड़कर बाकी सब राशियें पृष्ठोदय मानी गयी हैं। उनका उदय पृष्ठभाग से होता है अतः वे यात्रा में अशुभ होती हैं। सिंह आदि चार राशियाँ, कुम्भ और मिथुन ये दिन बली और शीर्षोदय हैं अर्थात् मस्तक से इनका उदय होता है। इनमें तीन राशि दोनों समय बलवती रहती हैं ॥ ९-११ ॥

बुधोऽपि तैर्युतः पापो होरा राश्यर्द्धमुच्यते ।
रवींदुभौमगुरवो ज्ञशुक्रशनिराहवाः ॥ १२ ॥

क्षीणचन्द्रमा, सूर्य, मङ्गल, राहु, शनि और केतु ये पापग्रह हैं! इनके साथ रहने पर बुध भी पापीग्रह हो जाता है। राशि के अर्ध-भाग को होरा कहते हैं ॥ १२ ॥

स्वस्मिन्मित्राणि चत्वारि परस्मिञ्छत्रवः स्मृताः ॥ १३ ॥

सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु, बुध, शुक्र, शनि और राहु ये आपस में मित्र हैं। जैसे सूर्य, चन्द्रमा और बृहस्पति मित्र हैं, किन्तु बुध, शुक्र, शनि और राहु यदि उनके साथ पड़ जावें तो शत्रु हो जाते हैं ॥ १३ ॥

मेषे रविर्वृषे चन्द्रो मकरे च महीसुतः।
कन्यायां रोहिणीपुत्रो गुरुः कर्के झषे भृगुः ॥ १४ ॥
शनिस्तुलायामुच्चश्च मिथुने सिंहिकासुतः।
उच्चात्सप्तमगा नीचा राशौ वापि नवांसके ॥ १५ ॥

मेष का सूर्य, वृष का चन्द्रमा और मकर का मंगल उच्च होता है। कन्या राशि का बुध, कर्क का बृहस्पति, मीन का शुक्र, तुला का शनि तथा मिथुन का राहु उच्च होता है। प्रत्येक उच्च राशि से सातवीं राशि नीच होती है। जैसे मेष राशि का सूर्य उच्च है तो इसमें सातवीं राशि तुला का सूर्य नीच होगा। राशि के उच्च-नीच का क्रम नवांश में भी चलता है ॥ १४–१५ ॥

अथ शुभाशुभयोगाः।

अर्थी भोगी धनी नेता जायते मण्डलाधिपः।
नृपतिश्चक्रवर्ती च रव्याद्यैरुच्चगैर्ग्रहैः ॥ १ ॥

सूर्यादि ग्रहों से उच्च रहने पर भी प्राणी अर्थी, भोगी और धनी आदि होता है। जैसे—सूर्य उच्च का हो तो धनी, चन्द्रमा उच्च राशि का हो तो भोगी, मंगल उच्च राशि का हो तो धनी, बुध उच्च राशि का हो तो नेता, बृहस्पति उच्च राशि का हो तो मण्डलाधिप, शुक्र उच्च राशि का हो तो राजा और शनि उच्च राशि का हो तो चक्रवर्ती होता है ॥१॥

त्रिभिः स्वस्थैर्भवेन्मन्त्री त्रिभिरुच्चैर्नराधिपः।
त्रिभिर्नीचैर्भवेद्दासस्त्रिभिरस्तंगतैर्जडः ॥ २ ॥

यदि किसी की जन्मकुण्डली में तीन ग्रह स्वस्थ अर्थात् पूर्ण बली होकर विराजमान हों तो वह प्राणी किसी राजा का मन्त्री होता है। यदि तीन नीच ग्रह पड़े हों तो दास और तीन असंगत ग्रह पड़े हों तो वह बालक मन्दबुद्धि होता है ॥ २ ॥

उदितः स्वगृहस्थश्च मित्रगेहे स्थितोऽपि वा।
मित्रवर्गे मित्रदृष्टः स ग्रहः सबलः स्मृतः ॥ ३ ॥

जो ग्रह उदित हो, अपने या अपने मित्र के घर में स्थित हो तथा अपने मित्र के षड्वर्ग में हो या अपने मित्रग्रह से दृष्ट हो तो वह बलवान् माना जाता है ॥ ३ ॥

स्वामिना बलिना दृष्टः सबलैश्च शुभग्रहैः।
न दृष्टो न युतः पापैः स भावः सबलः स्मृतः ॥ ४ ॥

जिस भाव को उसका बलवान् स्वामी या बलवान् शुभ ग्रह से दृष्ट और पाप ग्रह करके दृष्ट और युक्त न हों तो उस भाव को बलवान् कहते हैं ॥ ४ ॥

दशमे बुधसूर्यौ च भौमराहू च षष्ठगौ।
राजयोगेऽत्र यो जातः स पुमान्नायको भवेत् ॥ ५ ॥

जन्म लग्न से दशवें बुध सूर्य तथा छठ स्थान में मङ्गल और राहु हो तो यह राजयोग होता है। इस योग में उत्पन्न पुरुष मनुष्यों में नायक होता है अथवा सेनापति होता है ॥ ५ ॥

आदौ जीवः शनिश्चान्ते ग्रहा मध्ये निरंतरम्।
राजयोगं विजानीयात्कुटुम्बबलसंयुतः ॥ ६ ॥

गुरु से आरंभ करके गुरु जिस भाव में हों वहाँ से शनि तक मध्य में सभी ग्रह हों और द्वितीयेश बलवान् हो तो सामान्यतः राजयोग होता है ॥ ६ ॥

सहजस्थो यदा जीवो मृत्युस्थाने स्थितः सितः।
निरन्तरं ग्रहा मध्ये राजा भवति निश्चितम् ॥ ७ ॥

तृतीय में गुरु और आठवें भाव में शुक्र तथा शेष ग्रह मध्य में बैठे हों तो मनुष्य निश्चय राजा होता है ॥ ७ ॥

जीवो वृषे सुधारश्मिर्मिथुने मकरे कुजः ।
सिंहे भवति सौरिश्च कन्यायां बुधभास्करौ ॥ ८ ॥
तुलायामसुराचार्यो राजयोगे भवेदयम् ।
अस्मिन्योगे समुत्पन्नो महाराजो भवेन्नरः ॥ ९ ॥

यदि बृहस्पति वृष में, चन्द्रमा मिथुन में, मङ्गल मकर में, शनि सिंह में, बुध सूर्य कन्या में और शुक्र तुला राशि में हो तो इस प्रकार के योग में उत्पन्न बालक सार्वभौम होता है ॥ ८–९ ॥

अष्टमे द्वादशे वर्षे यदि जीवति मानवः ।
सार्वभौमस्तदा राजा जायते विश्वपालकः ॥ १० ॥

उपर्युक्त राजयोग में उत्पन्न बालक यदि आठवाँ और बारहवाँ वर्ष पार करके जी जाय तो समस्त विश्व का पालन करनेवाला सार्वभौम राजा होता है । भावार्थ यह है कि अष्टम और द्वादश वर्ष उसके लिए अनिष्ट-कारक है ॥ १० ॥

एको जीवो यदा लग्ने सर्वे योगास्तदा शुभाः ।
दीर्घजीवी महामान्यो जायते नायको भटः ॥ ११ ॥

यदि केवल उच्च का गुरु ही लग्न में हो तो सभी योग शुभप्रद होते हैं । ऐसे योग में उत्पन्न बालक दीर्घायु राजमान्य और सेनापति होता है ॥ ११ ॥

धनुष्यारश्च शुक्रश्च मीने जीवस्तुले बुधः ।
नीचस्थौ शनिचन्द्रौ च राजा स्याद्धनवर्जितः ॥ १२ ॥

मंगल तथा शुक्र धनु राशि पर, बृहस्पति मीन राशि पर, बुध तुला राशि पर, शनि तथा चन्द्रमा नीच राशि में स्थित हों तो ऐसे योग में उत्पन्न धनहीन राजा होता है । अथवा धनवान कुलोत्पन्न भी निर्धन हो जाता है ॥ १२ ॥

दाता भोक्ता च विख्यातो मान्यो मंडलनायकः ।
मीने शुक्रो बुधश्चांते धने राहुस्तनौ रविः ॥ १३ ॥

मीन राशि पर शुक्र, व्यय भावमें बुध, द्वितीय भाव में राहु, लग्न में सूर्य हो तो इस योग में उत्पन्न बालक दानी, भोगी, प्रसिद्ध राजमान्य और भूमि का स्वामी होता है ॥ १३ ॥

सहजे च भवेद्भौमो योगे राजाऽत्र जायते
सहजे च यदा जीवो लाभस्थाने च चन्द्रमाः ।
स राजा राज्यमध्यस्थो विख्यातः कुलदीपकः ॥ १४ ॥

जन्म लग्न से तृतीय में गुरु और एकादश में चन्द्रमा हो तो ऐसे योग में उत्पन्न बालक राजाओं के मध्य में राजा और सम्मानित होता है तथा पृथ्वी का स्वामी होता है ॥ १४ ॥

शुभग्रहाः शुभक्षेत्रे भवन्ति यदि केन्द्रगाः ।
तदा शुभानि कर्माणि करोत्येव हि बालकः ॥ १५ ॥

यदि शुभग्रह सभी शुभग्रहों की राशि में होकर केन्द्रों में बैठे हों तो इस योग में उत्पन्न बालक शुभकर्म में निरत रहता है ॥ १५ ॥

उच्चस्थानगताः सौम्याः केन्द्रेषु च भवन्ति चेत् ।
ध्रुवं राज्यं भवेत्तस्य स्ववंशानां च पोषकः ॥ १६ ॥

जिसके सभी सौम्य ग्रह उच्च स्थान में रहते हुए केन्द्रमें पड़ जायँ तो वह निश्चय ही राजा और अपने वंश का पालन करनेवाला होता है ॥ १६ ॥

धने व्यये तथा लग्ने सप्तमे च यदा ग्रहाः ।
छत्रयोगस्तदा ज्ञेयो नराणां नायको भवेत् ॥ १७ ॥

जिसके सम्पूर्ण ग्रह द्वितीय, द्वादश, लग्न तथा सप्तम स्थान में पड़े हों तो छत्रयोग होता है, इस योग का बालक सेनापति होता है ॥ १७ ॥

ससूर्या वा सचन्द्रा वा यत्र कुत्र चतुर्ग्रहाः ।
मालानामकयोगोऽयं राज्यदो धनदो भवेत् ॥ १८ ॥

सूर्य अथवा चन्द्रमा के साथ चार ग्रह जिस किसी भी स्थान में पड़े हुए हों तो मालायोग होता है। यह योग राज्य तथा धनदायक है ॥ १८ ॥

स्वक्षेत्रस्थो यदा जीवो बुधः सौरिः स्वराशिगः ।
अत्र जातस्य दीर्घायुः सम्पदश्च भवन्ति हि ॥ १९ ॥

जन्म कुण्डली में बृहस्पति धनु मीन में बैठा हो और बुध मिथुन या कन्या में तथा शनि मकर या कुम्भ में हो तो इस योग में उत्पन्न बालक दीर्घायु और धनवान् होता है ॥ १९ ॥

मीने बृहस्पतिः शुक्रश्चंद्रमाश्च यदा भवेत् ।
तत्र जातस्य राज्यं स्यात्पत्नी च बहुपुत्रिणी ॥ २० ॥

यदि बृहस्पति, शुक्र और चन्द्रमा मीन राशिमें बैठे हों तो इस योग में उत्पन्न बालक राजा होता है और उसकी पत्नी बहु पुत्रवती होती है ॥ २० ॥

पञ्चमस्थो यदा जीवो दशमस्थश्च चन्द्रमाः ।
स पूज्यश्च महाबुद्धिस्तपस्वी च जितेन्द्रियः ॥ २१ ॥

जन्म लग्न से पांचवें भाव में गुरु हो और दशम भाव में चन्द्रमा हो तो इस प्रकार के योग में उत्पन्न बालक राजा तथा बड़ा बुद्धिमान् और जितेन्द्रिय होता है २१ ॥

सिंहे जीवस्तुलाकीटकोदंडमकरेषु च ।
ग्रहा यदा तदा जातो देशभोगी भवेन्नरः ॥ २२ ॥

यदि बृहस्पति सिंह राशि पर और अन्य सभी ग्रह तुला, वृश्चिक धनु तथा मकर राशि पर हों तो बालक देश का भोगने वाला और पृथ्वी पति होता है ॥ २२ ॥

तुलाकोदंडमीनस्थो लग्नगः स्याच्छनैश्चरः ।
करोति नृपतेर्जन्म त्वन्यराशौ तु निर्धनः ॥ २३ ॥

यदि शनैश्चर तुला, धनु, मीन राशि का होकर लग्न में विद्यमान हो तो बालक राजा होता है। यदि शनि किसी दूसरी राशि पर हो तो बालक धनहीन होता है ॥ २३ ॥

विद्यास्थाने यदा सौम्यः कर्मस्थाने च चन्द्रमाः ।
धर्मस्थाने यदा सौम्यो योगे राजात्र जायते ॥ २४ ॥

यदि बुध पञ्चम भाव में, चंद्रमा दशम भाव में तथा शुभग्रह नवम में स्थित हो तो ऐसे योग में उत्पन्न बालक राजा के समान यशस्वी होता है यदि इन्हीं राशियों पर उच्च के तथा स्वगृहों के होकर ग्रह हों तो यह योग पूर्ण फलदायक होता है ॥ २४ ॥

मकरे कार्मुके मीने वृषे च मिथुने क्रिये ।
ग्रहास्तदात्र विख्यातो राजा भवति मानवः ॥ २५ ॥

यदि सभी ग्रह मकर, धनु, मीन, मिथुन तथा मेष राशि पर हों तो बालक विशेषतः विख्यात् राजा होता है ॥ २५ ॥

बुधभार्गवजीवार्कियुक्तो राहुश्चतुष्टये ।
करोति धनमारोग्यं पुत्रं मानाधिकं गृहम् ॥ २६ ॥

यदि बुध, शुक्र, बृहस्पति और शनि युक्त राहु केन्द्र में हो तो उसका उत्तम फल है। ऐसे योग में उत्पन्न बालक धनवान् स्वस्थ पुत्रवान्, सुसम्मानित होता है ॥ २६ ॥

चतुर्थभवने शुक्रो गुरुश्चन्द्रो धरासुतः ।
रविसौरियुताः संति राजा भवति निश्चितम् ॥ २७ ॥

यदि शुक्र, बृहस्पति, चन्द्रमा और मंगल ये ग्रह सूर्य तथा शनि से युक्त होकर चतुर्थ भाव में बैठे हों तो बालक अवश्य राजा होता है ॥ २७ ॥

अष्टमे च व्यये क्रूरो मध्यगौ क्रूरसौम्यकौ ।
राजयोगेऽत्र यो जातश्चत्वारिंशत्स जीवति ॥ २८ ॥

जिसके आठवें और बारहवें भाव में क्रूर ग्रह बैठे हों तथा नवम दशम एकादश में शुभग्रह तथा पापग्रह दोनों बैठे हों तो वह राजा होता है और मध्य में कोई भी क्रूर और सौम्य ग्रह बैठे हों तो उसकी आयु ४० वर्ष की होती है ॥ २८ ॥

लग्ने सौरिस्तथा चन्द्रस्त्रिकोणे जीवभास्करौ ।
कर्मस्थाने भवेद्भौमो योगे राजाऽत्र जायते ॥ २९ ॥

यदि लग्न में शनि तथा चन्द्रमा, त्रिकोण में बृहस्पति तथा सूर्य हो एवं दशम भाव में मंगल बैठा हो तो इस योग में उत्पन्न बालक राजा होता है ॥ २९ ॥

नवमे च यदा सूर्यः स्वगृहस्थो भवेद्यदा ।
तस्य जीवति न भ्राता स्यादेकोऽपि नृपैः समः ॥ ३० ॥

यदि सूर्य नवम भाव में अपने घर का हो तो जातक का भ्राता मर जाता है और अकेला रहता हुआ भी वह राजा के समान होता है ॥ ३० ॥

द्वित्रितुर्यसुते षष्ठे कर्मण्यपि यदा ग्रहाः ।
राजयोगं विजानीयाज्जातस्तत्र नृपो भवेत् ॥ ३१ ॥

जन्मलग्न से दूसरे, तीसरे, चौथे, पाँचवें, छठें तथा दशवें घर में ग्रह बैठे हों तो उसे राजयोग कहना चाहिए । इस योग में उत्पन्न बालक राजा होता है ॥ ३१ ॥

लग्ने क्रूरो व्यये क्रूरो धने क्रूरो यदा भवेत् ।
सप्तमे भवने क्रूरः परिवारक्षयंकरः ॥ ३२ ॥

यदि लग्न में क्रूर व्यय भाव में क्रूर, धन भाव में क्रूर एवं सप्तम भाव में भी क्रूर ग्रह हों तो इस योग में उत्पन्न बालक अपने सम्पूर्ण परिवार का नाशकारक होता है ॥ ३२ ॥

लग्ने क्रूरो व्यये सौम्यो धने क्रूरश्च जायते ।
राजयोगेऽत्र यो जातो दरिद्रो धनवर्जितः ॥ ३३ ॥

लग्न में क्रूर, व्ययभाव में शुभग्रह दूसरे घर में क्रूर ग्रह हो तो इस राजयोग में उत्पन्न बालक राजकुल का होते हुए भी दरिद्र और धनहीन होता है ॥ ३३ ॥

चापे सौरिश्च चन्द्रश्च मेषे जीवो यदा भवेत् ।
दशमे राहुशुक्रौ च राजयोगे नृपो भवेत् ॥ ३४ ॥

धनु राशि का शनि और चन्द्रमा हो, मेष राशि का बृहस्पति, दशवें भाव में राहु तथा शुक्र हों तो इस योग में जन्म लेनेवाला बालक राजा होता है ॥३४॥

सिंहे जीवोऽथ कन्यायां भार्गवो मिथुने शनिः ।
स्वक्षेत्रे हिबुके भौमः स पुमान्नायको भवेत् ॥ ३५ ॥

सिंह राशि का बृहस्पति, कन्या राशि का शुक्र, मिथुन राशि का शनि और अपने क्षेत्र का होकर चौथे घर में मंगल हो तो इस योग में उत्पन्न बालक सेनापति या मुखिया होता है ॥ ३५ ॥

शनिचन्द्रौ च कन्यायां सिंहे जीवो घटे तमः ।
मकरे च कुजस्तत्र जातः स्याद्विश्वपालकः ॥ ३६ ॥

कन्या राशि के शनि और चन्द्रमा हों, सिंह राशि में बृहस्पति, कुम्भ पर राहु एवं मकर राशि पर मंगल हो तो जन्म लेनेवाला बालक चक्रवर्ती राजा होता है ॥ ३६ ॥

शुक्रो जीवो रविर्भौमश्चापे मकरकुम्भयोः ।
मीने च वत्सरे विंशे जातः स्यात् सर्वकर्मकृत् ॥ ३७ ॥

शुक्र, बृहस्पति, सूर्य और मंगल ये ग्रह क्रम से धनु, मकर कुम्भ, मीन इन राशियों पर हों तो बालक बीस वर्ष का होकर सब काम करने लायक होता है ॥ ३७ ॥

चतुर्षु केन्द्रस्थानेषु सौम्यपापग्रहस्थितिः ।
चतुः सागरयोगोऽयं राज्यदो धनदो भवेत् ॥ ३८ ॥

केन्द्र (१-४-७-१०) स्थानों में शुभ और पाप ग्रह हों तो चतुस्सागर योग होता है। यह योग राज्य और धन का देनेवाला है ॥ ३८ ॥

कर्कलग्ने जीवयुक्ते लाभे चन्द्रज्ञभार्गवाः ।
मेषे भानौ च यो जातः स राजा विश्वपालकः ॥ ३९ ॥

बृहस्पति से युक्त कर्क लग्न हो, ग्यारहवें घर में चन्द्रमा, बुध तथा शुक्र हों, मेष का सूर्य हो तो जन्म लेनेवाला बालक विश्वपालक राजा या महान् सम्राट् होता है ॥ ३९ ॥

कर्मस्थाने यदा जीवो बुधः शुक्रस्तथा शशी ।
सर्वकर्माणि सिद्धयन्ति राजमान्यो भवेन्नरः ॥ ४० ॥

बृहस्पति, बुध, शुक्र और चन्द्रमा चारों ग्रह दशम भाव में बैठे हों तो जन्म लेनेवाला बालक सब कार्यों को सिद्ध करनेवाला और राजाओं में मान्य होता है ॥ ४० ॥

षष्ठेऽष्टमे पञ्चमे च नवमे द्वादशे तथा ।
सौम्यक्रूरग्रहैर्योगे राजमान्य सकष्टकः ॥ ४१ ॥

जन्म लग्न से क्रमशः छठे, आठवें, नवें, बारहवें घर में शुभ ग्रह और क्रूर ग्रह दोनों होवें तो वह राजाओं में पूजित होते हुए भी उसका जीवन कष्टदायक व्यतीत होता है ॥ ४१ ॥

पञ्चमे च यदा षष्ठे चाष्टमे नवमे क्रमात् ।
भौमराहुसितार्काः स्युर्जातोऽत्र कुलदीपकः ॥ ४२ ॥

पांचवें छठे, आठवें और नवें ग्रह में क्रम से मंगल, राहु, शुक्र, सूर्य होवें तो जन्म लेनेवाला नर अपने वंश में प्रतिष्ठित होता है ॥ ४२ ॥

लग्ने सौरिस्तथा चन्द्रश्चाष्टमे भार्गवो यदा ।
जायते च तदा राजा मानी पत्नीरतः सदा ॥ ४३ ॥

लग्न में शनि और चन्द्रमा तथा आठवें शुक्र हो तो जन्मनेवाला बालक राजा, मानी और सदा अपनी स्त्री में निरत रहता है ॥ ४३ ॥

मिथुनस्थो यदा राहुः सिंहस्थो भूमिनन्दनः ।
अत्र जातः पितुर्द्रव्यं प्राप्नोति सकलं नृपः ॥ ४४ ॥

मिथुन का राहु तथा सिंह का मंगल हो तो जन्म लेनेवाला मनुष्य अपने पिता की सम्पूर्ण संपत्ति को प्राप्त करता है ॥ ४४ ॥

चापार्द्धे शशिना युक्तो यदि सूर्यः प्रजायते ।
लग्ने च सबलो मंदो मकरे च कुजो भवेत् ॥ ४५ ॥
अत्र योगे समुत्पन्नो महाराजो भवेन्नरः ।
दूरादेव नमंत्यस्य प्रतापैश्चरणं नृपाः ॥ ४६ ॥

जिसके जन्म समय में धनु राशि के अर्धभाग में चन्द्रमा सूर्य से युक्त हो और बलवान शनि लग्न में बैठा हो एवं मकर राशि का मंगल हो तो इस योग में जन्म लेनेवाला बालक चक्रवर्ती होता है। इसके प्रताप से अन्य राजा लोग दूर से ही इसके चरणों में प्रणाम करते हैं ॥ ४५-४६ ॥

उच्चाभिलाषी सविता त्रिकोणस्थो यदा भवेत् ।
अपि नीचकुले जातो राजा स्याद्धनपूरितः ॥ ४७ ॥

उच्चाभिलाषी सूर्य त्रिकोण (५।९) स्थान में स्थित हो तो नीच कुल में जन्म लेनेवाला बालक भी धनवान् राजा होता है ॥ ४७ ॥

एकादशे यदा सर्वे ग्रहाः स्युर्दशमेऽपि वा ।
विलग्ने सम्मुखे वापि कारकाः परिकीर्तिताः ॥ ४८ ॥

उत्पन्नः कारके योगे नीचोऽपि नृपतां व्रजेत् ।
राजवंशसमुत्पन्नो राजा तत्र न संशयः ॥ ४९ ॥

ग्यारहवें अथवा दशवें घर अथवा लग्न में ही या लग्न के सम्मुख सातवें घर में सब ग्रह कारक कहलाते हैं। इस कारक योग में उत्पन्न बालक कंगाल होता हुआ भी धनवान् होता है और राजकुल का बालक तो अवश्य राजा होता ही है ॥ ४८-४९ ॥

लग्नतश्चान्यतो वापि क्रमेण पतिता ग्रहाः ।
एकावली समाख्याता महाराजो भवेन्नरः ॥ ५० ॥

लग्न से अथवा अन्य घर से क्रमश सब ग्रह निरन्तर पड़ते गये हों अर्थात् बीच में कोई घर खाली न हो तो एकावली नामक योग होता है। इस एकावली नामक योग में जन्मनेवाला बालक राजा होता है ॥ ५० ॥

धनस्थाने यदा शुक्रो दशमे च बृहस्पतिः ।
षष्ठे च सिंहिका पुत्रो राजा भवति विक्रमी ॥ ५१ ॥

द्वितीय भाव में शुक्र, दशवें घरमें बृहस्पति, छठे घर में राहु हो तो जन्मनेवाला बालक अपने पराक्रम से राजा होता है ॥ ५१ ॥

चतुर्ग्रहा एकगताः पापाः सौम्या भवन्ति चेत् ।
भ्रातृधीवर्गलग्नार्थे राजयोगो भवेदयम् ॥ ५२ ॥

पाप अथवा शुभ चार ग्रह (३,५,९,१,२) इन घरों में से किसी एक घर में इकट्ठे होकर बैठे हों तो इस योग में उत्पन्न मनुष्य सामान्यतः राजा होता है ॥ ५२ ॥

त्रिकोणे सप्तमे लग्ने भवन्ति च यदा ग्रहाः ।
हंसयोगं विजानीयात्स्ववंशस्यात्र पालकः ॥ ५३ ॥

त्रिकोण (५।९) में या सातवें या लग्न में सब ग्रह होवें तो हंस नामक योग होता है। इसमें जन्म लेनेवाला अपने वंशजोंका पालक होता है ॥ ५३ ॥

सर्वग्रहैर्यदा चन्द्रो विनाऽलिं च निरीक्षितः ।
षष्ठेऽष्टमे च जामित्रे स दीर्घायुर्धराधिपः ॥५४ ॥

वृश्चिक राशि को छोड़कर अन्य किसी राशि में चन्द्रमा छठें आठवें और सातवें घर में स्थित होकर सब ग्रहों द्वारा देखा जाता हो तो जन्म लेनेवाला दीर्घायु तथा पृथ्वीपति होता है ॥ ५४ ॥

षष्ठेऽष्टमे द्वादशे च द्वितीये च यदा ग्रहाः ।
सिंहासनाख्ययोगेऽस्मिन् राजसिंहासने वसेत् ॥ ५५ ॥

जन्मलग्न से छठें, आठवें, बारहवें तथा दूसरे घर में हो सब ग्रह हों तो यह सिंहासन योग होता है। ऐसे योग में जन्म लेनेवाला मनुष्य राजगद्दी पर बैठता है अथवा धनिक होता है ॥ ५५ ॥

लग्ने शुक्रबुधौ न स्तः केन्द्रे नास्ति बृहस्पतिः ।
दशमेऽङ्गारको नास्ति स जातः किं करिष्यति ॥ ५६ ॥

जन्म लग्न में शुक्र और बुध न हों; तथा केन्द्र में बृहस्पति न हों, दशवें घर में मंगल न हों तो वह नर जन्म लेकर ही क्या करेगा ? अर्थात् दरिद्र होता है ॥ ५६ ॥

अष्टमस्था यदा क्रूराः सौम्या लग्ने स्थिता ग्रहाः ।
ध्वजयोगेऽत्र यो जातः स पुमान्नायको भवेत् ॥ ५७ ॥

आठवें घर में पाप ग्रह हों और शुभग्रह जन्म लग्न में स्थित हों तो ध्वज नामक योग होता है। इस योग में जन्म लेनेवाला मनुष्य अधिपति होता है ॥ ५७ ॥

षष्ठस्थाने यदा पापाः केन्द्रस्थाने शुभग्रहाः ।
सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्य राजमान्यो भवेन्नरः ॥ ५८ ॥

जन्म लग्न से छठें घर में पापग्रह और केन्द्र में शुभग्रह हों तो उसका सब काम सम्पन्न होवे और वह राजा से मान्य हो ॥ ५८ ॥

मेषलग्ने यदा भानुश्चतुर्थे च बृहस्पतिः ।

दशमे च कुजो जातो विश्वस्याधिपतिर्भवेत् ॥ ५९ ॥

मेष लग्न में जन्म हो और उसी में रवि हों, चौथे बृहस्पति और दशवें मंगल हों तो बालक विश्वपति राजा हो ॥ ५९ ॥

लग्ने सौरिस्तथा चन्द्रस्त्रिकोणे जीवभास्करौ ।
कर्मस्थाने भवेद्भौमो राजयोगोऽभिधियते ॥ ६० ॥

जन्म लग्न में शनि और चन्द्रमा हों, त्रिकोण (५-९) में बृहस्पति, सूर्य हों, दशवें घरमें मंगल हों तो राजयोग कहलाता है ॥ ६० ॥

केन्द्रे स्वोच्चस्थिते सौम्ये राजलक्ष्मीपतिर्भवेत् ।
केन्द्रे पापे स्वोच्चसंस्थे राजा स्याद्धनवर्जितः ॥ ६१ ॥

उच्चराशि के शुभग्रह केन्द्र में होवें तो राज्य या लक्ष्मी का पति होता है। उच्चराशि के पाप ग्रह केन्द्र मे बैठे हों तो राजा (धनहीन) होवे, उसके पास विशेष द्रव्य न रहे ॥६१ ॥

बली सौम्यग्रहो लग्ने केन्द्रस्थो यदि वीक्षते ।
तदा निहंत्यरिष्टानि तमः सूर्योदये यथा ॥ ६२ ॥

बलवान् शुभग्रह केन्द्र में बैठकर लग्न को देखते हों तो संपूर्ण अनिष्टोंका नाश करते हैं। जैसे सूर्योदयसे अन्धकार दूर होता है ॥ ६२ ॥

वंन्ध्या नारी पुमान्षंढ्यो मृत्यौ स्वर्भानुभानुजौ ।
मृत्युस्थाः स्युर्यदा पापा मृत्युं दातुं गतास्तदा ॥ ६३ ॥

आठवें घर में राहु और शनि हों तो स्त्री वन्ध्या हो और पुरुष नपुंसक होता है और आठवें घर में अन्यग्रह हों तो मृत्यु हो ॥ ६३ ॥

अग्रे जातं रविर्हन्यात्पृष्ठे जातं शनैश्वरः ।
जातं जातं कुजो हन्यात्सहजस्थानसंस्थितः ॥ ६४ ॥

तीसरे घर में सूर्य हो तो बड़े भाईको मारे। शनि हो तो छोटे भाई को मारे। मंगल हो तो जन्मे हुए सब भाइयों को मारे ॥ ६४ ॥

चतुःकेन्द्रगताः सौम्याः पापा द्वादशषष्ठगाः ।
भवेत्सराजविख्यातो लब्धच्छत्रो विभूषितः ॥ ६५ ॥

चारो केन्द्र स्थानों में शुभग्रह हों, पापग्रह बारहवें और छठें घर में हो तो विख्यात छत्रपति राजा हो ॥ ६५ ॥

लग्नात्तु पञ्चमस्थाने यदा सूर्यबृहस्पती ।
तदा विद्याधनैः पूर्णो जायते जातकोत्तमः ॥ ६६ ॥

लग्न से पाँचवें घर में सूर्य और बृहस्पति हों तो विद्या और धनों से परिपूर्ण उत्तम नर हो ॥ ६६ ॥

एकोऽपि यदि केन्द्रस्थो बुधो जीवो बली भृगुः ।
जायतेऽत्र तदा बालो धनाढ्यो वेदपारगः ॥ ६७ ॥

बुध, बृहस्पति अथवा बली शुक्र इनमें से एक भी केन्द्र में हो तो जन्मनेवाला बालक धनाढ्य और वेदपाठी होता है ॥ ६७ ॥

द्वित्रिसौम्याः खगा नीचा व्ययभावेऽथवा पुनः ।
भवन्ति धनिनः षष्ठे निधने चैव भिक्षुकाः ॥ ६८ ॥

दो या तीन शुभग्रह नीच राशि के हों, अथवा बारहवें घर में स्थित होवें तो धनी भी भिक्षुक (भिखारी) हो जावें ॥ ६८ ॥

नीचस्थितो जन्मनि यो ग्रहःस्यात्तद्राशिनाथोऽथ तदुच्चनाथः ।
भवेत्त्रिकोणे यदि केन्द्रवर्त्ती राजा भवेद्धार्मिकचक्रवर्ती ॥६९॥

जन्म समय में जो ग्रह नीच राशि का हो, उस ग्रह की नीच राशि का स्वामी यदि त्रिकोण (५-९) में अथवा केन्द्र में बैठा हो तो वह नर धार्मिक और चक्रवर्ती राजा हो ॥ ६९ ॥

षष्ठे क्रूरे नरो जातः शत्रुपक्षविमर्दकः ।
षष्ठे सौम्ये सदा रोगी षष्ठे चन्द्रस्तु मृत्युदः ॥ ७० ॥

जिसके छठें घर में क्रूर ग्रह हो वह नर शत्रु को नष्ट करनेवाला हो, छठें घर में शुभग्रह हों तो सदा रोगी रहे, छठें घर में चन्द्रमा हो तो मृत्यु होवे ॥ ७० ॥

लग्नात्तृतीयभवने यदि चन्द्रसुतो भवेत् ।
द्वौ पुत्रौ कन्यकास्तिस्रो जायन्ते नात्र संशय ॥ ७१ ॥

लग्न से तीसरे बुध बैठा हो तो उस मनुष्य के दो पुत्र और तीन कन्यायें हों इसमें सन्देह नहीं है ॥ ७१ ॥

लग्नात्तृतीयभवने बली वाचस्पतिर्यदा ।
पञ्चपुत्रास्तदा तस्य जायन्ते मानवस्य वै ॥ ७२ ॥

लग्न से तीसरे घर में बली बृहस्पति हो तो उस मनुष्य के पाँच पुत्र होवे ॥ ७२ ॥

लग्नात्तृतीयभवने शनिचन्द्रौ यदा स्थितौ ।
श्यामवर्णस्तदा बालो भ्रातृहीनश्च जायते ॥ ७३ ॥

लग्न से तीसरे घर में शनि और चन्द्रमा हों तो वह बालक श्यामवर्ण और भाई से रहित होवे ॥ ७३ ॥

लग्नात्तृतीयभवने बली शुक्रो यदा भवेत् ।
कन्याद्वयं त्रयः पुत्रा जायन्ते तस्य निश्चितम् ॥ ७४ ॥

लग्न से तीसरे घर में बली शुक्र हो तो दो कन्यायें और तीन पुत्र हो यह निश्चय जानो ॥ ७४ ॥

लग्नात्तृतीयभवने राहुयुक्तो यदा शशी ।
भ्रातृहीनो भवेद्बालो लक्ष्मीवानपि जायते ॥ ७५ ॥

लग्न से तीसरे घर में राहुयुक्त चन्द्रमा हो तो वह बालक भाई से रहित और लक्ष्मीवान् होता है ॥ ७५ ॥

लग्नात्तृतीयभवने पञ्चमे वा धरासुतः ।
म्रियते पुत्रदुःखेन नारी वा पुरुषोऽपि वा ॥ ७६ ॥

लग्न से तीसरे या पाँचवें मंगल हो तो (वह स्त्री या पुरुष) पुत्र के दुःख से मरे ॥ ७६ ॥

लग्नात्सप्तमगेहस्थो बली शुक्रो यदा भवेत् ।
कन्याद्वयं त्रयः पुत्रा धनवन्तो भवन्ति हि ॥ ७७ ॥

लग्न से सातवें घर में बली शुक्र बैठा हो तो दो कन्यायें होंगी, तीन पुत्र होंगे और धन होगा ॥ ७७ ॥

सिंहलग्ने यदा शुक्रो शनिर्वापि व्यवस्थितः ।
तत्र जातस्य बालस्य नेत्रनाशः प्रजायते ॥ ७८ ॥

सिंह लग्न हो और वहाँ शुक्र अथवा शनि बैठा हो तो जन्मनेवाले बालक के नेत्र नष्ट होते हैं ॥ ७८ ॥

सूर्योऽष्टमे रिपौ चन्द्रो धने भौमो व्यये शनिः ।
ग्रहदोषेण नेत्राणामन्धतां जनयन्त्यमी ॥ ७९ ॥

सूर्य आठवें, छठें घर में चन्द्रमा, दूसरे घर में मंगल और बारहवें घर में शनि हो तो ग्रहों के दोष से वह नर अन्धा होता है ॥ ७९ ॥

शुभवर्गोत्तमे जन्म व्ययस्थाने च सद्ग्रहे ।
अशून्येषु च केन्द्रेषु कारकाख्यग्रहेषु च ॥ ८० ॥

शुभ वर्गोत्तम लग्न में जन्म हो, बारहवें घर में शुभ ग्रह हों, अशून्य केन्द्र अर्थात् केन्द्र स्थान ग्रहों से भरे हों और कारक ग्रह हों तो यह राजयोग है ॥ ८० ॥

सूर्ये केन्द्रे राजसेवी वैश्यवृत्तिर्निशाकरे ।
शस्त्रवृत्तिः कुजे शूरो बुधे चाध्यापको भवेत् ॥ ८१ ॥
स्वानुष्ठानरतो नित्यं दिव्यबुद्धिर्नरो गुरौ ।
शुक्रे विद्यार्थसम्पन्नो नीचसेवी शनैश्चरे ॥ ८२ ॥

केन्द्र में सूर्य हो तो राजसेवी (मन्त्री) हो, चन्द्र केन्द्र में हो तो वैश्य की वृत्ति करे, मंगल हो तो शूरवीर शस्त्रवृत्ति करने वाला हो और बुध हो तो बालक पढ़ानेवाला होवे । बृहस्पति हो तो धर्म यज्ञादि करनेवाला, दिव्य बुद्धि

सम्पन्न हो, शुक्र हो तो विद्या और लक्ष्मीयुक्त हो और शनि हो तो नीच की सेवा करे ॥ ८१–८२ ॥

कर्मस्थाने च लग्ने वा भौमशुक्रबुधैर्युतः ।
यदि राहुर्भवेत्तस्य क्षणे वृद्धिः क्षणे क्षयः ॥ ८३ ॥

दसवें घर या लग्न में मंगल, शुक्र, बुध इनसे युक्त हुआ राहु हो तो वह नर क्षण में बढ़े और क्षण में घटै अर्थात् दुःखी-सुखी होता रहे ॥ ८३ ॥

होरायां द्वादशे राशौ स्थितो यदि दिवाकरः ।
करोत दक्षिणे काणं वामनेत्रे च चन्द्रमाः ॥ ८४ ॥

जन्म-कुंडली में बारहवीं राशि (लग्न से बारहवें घर) सूर्य हो तो दाहिनी आँख से काना हो, चन्द्रमा हो तो बाईं आँख से काना हो ॥ ८४ ॥

भौमक्षेत्रे यदा जीवो जीवक्षेत्रे च भूसुतः ।
द्वादशे वत्सरे मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ ८५ ॥

मंगल के क्षेत्र में बृहस्पति हो और बृहस्पति के क्षेत्र में मङ्गल हो तो उस बालक की मृत्यु निश्चय बारहवें वर्ष में हो ॥ ८५ ॥

धनस्थाने यदा भौमः शनैश्चरसमन्वितः ।
सहजे च भवेद्राहुर्भ्राता तस्य न जीवति ॥ ८६ ॥

शनैश्चर से युक्त मंगल दूसरे घर में हो तथा तीसरे घर में राहु हो तो उसके भाई नहीं जीते ॥ ८६ ॥

चतुर्थे च यदा राहुः षष्ठे चन्द्रोऽष्टमेऽपि वा ।
सद्य एव भवेन्मृत्युः शंकरो यदि रक्षति ॥ ८७ ॥

चौथे राहु हो, छठें आठवें चन्द्रमा हो तो शीघ्र ही मृत्यु हो जो शिवजी रक्षा करें तो भी न बचें ॥ ८७ ॥

अष्टमस्थो निशानाथः केन्द्रे पापेन संयुतः ।
चतुर्थे च यदा राहुर्वर्षमेकं स जीवति ॥ ८८ ॥

यदि चन्द्रमा आठवें घर में हो और पापग्रह केन्द्र में हो तथा चौथे घर में राहु हो तो एक वर्ष भी नहीं जीवे ॥ ८८ ॥

पाताले चाम्बरे पापो द्वादशे च यदा स्थितः ।
पितरं मातरं हन्ति देशाद्देशांतरं व्रजेत् ॥ ८९ ॥

चौथे घर, दसवें घर और बारहवें घर में पापग्रह स्थित हो तो उसके माता-पिता नष्ट होवें या देश से कहीं विदेश में जावें ॥ ८९ ॥

पञ्चमस्थो निशानाथस्त्रिकोणे च बृहस्पतिः ।
दशमे च महीसनुः परमायुः स जीवति ॥ ९० ॥

पाँचवें घर में चन्द्रमा हो, त्रिकोण (९–५) में बृहस्पति हो, दशवें घर में मंगल हो तो वह दीर्घ आयुवाला हो ॥ ९० ॥

धनस्थाने यदा शुक्रः क्रूरग्रहसमन्वितः ।
न पश्यति निजक्षेत्रमल्पपुत्रस्तदा भवेत् ॥ ९१ ॥

दूसरे घर में पापग्रह से युक्त शुक्र हो और अपने घर को नहीं देखता हो तो अल्प पुत्र हो ॥ ९१ ॥

धनस्थाने यदा क्रूरः सहजे सप्तमे तथा ।
पंचमे भवने जीवो नीचजातस्तदा भवेत् ॥ ९२ ॥

दूसरे घर में क्रूर ग्रह हो, तीसरे सातवें में भी क्रूर ग्रह हो तथा पाँचवें बृहस्पति हो तो उसे नीच के वीर्य से उत्पन्न हुआ कहना चाहिये ॥ ९२ ॥

नवमे पंचमस्थाने चतुर्थे च यदा ग्रहाः ।
आदौ जातश्च नष्टःस्यात्पश्चाज्जातः स जीवति ॥ ९३ ॥

नवें, पाँचवें, चौथे क्रूर ग्रह हों तो पहले जन्मने वाला मरे और जो पीछे जन्मे वह जीवे ॥ ९३ ॥

विवाहितायामन्यस्यामेकः पुत्रो भवेत्तदा ।
विख्यातो भुवने त्यागी स दीर्घायुर्महामतिः ॥ ९४ ॥

इस योग में विवाहिता वा अन्य स्त्री से जो एक ही पुत्र जन्मा हो तो संसार में विख्यात, दानी, दीर्घ आयुवाला और महामति होता है ॥ ९४ ॥

लग्ने धने व्यये क्रूरो यदा मृत्यौ च जायते ।
विष्ठया भार्गवंशोऽस्य द्वादशाष्टमवासरे ॥ ९५ ॥

लग्न १, दूसरे २, आठवें ८, बारहवें १२ में पापग्रह हों तो विष्ठा बंद होके बारहवें या दिन मृत्यु हो जावे ॥ ९५ ॥

षष्ठे च भवने भौमः सप्तमे सिंहिकासुतः ।
अष्टमे च यदा सौरिर्भार्या तस्य न जीवति ॥ ९६ ॥

छठें घर में मंगल हो, सातवें राहु हो, आठवें शनि हो तो उसकी स्त्री नहीं जीवे ॥ ९६ ॥

तिथिप्रान्तेदिनांते च लग्नस्यांते च भांतके ।
चरांशे च यदा जातः सोऽन्यजातः शिशुर्भवेत् ॥ ९७ ॥

तिथि का अन्त, दिन का अन्त, लग्न का अन्त और नक्षत्र के अन्त में तथा चर नवांशक में जन्मनेवाले बालक को (पिता के बिना) अन्य से उत्पन्न हुआ जाने ॥ ९७ ॥

स्वक्षेत्रस्थो यदा भौमः कर्मस्थानं निरीक्षते ।
बुधभार्गवसंयुक्तः स्वल्पकर्मफलप्रदः ॥ ९८ ॥

मंगल अपने घरमें बैठकर दसवें घर को देखता हो तथा बुध शुक्र से युक्त हो तो स्वल्प कर्मफल देने वाला होता है ॥ ९८ ॥

रिपुस्थाने यदा चंद्रो लग्नस्थाने शनैश्चरः ।
कुजश्च सप्तमस्थाने पिता तस्य न जीवति ॥ ९९ ॥

छठें घर में चन्द्रमा, लग्न में शनि, मंगल सातवें हो तो उसका पिता नहीं जीवे ॥ ९९ ॥

एकादशे यदा क्रूरः पंचमे चंद्रभार्गवौ ।
प्रथमं कन्यकाजन्म माता तस्य सकष्टका ॥ १०० ॥

ग्यारहवें क्रूर ग्रह, पांचवें चन्द्र और शुक्र होवें तो उस नरके पहले कन्या जन्मे और उसकी माता कष्टयुक्त रहे ॥ १०० ॥

सहजस्थो यदा राहुर्धनस्थाने बृहस्पतिः ।
बुधेन च समायुक्तस्तस्य बंधुत्रयं भवेत् ॥ १०१ ॥

तीसरे घर में राहु हो, दूसरे घर में बृहस्पति बुधसे युक्त हो तो उसके तीन भाई होवें ॥ १०१ ॥

चापे सूर्यः शनिः कुम्भे मेषे भवति चन्द्रमाः ।
मकरे च यदा शुक्रो भुंक्ते नैव पितुर्धनम् ॥ १०२ ॥

धनु का सूर्य हो, शनि कुम्भ का हो, मेष का चन्द्रमा, मकर का शुक्र हो तो पिताके धन को नहीं भोगे ॥ १०२ ॥

क्रूराश्चतुर्षु केन्द्रेषु तथा क्रूरो धनेऽपि वा ।
दारिद्र्ययोगं जानीयात्स्ववंशस्या क्षयंकरः ॥ १०३ ॥

चारो केन्द्र तथा दूसरे घर में भी क्रूर ग्रह हो तो यह दारिद्र्य योग वंश को नष्ट करने वाला होता है ॥ १०३ ॥

लग्नस्थाने यदा जीवो धनस्थाने शनैश्वरः ।
राहुश्च सहजस्थाने माता तस्य न जीवति ॥ १०४ ॥

लग्न मे बृहस्पति हो, दूसरे घर मे शनि हो, राहु तीसरे घर में हो तो उसकी माता नहीं जीवे ॥ १०४ ॥

सप्तमे भवने भौमश्चाष्टमे भार्गवो यदा ।
नवमे भवने सूर्यः स्वल्पायुस्तस्य जायते ॥ १०५ ॥

सातवें घर मे मंगल, आठवें शुक्र और नवें घर में सूर्य हो तो उस नर की स्वल्प आयु होती है ॥ १०५ ॥

राहुजीवौ रिपुक्षेत्रे लग्ने वाथ चतुर्थगौ।
त्रयोविंशे तदा वर्षे पुत्रस्तातं विनाशयेत् ॥ १०६ ॥

राहु और बृहस्पति छठें घर में, लग्न वा चौथे घर में हो तो तेइसवें वर्ष में वह पुत्र पिता को नष्ट करे ॥ १०६ ॥

बालस्य जन्मकाले चेदष्टमस्थः शनैश्वरः।
बालकश्च भवेत्कुष्ठी मासे मृत्युर्न संशयः ॥ १०७ ॥

बालकके जन्म समय आठवें घर में शनि हो तो बालक कुष्ठी होकर एक ही महीने में मरे, इसमें सन्देह नहीं ॥ १०७ ॥

क्रूरैर्दृष्टो जन्मलग्नात्षष्ठे वा चाष्टमे बुधः।
चतुर्थाब्दे भवेन्मृत्युः शंकरो यदि रक्षति ॥ १०८ ॥

जन्मलग्न से छठें या आठवें घर में बुध हो और क्रूर ग्रहों द्वारा देखा गया हो तो चाहे शिवजी रक्षा करें, परन्तु चौथे वर्ष में उसकी मृत्यु हो जाय ॥ १०८ ॥

अष्टमस्थो यदा भौमस्त्रिकोणे नीचगो रविः।
स शीघ्रमेव जातः स्याद्भिक्षाजीवी च दुःखितः ॥ १०९ ॥

आठवें घर में मगल हो, त्रिकोण (५ ९) में नीचका सूर्य हो तो शीघ्र ही दुःखी हो और भिक्षा से आजीविका करे ॥ १०९ ॥

सिंहे भौमस्तुले सौरिः कन्यायां च यदा सितः।
मिथुने च यदा राहुर्जननी यस्य नश्यति ॥ ११० ॥

सिंह का मंगल हो, तुला का शनि हो, कन्या का शुक्र और मिथुन का राहु हो तो उसकी माता नहीं जीवे ॥ ११० ॥

लग्ने क्रूरः स्वभवने क्रूरः पातालगो यदा।
दशमे भवने क्रूरः कष्टं जीवति बालकः ॥ १११ ॥

जिसके क्रूर ग्रह अपनी राशि के होकर लग्न में स्थित हों एवं चौथे और और दशवें घर में क्रूर ग्रह हों तो वह बालक कष्ट से जीता है ॥ १११ ॥

अष्टमे च निशानाथः केन्द्रे क्रूरो यदा भवेत्।
चतुर्थे च यदा राहुर्वर्षमेकं स जीवति ॥ ११२ ॥
शुभग्रहावलोकैश्च यदि जीवति जातकः।
स च दुष्टस्वभावः स्यात् क्रूरकर्मकरोऽपि च ॥ ११३ ॥

आठवें घर में चन्द्रमा हो, केन्द्र में क्रूर ग्रह हो, चौथे राहु हो तो वह बालक एक वर्ष तक जीता है। यदि शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो वह बालक जीता है, परन्तु दुष्ट स्वभाववाला तथा क्रूर कर्म करनेवाला हो ॥ ११२-११३ ॥

लग्ने चन्द्रो धने शुक्रो व्यये च बुधभास्करौ।
राहुश्च पञ्चमे बालः स भवेद्वधबंधकृत् ॥ ११४ ॥

लग्न में चन्द्रमा हो, दूसरे घर में शुक्र हो, बारहवें घरमें बुध और सूर्य हों, पाँचवें घर में राहु हो तो वह बालक हिंसा और बन्धन कर्म करनेवाला हो ॥ ११४ ॥

सप्तमे भवने भानुः कर्मस्थो भूमिनन्दनः।
राहुश्चान्त्ये च वै तस्य पिता कष्टेन जीवति ॥ ११५ ॥

सातवें घर में सूर्य हो, दशवें घर में मंगल हो, राहु बारहवें घर में हो तो उसका पिता कष्ट से जीवे ॥ ११५ ॥

स्मरे व्यय च सहजे मध्ये क्रूरा यदा ग्रहाः।
तदा जातस्य बालस्य शरीरे कष्टमादिशेत् ॥ ११६ ॥

सातवाँ, बारहवाँ, तीसरा, दशवाँ इन घरोंमें क्रूर ग्रह होवे तो जन्मनेवाले बालक के शरीर में कष्ट हो ॥ ११६ ॥

कन्यायां च यदा राहुः शुक्रो भौमः शनिस्तथा।
जायते तत्र जातस्य कुबेरादधिकं धनम् ॥ ११७ ॥

कन्या राशि पर राहु, शुक्र, मंगल, शनि ये ग्रह हों तो जन्मनेवाले मनुष्य को कुबेर से भी अधिक लक्ष्मी होवे ॥ ११७ ॥

धने राहुर्बुधः शुक्रः सौरिः सूर्यो यदा स्थिताः ।
तस्य मातुर्भवेन्मृत्युर्मृते पितरि जायते ॥ ११८ ॥

दूसरे घर में राहु, बुध, शुक्र, मंगल, शनि, सूर्य ये ग्रह बैठे हों तो उस नरका जन्म होने से पहले पिता मेरे पीछे माता भी मर जाय ॥ ११८ ॥

रविराहू सौरिसौम्यजीवो लग्नेऽथ पञ्चमे ।
अत्रयोगे च यो जातो जातमात्रं स नश्यति ॥ ११९ ॥

सूर्य, राहु, शनि, बुध, बृहस्पति ये लग्न में अथवा पाँचवें हों तो इस योग में जन्मनेवाला उसी समय मर जाय ॥ ११९ ॥

जीवार्कराहुभौमाश्च चत्वारः क्रूरवर्गगाः ।
सप्तमे च गृहे शुक्रो देहे कष्टं सदा भवेत् ॥ १२० ॥

बृहस्पति, सूर्य, राहु, मंगल ये चार ग्रह क्रूर ग्रह के षड्वर्ग में प्राप्त हों, सातवें घर में शुक्र हो तो उसके शरीर में सदा कष्ट रहे ॥ १२० ॥

क्रूरलग्ने यदा जातस्तत्स्वामी क्रूरसंयुतः ।
आमवातो भवेत्तस्य शरीरे कष्टमादिशेत् ॥ १२१ ॥

क्रूर लग्न में जन्म हो और उस लग्न का स्वामी क्रूर ग्रहों के साथ बैठा हो तो उसके शरीर में आमवात रोग सम्बन्धी कष्ट रहे ॥ १२१ ॥

गुह्यस्थाने यदा भौमो राहुः सौरिसमन्वितः ।
नृपपीडा भवेत्तस्य स्वासने नैव तिष्ठति ॥ १२२ ॥

सप्तम घर में मंगल, राहु और शनि ये सब बैठे हों तो उस बालक को राजा की ओरसे दुःख मिले और अपने आसन पर कभी नहीं बैठे ॥ १२२ ॥

सहजे सहजाधीशो लग्ने पुत्रे धनेऽपि वा ।
जायते च यदा बालो यदि जातो न जीवति ॥ १२३ ॥

तीसरे घर का स्वामी तीसरे, लग्न में, पाँचवें या दूसरे घर में हो तो उस समय जन्मनेवाला बालक नहीं जीवे ॥ १२३ ॥

कन्यायां मिथुने राहुः केन्द्रे षष्ठे व्यये यदा ।
त्रिकोणे च यदा जातो दाता भोक्ता निरामयः ॥ १२४ ॥

कन्या अथवा मिथुन राशि का राहु केन्द्र में या छठें बारहवें घर में हो अथवा त्रिकोण में हो तो जन्मनेवाला नर दाता भोगी और नीरोग रहे ॥ १२४ ॥

चतुर्थे राहुसौरार्काः षष्ठे चन्द्रो बुधः कुजः ।
भार्गवश्चात्र यो जातः स गृहस्य क्षयंकरः ॥ १२५ ॥

चौथे घर में राहु, शनि और सूर्य हों, छठें घर में चन्द्रमा, मङ्गल, बुध और शुक्र हों तो इस योग में जन्मनेवाला नर अपने घर का नाश करे ॥ १२५ ॥

एकः पापोऽष्टमस्थाने शत्रुक्षेत्रे यदा भवेत् ।
पापेन वीक्षितो वर्षान्मारयत्येव बालकम् ॥ १२६ ॥

यदि एक भी पापग्रह अपने शत्रुके स्थान में होकर अष्टम स्थान में स्थित हो और उसको पापग्रह देखते हों तो जन्मनेवाले बालक को एक वर्ष में मार डाले ॥ १२६ ॥

भौमभास्करमंदाश्च शत्रुक्षेत्रेऽष्टमे यदा ।
शिवेन रक्षितोप्येवं वर्षमात्रं न जीवति ॥ १२७ ॥

जिस बालक के मंगल, सूर्य, शनि ये शत्रु के घर में होकर आठवें घर में हों तो शिवजी से रक्षित किया भी वह एक वर्ष तक नहीं जीवे ॥ १२७ ॥

वक्रीशनिभौमगेहे केन्द्रे षष्ठेऽष्टमेऽपि वा ।
कुजेन बलिना दृष्टो हन्ति वर्षद्वये शिशुम् ॥ १२८ ॥

वक्री शनि मंगल के घर का होकर केन्द्र, छठें अथवा आठवें घर में हो और बलिष्ठ मङ्गल द्वारा देखा जाता हो तो जन्मनेवाला बालक को दो वर्ष में मार देवे ॥ १२८ ॥

राहौ वृषे त्रिभिर्दृष्टे केतुदृष्टे चतुष्टये ।
दृष्टे च गुरुशुक्राभ्यां दीर्घकालं सो जीवति ॥ १२९ ॥

वृष राशि का राहु तीन ग्रहों से दृष्ट हो अथवा बृहस्पति और शुक्र से देखा गया हो तो वह नर दीर्घकाल तक जीवे ॥ १२९ ॥

चन्द्रमंगलसंयोगो जन्मकाले यदा भवेत् ।
तस्य जातस्य गेहं तु लक्ष्मीर्नैव विमुञ्चति ॥ १३० ॥

जिसके जन्म काल में चन्द्रमा और मंगल का संयोग हो, उस बालक के घर से लक्ष्मी कभी न हटे ॥ १३० ॥

मारयति षोडशाहाच्छनैश्चरः पापवीक्षितः केन्द्रे ।
षड्भिर्मासैर्भौमो वर्षाद्वा रविस्तुमारयति ॥१३१ ॥

पापग्रह से देखा हुआ शनि केन्द्र स्थान में बैठा हो तो सोलह दिन में मार देवे, मंगल हो तो छः महीनों में मारे और यदि सूर्य हो तो एक वर्ष में मार दे ॥ १३१ ॥

षष्ठाष्टमगश्चन्द्रः सद्यो मरणाय पापसंदृष्टः ।
अष्टाभिः शुभदृष्टो वर्षैर्मिश्रैस्तदर्द्धेन ॥ १३२ ॥

छठें या आठवें घर में बैठा हुआ चन्द्रमा पापग्रह से देखा जाता हो तो शीघ्र ही मार देवे, शुभ ग्रहों से देखा गया हो तो आठवें वर्ष में, शुभाऽशुभ ग्रहों से देखा गया हो तो चौथे वर्ष में मृत्यु करे ॥ १३२ ॥

शुक्लपक्षे निशायां च कृष्णे जातो दिवा यदा ।
षष्ठाष्टमगतश्चन्द्रो न शिशुं हंति तातवत् ॥ १३३ ॥

शुक्ल पक्ष में रात्रि में और कृष्णपक्ष में दिन में जन्म हो और चन्द्रमा छठें तथा आठवें घर में बैठा हुआ हो तो पिता की तरह बालक की रक्षा करे ॥१३३॥

शनिराहुकुजैर्युक्तः सप्तमे नवमे शशी ।
सप्तमे दिवसे हन्ति मासे वा सप्तमे शिशुम् ॥ १३४ ॥

सप्तम स्थान या नवम स्थान में शनि, राहु, मंगल से युक्त चन्द्रमा हो तो बालक सातवें दिन अथवा सातवें महीने में मर जाय ॥ १३४ ॥

पुत्रे कलत्रे लग्ने च व्यये पापयुतः शशी ।
शिशुं न्ति न दृष्टश्चेद्बलकाद्भिः शुभग्रहैः ॥ १३५ ॥

पाँचवें, सातवें, लग्न में तथा बारहवें में पापग्रह से युक्त चन्द्रमा हो और बलवान् शुभग्रहों से नहीं देखा जाता हो तो बालक को मार देता है ॥ १३५ ॥

चन्द्रः पापसमायुक्तश्चन्द्रो वा पापमध्यगः ।
चन्द्रात्सप्तमगः पापस्तदा मातृवधो भवेत् ॥ १३६ ॥

चन्द्रमा, पापग्रहों से संग में हो अथवा पापग्रहों के मध्य में हो अथवा चन्द्रमा से सातवें घरमें पापग्रह हो तो उसकी माता नष्ट हो जाय ॥१३६ ॥

लग्नस्थश्च यदा भानुः पञ्चमस्थो निशाकरः ।
अष्टमस्था यदा पापास्तदा जातो न जीवति ॥ १३७ ॥

सूर्य लग्न में बैठा हो, चन्द्रमा पाँचवें घर में और आठवें घर में अन्य पापग्रह हों तो जन्मा हुआ बालक नहीं जीवे ॥ १३७ ॥

लग्नं पापेन संयुक्तं लग्नं वा पापमध्यगम् ।
लग्नात्सप्तमगाः पापास्तदा मातृवधो भवेत् ॥ १३८ ॥

पापग्रह से युक्त लग्न हो अथवा पापग्रहों के बीच में लग्न आ गया हो वा लग्न से सातवें घर में पापग्रह हों तो माता की मृत्यु हो ॥ १३८ ॥

सूर्यः पापेन संयुक्तः सूर्यो वा पापमध्यगः ।
सूर्यात्सप्तमगः पापस्तदा पितृवधो भवेत् ॥ १३९ ॥

सूर्य पापग्रह से युक्त हो अथवा पापग्रहों के मध्य में हो, सूर्य से सातवें घर में पापग्रह हो तो पिता की मृत्यु हो ॥ १३९ ॥

क्रूरक्षेत्रे यदा जातो लग्नेशोऽस्तंगतो भवेत् ।
अपकर्मा तदा जातः सप्तवर्षाणि जीवति ॥ १४० ॥

क्रूरग्रह के क्षेत्र (लग्न) में जन्म हो और लग्नेश अस्त हो रहा तो वह अनिष्ट कर्मों वाला तथा सात वर्ष की आयु वाला हो ॥१४०॥

अष्टमे च यदा सौरिर्जन्मस्थाने च चन्द्रमाः ।
मंदाग्न्युदररोगी च गात्रहीनश्च जायते ॥ १४१ ॥

आठवें घर में शनि और जन्मलग्न में चन्द्रमा हो तो वह नर मंदाग्नि उदर रोग वाला और हीन शरीर वाला होता है ॥ १४१ ॥

शनिक्षेत्रे यदा भानुर्भानुक्षेत्रे यदा शनिः ।
द्वादशे वत्सरे मृत्युस्तस्य जातस्य जायते ॥ १४२ ॥

शनि के क्षेत्र में सूर्य और सूर्य के क्षेत्र में शनि हो तो बारहवें वर्ष में उस जन्मनेवाले की मृत्यु होती है ॥ १४२ ॥

बुधभौमौ यदा लग्ने षष्ठस्थाने च तिष्ठतः ।
तस्करो घोरकर्मा च हस्तपादौ विनश्यत ॥ १४३ ॥

बुध तथा मंगल लग्न में या छठें हों तो बालक चोर तथा घोर कर्म करने वाला हो, उसके हाथ पैर भी नष्ट हो जायँ ॥ १४३ ॥

षष्ठेऽष्टमे च मूर्तौ च शत्रुक्षेत्रे यदा बुधः ।
चतुर्वर्षे भवेन्मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ १४४ ॥

छठें तथा आठवें घर में या लग्न में स्थित बुध शत्रु के घर में हों तो चौथे वर्ष में उस बालक की मृत्यु होती है, इसमें सन्देह नहीं ॥ १४४ ॥

अष्टमस्थो यदा राहुः केन्द्रस्थाने च चन्द्रमाः ।
मद्य एव भवेन्मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ १४५ ॥

आठवें घर में राहु हो, केन्द्र में चन्द्रमा हो तो उस बालक की मृत्यु शीघ्र ही होती है, इसमें सन्देह नहीं ॥ १४५ ॥

सप्तमे भवने राहुः शत्रुक्षेत्रे यदा भवेत् ।
प्राप्ते च षोडशे वर्षे तस्य मृत्युर्न संशयः ॥ १४६ ॥

जिसके राहु शत्रु के घर का होकर सातवें हो तो सोलहवें वर्ष उसकी मृत्यु हो, इसमें सन्देह नहीं है ॥ १४६ ॥

द्वादशस्थो यदा चन्द्रः पापः स्यादष्टमे गृहे ।
एकमासे भवेन्मृत्युर्बालकस्य च निश्चितम् ॥ १४७ ॥

बारहवें घर में चन्द्रमा हो, पापग्रह आठवें घर में हों तो एक ही महीने में उस बालक की मृत्यु हो जाती है ॥ १४७ ॥

जन्मस्थाने यदा राहुः षष्ठस्थाने च चंद्रमाः ।
अपस्मारी तदा बालो जायते नात्र संशयः ॥ १४८ ॥

जन्म-लग्न में राहु हो, छठें घर में चन्द्रमा हो तो वह बालक निश्चय मृगी रोग वाला हो ॥ १४८ ॥

भार्गवेण युतश्चंद्रः षष्ठाष्टमगतो यदा ।
मंदाग्न्युदररोगी च हीनांगोऽपि प्रजायते ॥ १४९ ॥

शुक्र से युक्त चन्द्रमा छठें या सातवें घर में हो तो बालक मंदाग्नि, उदर-रोग तथा हीन अंग वाला होता है ॥ १४९ ॥

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्रियं हरति भर्ता च पतिं भार्या विनाशयेत् ॥ १५० ॥

लग्न में, बारहवें, चौथे, सातवें तथा आठवें घर में मंगल हो तो वह पुरुष अपनी स्त्री को नष्ट करे, यही योग स्त्री को हो तो वह अपने पति को नष्ट करे ॥ १५० ॥

षष्ठेऽष्टमे यदा चन्द्रो बुधयुक्तस्तु तिष्ठति ।
विषदोषेण बालस्य तदामृत्युश्च जायते ॥ १५१ ॥

बुध से युक्त चन्द्रमा छठें या सातवें हो तो उस बालक की मृत्यु विष-दोष से हो ॥ १५१ ॥

भानुना संयुतश्चंद्रः षष्ठाष्टमगतो यदा ।
राजदोषेण मृत्युर्वा सिंहदोषेण वा भवेत् ॥ १५२ ॥

सूर्य से युक्त चन्द्रमा छठें अथवा आठवें घर में हो तो राज-दोष से अथवा सिंह-दोष से (राजा या शेर के द्वारा) मृत्यु हो ॥ १५२ ॥

एकोऽपि यदि मूर्तौस्याज्जन्मकाले दिवाकरः ।
स्थानहीनो भवेद्बालः शोकसन्ताप पीडितः ॥ १५३॥

अकेला सूर्य जन्म-लग्न में पड़ा हो तो वह बालक स्थानहीन हो और शोक सन्ताप में पीड़ित रहे ॥ १५३ ॥

दशमस्थो यदा भौमः शत्रुक्षेत्रस्थितो भवेत् ।
म्रियते तस्य बालस्य पिता शीघ्रं न संशयः ॥ १५४ ॥

जिनके शत्रु क्षेत्र में होकर मंगल दशम स्थान में हो तो उस बालक का पिता शीघ्र ही मरे, इसमे सन्देह नहीं है ॥ १५४ ॥

लग्नेऽष्टमे यदा राहुश्चद्रयुक्तः स्थितो भवेत् ।
दशहि जायते तस्य बालस्य मरणं ध्रुवम् ॥ १५५ ॥

लग्न में अथवा आठवें चन्द्रमा से युक्त राहु हो तो दस दिन के भीतर उस बालक की मृत्यु हो ॥ १५५ ॥

लग्ने जीवो धने मन्दो रविभौमबुधास्तथा ।
विवाहसमये तस्य म्रियते निश्चितं पिता ॥ १५६ ॥

लग्न में बृहस्पति, दूसरे घर में शनि, सूर्य, मंगल तथा बुध हों तो बालक के विवाह समय में पिता मरे ॥ १५६ ॥

शनैश्चरस्तुलाकुम्भमकरे यदि जायते ।
लग्नेअष्टमे तृतीये वा तदारिष्टं न जायते ॥ १५७ ॥

तुला, कुम्भ, मकर इन राशियों पर, लग्न में वा आठवें अथवा तीसरे घर में शनि हो तो रोग (अरिष्ट) नहीं हो ॥ १५७ ॥

मीनलग्ने जीवशुक्रौ मेषेऽर्को मकरे कुजः ।
दासवंशेऽपि जातोऽसौ राजा छत्रधरो भवेत् ॥ १५८ ॥

मीन लग्न में बृहस्पति तथा शुक्र हो, मेष राशि का सूर्य और मकर का मंगल हो तो दास-वंश में जन्मा हुआ मनुष्य भी छत्रधारी राजा होता है ॥१५८॥

लग्नाच्च नवमे सूर्यः सूर्यपुत्रे तथाऽष्टमे ।
एकादशे भार्गवे च मासमेकं न जीवति ॥ १५९ ॥

लग्न से नवम घर में सूर्य हो, शनि आठवें हो, ग्यारहवें घर में शुक्र हो तो वह बालक एक महीने भी नहीं जीवे ॥ १५९ ॥

धने गुरुः सैंहिकेयो भौमः शुक्रश्च सप्तमे ।
अष्टमे रविचन्द्रौ च म्लेच्छः स्याद्यौवने हि सः ॥ १६० ॥

धनु राशि पर बृहस्पति हो और राहु, मंगल, शुक्र ये सातवें घर में हों, आठवें घर में सूर्य-चन्द्रमा हों तो जन्मनेवाला नर युवा अवस्था में म्लेच्छ (विजातीय) हो जाय ॥ १६० ॥

नवमे दशमे चन्द्रः सप्तमे च यदा सितः ।
पापे पातालसंस्थे च वंशच्छेदकरो नरः ॥ १६१ ॥

नवें या दसवें घर में चन्द्रमा हो, सातवें घर में शुक्र हो, पाप ग्रह चौथे घर में हो तो जन्मनेवाला नर वंश को नष्ट करनेवाला होता है ॥ १६१ ॥

भ्रातृस्थाने यदा जीवो लाभस्थाने यदा शशी ।
स लोके गृहमध्यस्थो जायते कुलदीपकः ॥१६२॥

तीसरे घर में बृहस्पति हो, ग्यारहवें घर में चन्द्रमा हो तो वह नर घर में स्थित होता हुआ कुल का दीपक होकर लोक में प्रसिद्ध हो ॥ १६२ ॥

सिंहलग्ने यदा भौमः पञ्चमे च निशाकरः ।
व्ययस्थाने यदा राहुः स जातो कुलदीपकः ॥ १६३॥

सिंहलग्नमें मंगल हो, पाँचवें घर में चन्द्रमा और बारहवें घर में राहु हो तो वह कुल में दीपकरूप हो ॥ १६३ ॥

एकः पापो यदा लग्ने पापश्चैको रसातले ।
जायते हि सुखी बालः स जातः कुलदीपकः ॥ १६४ ॥

यदि एक पापग्रह लग्न में बैठा हो और एक पापग्रह चतुर्थ में हो तो वह बालक अपने कुल में दीपकरूप हो और सदा सुखी रहे ॥ १६४ ॥

लग्ने वा सप्तमे भौमः पञ्चमे च दिवाकरः ।
जीवेदरण्यमध्येऽपि विख्यातः स न संशयः ॥ १६५ ॥

लग्न में या सातवें घर में मंगल हो और पाँचवें घर में सूर्य हो तो वह वन में पड़ा रहे तो भी अच्छी तरह जीवे और विख्यात (प्रसिद्ध) हो। इसमें सन्देह नहीं है ॥ १६५ ॥

भौमक्षेत्रे यदा जातो मूर्तौक्रूरग्रहो भवेत् ।
वर्षमध्ये भवेन्मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥ १६६ ॥

मंगल के क्षेत्र में जन्म हो, लग्न में क्रूर ग्रह हो तो वह बालक एक वर्ष के भीतर मरे, इसमें सन्देह नहीं ॥ १६६ ॥

क्षीणचन्द्रो द्वादशस्थो दुःखदः पापविक्षितः ।
करोति विपुलंक्लेशमष्टमस्थो यदा शनिः ॥ १६७ ॥

क्षीण चन्द्रमा बारहवें घर में हो और यदि पापग्रहों से देखा गया हो तो दुखमयी हो तथा साथ ही आठवें घर में शनि बैठा हो तो बहुत क्लेश करे ॥१६७॥

द्वादशे च यदा चन्द्रः षष्ठे पापग्रहो भवेत् ।
अल्पायुश्च सदा रोगी जायते जातको ध्रुवम् ॥ १६८ ॥

बारहवें घर में चन्द्रमा हो, छठें घर में पापग्रह हों तो वह बालक अल्प आयुवाला हो और सदा रोगी रहे ॥ १६८ ॥

दशमे भवने राहुः पितृमात्रोः प्रपीडकः ।
द्वादशे वत्सरे तस्य बालस्य मरणं ध्रुवम् ॥ १६९ ॥

दशवें घर में राहु हो तो माता पिता को पीड़ा दे और बारहवें वर्ष में निश्चय करके उस बालक की मृत्यु हो जाय ॥ १६९ ॥

शनिक्षेत्रे यदा भानुर्भानुक्षेत्रे शनैश्चरः ।
विंशतौ वत्सरे मृत्युर्बालकस्य न संशय ॥ १७० ॥

शनि के क्षेत्र में सूर्य हो और सूर्य के क्षेत्र में शनि हो तो उस बालक की मृत्यु बीस वर्ष में होती है, यह निश्चय जानो ॥ १७० ॥

रिपुस्थाने यदा पापो व्ययस्थाने च चन्द्रमाः ।
चतुर्थे मङ्गलो यस्य माता तस्य न जीवति ॥ १७१ ॥

छठें घर में पापग्रह हो, बारहवें घर में चन्द्रमा हो, चौथे घर में मंगल हो तो उसकी माता नहीं जीवे ॥ १७१ ॥

चतुर्थे मातृहा पापो दशमे पितृहा भवेत् ।
सप्तमे भवने पापो पितृमात्रोर्विनाशकः ॥ १७२ ॥

चौथे में पापग्रह हो तो माता को नष्ट करे। दशवें घर में पापग्रह हो तो पिता को नष्ट करे और सातवें घर में पापग्रह हो तो दोनों को नष्ट करे ॥ १७२ ॥

द्वादशे रिपुभावे वा यदा क्रूरा व्यवस्थिताः ।
तदा मातृभयं विद्याच्चतुर्थे दशमे पितुः ॥ १७३ ॥

बारहवें तथा छठें घर में क्रूर ग्रह होवें तो माता नष्ट होवे, चौथे या दशवें घर में पापग्रह हो तो पिता नष्ट होवे ॥ १७३ ॥

उच्चो वा यदि वा नीचः सप्तमस्थो यदा रविः ।
तदा जातो निहंत्याशु मातरं नात्र संशयः ॥ १७४ ॥

उच्च राशि का अथवा नीच का सूर्य सातवें घर में हो तो जन्मनेवाला बर माता को नष्ट करे, इसमें संदेह नहीं है ॥ १७४ ॥

नागगोसिद्धजातीषुक्ष्माब्धिनेत्रनखा धृतिः ।
क्ष्माशिवदिक्वेष्वजाद्यंशे तुल्याब्दैश्च विधौ व्यसु ॥१७५॥

यह पूर्व योग माता को कब नष्ट करे यह कहते हैं—चन्द्रमा मेष आदि जिस नवांश में हो तो क्रम से ८-९-२४-२२-५-१-४-२-२०-१८-२१-१० इन वर्षों में मृत्यु हो। जैसे मेष के नवांश में हो तो ८ वर्ष में, वृष के ९ वर्ष में, इसी प्रकार सब जगह जानना ॥ १७५ ॥

लग्ने शनिर्यदा भौमो राहुः सूर्यश्च संस्थितः।
सन्तापो रक्तदोषस्य सर्वसौम्येष्वरोगकृत ॥ १७६ ॥

लग्न में शनि, मंगल, राहु, सूर्य बैठे हों तो संताप तथा रक्त-दोष रहे, सब शुभग्रह हों तो अरोग्य रहे ॥ १७६ ॥

केन्द्रे शुभो यदैकोऽपि बली विश्वप्रकाशकः।
सर्वे दोषाः क्षयं यान्ति दीर्घायुश्च भवेन्नरः ॥ १७७ ॥
अर्कः केन्द्रे यदा चन्द्रो मित्रांशे गुरुवीक्षितः।
वित्तवान् ज्ञानसम्पन्नो जायते हि तदा नरः ॥ १७८ ॥

केन्द्र में जो एक भी शुभग्रह हो तो बली, विश्व का प्रकाशक, दीर्घ आयुवाला नर हो और सब दोष नष्ट हो जाये। सूर्य केन्द्र, चन्द्रमा मित्र ग्रह के नवांश में हो तथा चन्द्रमा को बृहस्पति देखते हों तो वह नर धनी तथा ज्ञान-संयुक्त होता है ॥ १७७–१७८ ॥

अथ स्त्रीसम्बन्धी शुभाशुभयोगाः।

केन्द्रे च सौम्या यदि पृष्ठभाजः।
पापाः कलत्रे च मनुष्यराशौ।
राज्ञी भवेत्स्त्री बहुकोषयुक्ता
नित्यं प्रशांता च सपुत्रिणी च ॥ १ ॥

जिस स्त्री के केन्द्र में पृष्ठोदयसंज्ञक राशि के शुभग्रह हो और पापग्रह मनुष्य राशि के होकर सातवें घर में हों तो वह बहुत खजाने वाली रानि और नित्य शांतस्वरूप पुत्रों वाली हो ॥ १ ॥

बुधे विलग्ने यदि तुंगसंस्थे
लाभस्थितो देवपुरोहितश्च।
नरेन्द्रपत्नी वनिताप्रसंगे
तदा प्रसिद्धा भवतीह भूमौ ॥ २ ॥

उच्च का बुध लग्न में हो, बृहस्पति ग्यारहवें घर में हो तो वह स्त्री राजा की रानी हो और सारी पृथ्वी में विख्यात हो ॥ २ ॥

एकोऽपि जीवो रसवर्गशुद्धः
केन्द्रे यदा चन्द्रनिरीक्षितश्च।
राज्ञी भवेत् स्त्री सधना सपुत्रा
रूपान्विता पीननितम्बबिंबा ॥ ३ ॥

अकेला बृहस्पति षड्वर्ग शुद्ध (बली होकर) केन्द्र में हो, एवं चन्द्रमा द्वारा देखा जाता हो तो वह स्त्री धनाढ्य रानी, पुत्रवती, रूपवती और स्थूल नितम्बोंवाली हो ॥ ३ ॥

कर्कोदये सप्तमगे पतंगे
जीवेन दृष्टे परिपूर्णदेहा।
विद्याधरी चात्र भवेत् प्रधाना
राज्ञी गतारिर्बहुपुत्रपौत्रा ॥ ४ ॥

कर्क लग्न हो, सातवें सूर्य हो और बृहस्पति से देखा जाता हो तो परिपूर्ण उत्तम शरीरवाली, विद्याधरी, बहुत पुत्रोंवाली और प्रधान रानी हो ॥ ४ ॥

षड्वर्गशुद्धैस्त्रिभिरेव राज्ञी
चतुर्भिरंशैश्च तथैक पत्नी।
पंचादिभिर्दिव्यविमानभाजा
त्रैलोक्यनाथप्रमदा तदा स्यात् ॥ ५ ॥

षड्वर्ग में शुद्ध तीन ग्रहों के होने से रानी हो और चार अथवा पाँच ग्रहों के रहने पर दिव्य (विमान) सवारी में बैठनेवाली त्रैलोक्यपति राजा की रानी हो ॥ ५ ॥

लाभस्थितः शीतकरो भृगुश्च
कलत्रगः चन्द्रसुतेन युक्तः।
जीवेन दृष्टो भवतीह राज्ञी
ख्याता धरायां सकलैः स्तुता च ॥ ६ ॥

ग्यारहवें घर में चन्द्रमा हो, बुधयुक्त शुक्र सातवें घर में हो तथा बृहस्पति से देखा जाता हो तो पृथ्वी पर सबसे स्तुत रानी हो ॥ १ ॥

स्त्रीपुंसयोः फलं तुल्यं जातके किन्तु सप्तमे।
सौभाग्यं चन्द्रलग्नाभ्यां वपुराकृतिरुच्यते ॥ ७ ॥

सातवें घर के ग्रह से स्त्री-पुरुषों का फल समान है, चन्द्रमा और लग्न से सौभाग्य और शरीर की आकृति कहनी चाहिये ॥ ७ ॥

लग्ने च सप्तमे पापे सप्तमे वत्सरे पतिः।
म्रियते चाष्टमे वर्षे चन्द्रो षष्ठेऽष्टमे यदा ॥ ८ ॥

लग्न में या सातवें स्थान में पापग्रह हो तो सातवें वर्ष में पति मरे और छठें या आठवें घर में चन्द्रमा हो तो आठवें वर्ष में पति मरे ॥ ८ ॥

गुरौ शुक्रे मृतापत्या मृतगर्भा च मंगले।
अष्टमस्थो ग्रहो नूनं न स्त्रियाः शोभनो मतः ॥ ९ ॥

बृहस्पति और शुक्र आठवें घर में हो तो उसकी संतान नहीं जीवें, आठवें घर में मंगल हो तो गर्भ नष्ट हो। कहने का तात्पर्य यह है कि स्त्री के जन्म समय आठवें घर में रहनेवाला कोई ग्रह शुभदायी नहीं होता ॥ ९ ॥

एकः पुत्रो भवेद्राजा पंचमस्थो यदा रविः।
मंगले च त्रयः पुत्राः गुरौ पञ्च प्रकीर्तिताः ॥ १० ॥

पाँचवें घर में सूर्य हो तो एक ही पुत्र हो, किन्तु वह राजा हो। मंगल हो तो तीन पुत्र हों और बृहस्पति हो तो पाँच पुत्र हों ॥ १० ॥

पंचमस्थे निशानाथे स्त्रियाः कन्याद्वयं भवेत्।
बुधे कन्याश्चतस्रश्च शुक्रे सप्त च कन्यकाः ॥ ११ ॥

पाँचवें चन्द्रमा हो तो स्त्री को दो कन्यायें होवें, बुध हो तो चार कन्यायें और शुक्र हो तो सात कन्यायें हों ॥ ११ ॥

षडेव कन्या जायंते धर्मस्थाने यदा सितः।
सप्तमे चेद्यदा राहुः स्त्रियाः पुत्रस्तदा भवेत् ॥ १२ ॥

यदि नवम घर में शुक्र हो तो छः कन्यायें हों, सातवें घर में राहु हो तो पुत्र हो ॥ १२ ॥

सुरूपा भार्गवे लग्ने साहंकारा धरासुते।
बुधे वक्रा गुरौ शुद्धा शनौ दारिद्र्यदुर्भगा ॥ १३ ॥

शुक्र लग्न में हो तो स्त्री सुन्दर तथा रूपवती हो, मंगल हो तो अहंकार युक्त स्वभाववाली हो, बुध हो तो कुटिला, बृहस्पति हो तो शुद्धा और शनि हो तो दरिद्रा तथा दुर्भगा हो ॥ १३ ॥

पापयोरन्तरे लग्ने चन्द्रे वा यदि कन्यका।
जायते च तदा हंति पितृश्वशुरयोः कुलम् ॥ १४ ॥

पापग्रहों के मध्य में लग्न हो अथवा चन्द्रमा हो तो जन्मनेवाली कन्या पिता और ससुरालके कुल को नष्ट कर देती है ॥ १४ ॥

द्वादशे चाष्टमे भौमे क्रूरे तत्रैव संस्थिते।
लग्ने च सिंहिकापुत्रे रंडा भवति कन्यका ॥ १५ ॥

बारहवें या आठवें घर में मंगल हो और वहाँ ही क्रूर ग्रह बैठा हो और लग्न में राहु हो तो वह कन्या राँड़ हो ॥ १५ ॥

सप्तमे भार्गवे जाता कुलदोषकरी भवेत्।
कर्कराशिस्थिते भौमे स्वैरं भवति वेश्मसु ॥ १६ ॥

सातवें शुक्र हो तो जन्मनेवाली कन्या कुल को दोष लगाने वाली हो और कर्क राशि पर मंगल बैठा हो तो व्यभिचारिणी हो ॥ १६ ॥

लग्नात्सप्तमगः पापश्चन्द्रात्सप्तमगोऽपि वा ।
सद्यो निहंति दम्पत्योरेकं नास्त्यत्र संशयः ॥ १७ ॥

लग्न से सातवें घर में और चन्द्रमा से भी सातवें घर में यदि एक भी पापग्रह हो तो स्त्री-पुरुष इन दोनों में निःसन्देह एक की मृत्यु होवे, इसमें सन्देह नहीं है ॥ १७ ॥

लग्ने व्यये चतुर्थे च पञ्चमे सप्तमे ग्रहाः ।
पतिवश्या भवेन्नारी, नारीवश्यो भवेत्पतिः ॥ १८ ॥

लग्न में, बारहवें, चौथे, पाँचवें तथा सातवें स्थान में कोई भी ग्रह होवें तो स्त्री पति के वश में रहे और पति स्त्री के वश में रहे ॥ १८ ॥

अथ ऋतुफलम् ।

महोद्यमी मनस्वी च तेजस्वी बहुकार्यकृत् ।
नानादेशरसाभिज्ञो वसन्तर्तुभवो नरः ॥ १ ॥

वसन्तऋतु में जन्मलेनेवाला नर महा उद्यमी, बुद्धिमान्, तेजस्वी बहुत कार्य करनेवाला और अनेक देशों के व्यवहार को जाननेवाला होता है ॥ १ ॥

बह्वारंभो जितक्रोधः क्षुधालुः कामुको नरः ।
दीर्घः शूरो बुद्धिमांश्च ग्रीष्मे जातः सदा शुचिः ॥ २ ॥

ग्रीष्मऋतु में जन्मे तो वह बहुत कार्यों का आरम्भकर्त्ता, क्रोधहीन, भूखवाला, कामी, लम्बा, शूरवीर और बुद्धिमान् तथा सदा पवित्र रहता है ॥ २ ॥

गुणवान्भोगयुक्तश्च राजपूज्यो जितेन्द्रियः ।
कुशलो सत्यवादी च वर्षाकाले भवेन्नरः ॥ ३ ॥

गुणवान्, भोग से युक्त, राजपूज्य जितेन्द्रिय, कुशल सत्यवादी नर वर्षा ऋतु में जन्मनेवाला होता है ॥ ३ ॥

वाणिज्यकृषिवृत्तिश्च धनधान्यसमृद्धिमान् ।
तेजस्वी बहुमान्यश्च शरज्जातो भवेन्नरः ॥ ४ ॥

वणिज तथा खेती करनेवाला, धन-धान्य की समृद्धिवाला, तेजस्वी, बहुत मान्य नर शरदृतु में जन्मनेवाला होता है ॥ ४ ॥

बहुवीर्यो नीतिविज्ञो ग्रामयुक्तः सदोद्यमी ।
ह्रस्वपादगलो भीरुर्हेमन्ते जायते नरः ॥ ५ ॥

बहुत बलवान्, नीति जाननेवाला, ग्रामयुक्त, सदा उद्यमी, छोटे पैरोंवाला, छोटी ग्रीवावाला और डरपोक नर हेमन्त ऋतु में जन्मने से होता है ॥ ५ ॥

रूपयौवनसम्पन्नो दीर्घसूत्रो मदोत्कटः ।
क्षुधायुक्तो कामुकश्च शिशिरर्तुभवो नरः ॥ ६ ॥

शिशिर ऋतु में जन्मनेवाला नर रूप-यौवन से संयुक्त, दीर्घसूत्री (देरी में काम करनेवाला), मदोत्कट, क्षुधायुक्त और कामी होता है ॥ ६ ॥

अथ पक्षफलम् ।

पूर्णचन्द्रनिभः श्रीमानुद्यमी बहुशास्त्रवित् ।
कुशलो ज्ञानसम्पन्नः शुक्लपक्षभवो नरः ॥ १ ॥

शुक्लपक्ष में जन्मनेवाला नर पूर्णचन्द्रमा के समान कांतिवाला, श्रीमान्, उद्यमी, बहुत शास्त्रों को जाननेवाला, कुशल और ज्ञान से युक्त होता है ॥ १ ॥

निष्ठुरो दुर्मुखो मूर्खः स्त्रीद्वेषी च जनोज्झितः ।
जायते च परप्रेष्यः कृष्णपक्षभवो नरः ॥ २ ॥

कृष्णपक्ष में जन्मनेवाला कठोर, दुर्मुख, मूर्ख, स्त्री से वैर करनेवाला, जनों से त्यागा हुआ और पराये की सेवा करनेवाला होता है ॥ २ ॥

अथ वारफलम् ।

मिष्टान्नभोगी मानी च क्रोधी च रतिलालसः ।
पित्ताधिको रवेर्वारे धनकामी भवेन्नरः ॥ १ ॥

रविवार को जन्म हो तो मिष्टान्न खानेवाला, मानी, क्रोधी, मैथुन की लालसा तथा अधिक पित्तवाला हो और धन की कामना बनी रहे ॥ १ ॥

भोगी कामी शास्त्रवेत्ता गुणी मानी जितेन्द्रियः ।
विद्याधिकः शीलयुक्तो जायते चन्द्र वासरे ॥ २ ॥

सोमवार में जन्मे तो भोगी, कामी, शास्त्रवेत्ता, गुणी, मानी, जितेन्द्रिय, अधिक विद्यावान् और शीलयुक्त होता है ॥ २ ॥

मूर्खप्रियो धनी क्रूरः श्रुतिस्मृतिविनिन्दकः ।
नास्तिको वेदहीनश्च भौमे भोगी भवेन्नरः ॥ ३ ॥

मंगलवार को जन्मे तो मूर्खों का प्रिय, धनी, क्रोधी, श्रुति-स्मृति की निंदा करनेवाला, नास्तिक, वेदहीन तथा भोगी होता है ॥ ३ ॥

वेदशास्त्रक्रियायुक्तो दयालुश्च बहुश्रुतः ।
भयानको योगयुक्तो जायते बुधवासरे ॥ ४ ॥

बुधवार को जन्मे तो वेद-शास्त्र की क्रिया से युक्त, दयालु, बहुश्रुत डरपोक और योगयुक्त हो ॥ ४ ॥

वेदवेत्ता चाग्निहोत्री पुत्रपौत्रधनान्वितः ।
प्रजान्वितः पूर्णवेत्ता गुरुवारे भवेन्नरः ॥ ५ ॥

वेद को जानने वाला, अग्निहोत्री, पुत्र-पौत्र धनादिकों से युक्त, प्रजा से युक्त, पूर्ण विद्वान् ऐसा नर बृहस्पतिवार को जन्मने से होता है ॥ ५ ॥

अर्थी भोगी धनी शूरः कृपालुर्बहुसेवकः ।
दैवज्ञोऽपि श्रुतिज्ञश्च जनः शुक्रदिने भवेत् ॥ ६ ॥

प्रयोजन करनेवाला, भोगी, धनी, शूर वीर, कृपालु, बहुत भृत्योंवाला, दैवज्ञ और वेदवेत्ता नर शुक्रवार में जन्मने से होता है ॥ ६ ॥

नीचसक्तः कृतघ्नश्च कुटिलो बंधुपीडकः ।
कृतकार्यहरो रोगी जायते शनिवासरे ॥ ७ ॥

जो शनिवार में जन्मे वह नीच जनों में आसक्त, कृतघ्न, कुटिल, बन्धुजनों को पीड़ा देनेवाला और किये हुए कार्य को नष्ट करनेवाला तथा रोगी होता है ॥ ७ ॥

लग्नादुपचयस्थानस्थिते वारग्रहे सति ।
उक्तं फलं भवेच्छ्रेष्ठं विपरीतमतोऽन्यथा ॥ ८ ॥

जिस वार में जन्म हो वह ग्रह लग्न से उपचय (३-११-१०-६) इन घरों में स्थित हो तो कहा हुआ फल श्रेष्ठ जाने, नहीं तो विपरीत फल होता है ॥ ८ ॥

अथ वारायुः ।

विपदः प्रथमे मासे द्वात्रिंशे च त्रयोदशे ।
षष्ठेऽपि च ततः सूर्ये जातो जीवति षष्टिकम् ॥ १ ॥

जिसका रविवार को जन्म हो तो उसे पहिले महीने में पीड़ा हो और बत्तीसवें, तेरहवें, छठवें इन वर्षों में पीड़ा हो तथा वह ६० वर्ष तक जीवे ॥ १ ॥

एकादशेऽष्टमे मासे चन्द्रे पीडा च षोडशे ।
सप्तविंशतिमे वर्षे चतुरशीति स्थितौ मृतिः ॥ २ ॥

सोमवार को जन्मे तो ग्यारहवें तथा आठवें महीने या कि सोलहवें और सत्ताइसवें वर्ष में पीड़ा हो और चौरासी वर्ष की अवस्था हो ॥ २ ॥

द्वात्रिंशे च द्वितीये च वर्षे पीडा च मंगले ।
चतुःसप्ततिवर्षाणि सदा रोगी स जीवति ॥ ३ ॥

मंगलवार के दिन जन्म हो तो दूसरे और बत्तीसवें वर्ष में पीड़ा हो । बालक सदा रोगी रहे और चौहत्तर (७४) वर्ष तक जीवे ॥ ३ ॥

बुधवारेऽष्टमे मासे पीडा वर्षे तथाऽष्टमे ।
पूर्णे चतुःषष्टिवर्षे ततो मृत्युर्भविष्यति ॥ ४ ॥

बुधवार को जन्म हो तो आठवें महीने तथा आठवें वर्ष में पीड़ा हो, फिर चौंसठ वर्ष पूरे हो ले तब मृत्यु हो ॥ ४ ॥

गुरौ च सप्तमे मासे षोडशे च त्रयोदशे ।
पीडा ततश्चतुर्युक्ताशीतिवर्षाणि जीवति ॥ ५ ॥

बृहस्पतिवार को जन्म हो तो सातवें महीने तथा सोलहवें और तेरहवें महीने में पीड़ा हो। फिर वह ८४ वर्ष तक जीवे ॥ ५ ॥

शुक्रवारे च जातस्य देहो रोगविवर्जितः ।
षष्टिवर्षेऽथ संपूर्णे म्रियते मानवो ध्रुवम् ॥ ६ ॥

शुक्रवार में जन्म हो तो देह में कष्ट न हो और साठ वर्ष पूरे हो लेवें तब वह मृत्यु को प्राप्त हो ॥ ६ ॥

शनौ च प्रथमे मासे पीडाष्टादशवत्सरे ।
दृढदेहस्तदा जातः शतवर्षाणि जीवति ॥ ७ ॥

शनिवार को जन्म हो तो पहिले महीने और अठारहवें वर्ष में पीड़ा हो और दृढ़ शरीर रहे तथा सौ वर्ष तक जीता है ॥ ७ ॥

अथ तिथिफलम् ।

क्रूरसंगी धनैर्हीनः कुलसंतापकारकः ।
व्यसनासक्तचित्तश्च प्रतिपत्तिथिजो नरः ॥ १ ॥

सर्वदा दुष्टों के संसर्ग में रहनेवाला, धन से रहित, अपने कुल को संताप तथा दुर्व्यसनों में आशक्त ऐसा मनुष्य प्रतिपदा में उत्पन्न होने वाला होता है ॥ १ ॥

परदाररतो नित्यं सत्यशौचविवर्जितः ।
तस्करः स्नेहहीनश्च द्वितीयायां भवेन्नरः ॥ २ ॥

द्वितीया में जन्मनेवाला नर नित्य पराई स्त्री में रमण करनेवाला, सत्य शौचरहित, स्नेहहीन, चोर होता है ॥ २ ॥

अचेतनोऽतिविकलो निर्द्रव्यो विकलः सदा ।
परद्वेषरतो नित्यं तृतीयासंभवो नरः ॥ ३ ॥

तृतीया में जन्मे तो बुद्धिरहित, अति विकल धनरहित, निष्फल और नित्य अन्य जनों से द्वेष करता है ॥ ३ ॥

महाभोगी च दाता च मित्रस्नेहविचक्षणः ।
धनसंतानसंयुक्तश्चतुर्थ्यां यदि जायते ॥ ४ ॥

चतुर्थी में जन्मनेवाला महाभोगी, दानी, मित्रस्नेही, निपुण और धन-संतान से युक्त होता है ॥ ४ ॥

व्यवहारी गुणग्राही पितृमात्रोश्च रक्षकः ।
दाता भोक्ता तनुप्रीतिः पञ्चमीसम्भवो नरः ॥ ५ ॥

पंचमी में जन्मे तो व्यवहारी, गुणग्राही, माता-पिता का रक्षक, दाता, भोक्ता और सूक्ष्म प्रीतिवाला होता है ॥ ५ ॥

नानादेशाभिगामी च सदा कलहकारकः ।
नित्यं जठरदोषी च षष्ठीजातो भवेन्नरः ॥ ६ ॥

षष्ठी तिथि में जन्मे तो अनेक देशों में विचरनेवाला, सदा कलह करनेवाला और नित्य उदर रोगी रहता है ॥ ६ ॥

अल्पतोषी च तेजस्वी सौभाग्यगुणसुन्दरः ।
पुत्रवान्धनसम्पन्नः सप्तमीसंभवो नरः ॥ ७ ॥

सप्तमी को जन्मे तो अल्प संतोषवाला, तेजस्वी, सौभाग्य गुण से सुन्दर, पुत्रवान और धन से भरपूर होता है ॥ ७ ॥

धर्मिष्ठः सत्यवादी च दाता भोक्ता च वत्सलः ।
गुणज्ञः सर्वकार्यज्ञो योऽष्टमीसंभवो नरः ॥ ८ ॥

जो मनुष्य अष्टमी को जन्मे वह धर्मिष्ठ, सत्यवादी, दानी, भोगी, सबका प्रिय, गुणज्ञ और सब कार्य को जाननेवाला होता है ॥ ८ ॥

देवताराधकः पुत्री धनी स्त्रीमग्नमानसः ।
शास्त्राभ्यासरतो नित्यं नवम्यां यदि जायते ॥ ९ ॥

नवमी को जन्मनेवाला नर देवता का आराधन करनेवाला, पुत्रवान्, धनी, स्त्री में आसक्त मनवाला हो और शास्त्र के अभ्यास में सदा संलग्न रहे ॥ ९ ॥

दशम्यां धर्मकर्मज्ञो देवसेवी च जापकः ।
गुणी धनी वेदविज्ञो बंधुविप्रप्रियो जनः ॥ १० ॥

दशमी को जन्मनेवाला धर्म-कर्म को जाननेवाला, देवताओं की सेवा करनेवाला, जापक, गुणी, धनी, वेद को जाननेवाला, बन्धुजन और ब्राह्मण लोगों का प्रिय होता है ॥ १० ॥

एकादश्यां नरेन्द्रस्य गेहगामी शुचिर्भवेत् ।
धर्मज्ञश्च विवेकी च गुरुशुश्रूषकः गुणी ॥ ११ ॥

एकादशी को जन्मे तो राजा के घर में जानेवाला, पवित्र, धर्मज्ञ, विवेकी, गुरु की सेवा करनेवाला और गुणी होता है ॥ ११ ॥

चपलश्चंचलज्ञानः सदा क्षीणस्वरूपधृक् ।
देशभ्रमणशीलश्च द्वादशीजातको भवेत् ॥ १२ ॥

द्वादशी तिथि को जन्मे तो चपल, चंचल, ज्ञानवाला, सदा क्षीण स्वरूपवाला और विदेश में भ्रमण करनेवाला होता है ॥ १२ ।

महासिद्धो महाप्राज्ञः शास्त्राभ्यासी जितेन्द्रियः ।
परकार्यरतो नित्यं त्रयोदश्यां यदा भवेत् ॥ १३ ॥

त्रयोदशी तिथि में जन्मे तो महासिद्ध, महाप्राज्ञ, शास्त्र का अभ्यास करनेवाला, जितेन्द्रिय, नित्य पराये कार्य में रहनेवाला होता है ॥ १३ ॥

धनाढ्यो धर्मशीलश्च शूरः सद्वाक्यपालकः ।
राजमान्यो यशस्वी च चतुर्दश्यां यदा भवेत् ॥ १४ ॥

चतुर्दशी को जन्मे तो लक्ष्मीयुक्त, बुद्धियुक्त, महान्, शूरवीर, श्रेष्ठ, वचन को पालनेवाला, राजमान्य और यशस्वी होता है ॥ १४ ॥

श्रीयुतो मतियुक्तश्च महाभोजनलालसः ।
उज्ज्वलः परदारेषु विरतः पूर्णिमाभवः ॥ १५ ॥

पूर्णिमाको जन्मे तो लक्ष्मीयुक्त, बुद्धियुक्त, महान्, भोजन की लालसावाला, अन्य स्त्रियों से रमण करनेवाला और तेजस्वी होता है ॥ १५ ॥

स्थिरारंभः परद्वेषी वक्रो मूर्खः पराक्रमी ।
गूढमंत्री च संज्ञानी ह्यमावास्याभवो नरः ॥ १६ ॥

अमावास्या को जन्मे तो स्थिर काम का आरम्भ करनेवाला, परद्वेषी, कुटिल, मूर्ख, पराक्रमी, गूढमंत्री और सम्यक् ज्ञानी होता है ॥ १६ ॥

निर्विद्धायां तिथौ सौम्यविद्धायां च शुभं फलम् ।
अनिष्टं पापविद्धायां तिथौ भवति निश्चितम् ॥ १७ ॥

निर्विद्धा तथा शुभ तिथि से विद्ध तिथि में जन्मे तो शुभ फल हो और जो पापविद्धा तिथि में जन्मे हो तो अनिष्ट (बुरा फल) हो ऐसा निश्चय जानो ॥ १७ ॥

अथ नन्दादितिथिफलम् ।

नन्दातिथौ नरो जातो महामानी च कोविदः ।
देवताभक्तिनिष्ठश्च ज्ञानी च प्रियवत्सलः ॥ १ ॥

नन्दातिथि को जन्मनेवाला नर महामानी, पण्डित, देवता की भक्ति में तत्पर, ज्ञानी और प्रियोजनों का हित करने वाला हो ॥ १ ॥

भद्रातिथौ बन्धुमान्यो राजसेवी धनान्वितः ।
संसारभयभीतश्च परमार्थमतिर्नरः ॥ २ ॥

भद्रा तिथि में जन्मे तो बंधुओं से मान्य, राजसेवी, धनाढ्य, संसार मे डरनेवाला और परमार्थ में बुद्धि रखनेवाला होता है ॥ २ ॥

जयातिथौ राजपूज्यः पुत्रपौत्रादिसंयुतः ।
शूरः शांतश्च दीर्घायुर्महाविज्ञश्च जायते ॥ ३ ॥

जयातिथि को जन्मनेवाला राजपूज्य, पुत्र-पौत्रादिकों से संयुक्त, शूरवीर, शांत, दीर्घ अवस्थावाला और महाविद्वान् होता है ॥ ३ ॥

रिक्तातिथौ वित्तहीनः प्रमादी गुरुनिन्दकः ।
शास्त्रमतिहंता च कामुकश्च नरो भवेत् ॥ ४ ॥

रिक्तातिथि में जन्मे तो धनहीन, प्रमादी, गुरुनिंदक, शास्त्रों की बुद्धि को नष्ट करनेवाला और कामी बन हो ॥ ४ ॥

पूर्णातिथौ धनैः पूर्णो वेदशास्त्रार्थतत्त्ववित् ।
सत्यवादी शुद्धचेता जातो भवति मानवः ॥ ५ ॥

पूर्णा तिथि को जन्मे तो धन से परिपूर्ण, वेद शास्त्र के तत्त्व को जाननेवाला, सत्यवादी और शुद्ध चित्तवाला होता है ॥ ५ ॥

अथ जन्मनक्षत्रफलम् ।

सुरूपः सुभगो दक्षः स्थूलकायो महाधनी ।
अश्विनीसम्भवो लोके जायते जनवल्लभः ॥ १ ॥

अश्विनी नक्षत्र में जन्मनेवाला नर सुरूप, सुभोगी, स्थूल शरीरवाला, महाधनी और सब लोगों का प्रिय हो ॥ १ ॥

अरोगी सत्यवादी च सप्राणश्च दृढव्रतः ।
भरण्यां जायते लोके स सुखी मतिमानपि ॥ २ ॥

भरणी नक्षत्र में जन्मनेवाला नर रोगरहित, सत्यवादी, प्राणोंसहित दृढ नियमवाला, सुखी और बुद्धिमान् होता है ॥ २ ॥

कृपणः पापकर्मा च क्षुधालुर्नित्यपीडितः ।
अकर्म कुरुते नित्यं कृत्तिकासंभवो नरः ॥ ३ ॥

कृत्तिका में जन्मनेवाला नर कृपण, पापी, भुक्खड, नित्य पीड़ित, और बुरे काम करनेवाला होता है ॥ ३ ॥

धनी कृतज्ञो मेधावी नृपमान्यः प्रियंवदः ।
सत्यवादी सुरूपश्च रोहिणीजो मनेश्वरः ॥ ४ ॥

रोहिणी नक्षत्र में जन्मनेवाला नर धनी, कृतज्ञ, मेधावी, राजा से मान्य, प्रिय बोलनेवाला, सत्यवादी और सुरूपवान् होता है ॥ ४ ॥

चपलश्चतुरो धीरः क्रूरकर्माप्यकर्मकृत् ।
अहंकारी परद्वेषी मृगे भवति मानवः ॥ ५ ॥

मृगशिरा में जन्मनेवाला चपल, चतुर, धीर, क्रूर, बुरे काम करनेवाला, अहंकारी और द्वेषी होता है ॥ ५ ॥

कृतघ्नो गर्वितो हीनो नरः पापरतः शठः ।
आर्द्रानक्षत्रसंजातो धनधान्यविवर्जितः ॥ ६ ॥

आर्द्रा में जन्मनेवाला कृतघ्न, अभिमानी, हीन, पापरत, मूर्ख और धन-धान्य रहित होता है ॥ ६ ॥

शान्तः सुखी च भोगी च सुभगो जनवल्लभः ।
पुत्रमित्रादिभिर्युक्तो जायते च पुनर्वसौ ॥ ७ ॥

पुनर्वसु मे जन्मनेवाला शान्त, सुखी, भोगी, ऐश्वर्यवान्, जनों का प्रिय और पुत्र-मित्रादिकों से युक्त होता है ॥ ७ ॥

देवधर्मरतो नित्यं बुद्धियुक्तो धनप्रियः ।
पुष्यक्षे जायते लोके शांतात्मा सुभगः सुखी ॥ ८ ॥

पुष्य नक्षत्र में जन्मनेवाला नर देवकर्म में नित्य तत्पर, बुद्धियुक्त, धनप्रिय, शान्त चित्तवाला, सुन्दर, ऐश्वर्यवान और सुखी होता है ॥ ८ ॥

सर्वभक्षः कृतांतश्च कृतघ्नो वञ्चकः खलः ।
आश्लेषायां नरो जातो भ्रष्टकर्मा च जायते ॥ ९ ॥

आश्लेषा नक्षत्र में जन्मनेवाला सब कुछ खानेवाला, कृतान्त (दुष्ट स्वभाव-वाला) कृतघ्न, ठग, दुष्ट और भ्रष्ट कर्म करनेवाला होता है ॥ ९ ॥

कल्याणं प्रथमे पादे द्वितीये च धनक्षयः ।
मातुः पीडा तृतीये च पितुः सार्पे चतुर्थके ॥ १० ॥

आश्लेषा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मे तो कल्याण, द्वितीय में हो तो धन की हानि, तृतीय चरण में हो तो माता को पीड़ा दे और चौथे चरण में जन्मे तो पिता को नष्ट करे ॥ १० ॥

बहुभृत्यो धनी भोगी पितृभक्तो महोद्यमी ।
चमूनाथो राजसेवी मघायां जायते नरः ॥ ११ ॥

मघा नक्षत्र में जन्मे तो बहुत भृत्योंवाला, धनी, भोगी पिता का भक्त, महा उद्यमी, सेनापति और राजसेवी हो ॥ ११ ॥

विद्यागोधनसंयुक्तो गम्भीरः प्रमदाप्रियः ।
पूर्वाफाल्गुनिजातस्तु सुखी पंडितपूजितः ॥ १२ ॥

पूर्वाफाल्गुनी में जन्मे तो विद्या और गौ सम्बन्धी धन से युक्त, गंभीर, स्त्रियों का प्रिय, सुखी तथा पंडित जनों से पूजित हो ॥ १२ ॥

दाता शूरो मृदुर्वक्ता धनुर्वेदार्थपण्डितः ।
उत्तराफाल्गुनीजातो महायोद्धा जनप्रियः ॥ १३ ॥

उत्तराफाल्गुनी में जन्मे तो दाता, शूरवीर, सरल, उत्तम बोलनेवाला, धनुष विद्या में निपुण, महायोद्धा और सब जनों का प्रिय हो ॥ १३ ॥

असत्यवचनो दुष्टः सुरापो बन्धुवर्जितः ।
हस्ते जातो भवेच्चोरो जायते परदारकः ॥ १४ ॥

हस्त नक्षत्र में जन्मनेवाला असत्यवादी, दुष्ट, मदिरा पीनेवाला, बंधुहीन, चोर और पराई स्त्री से रमण करनेवाला होता है ॥ १४ ॥

पुत्रदारयुतस्तुष्टो धनधान्यसमन्विताः ।
देवब्राह्मणभक्तश्च चित्राणां जायते नरः ॥ १५ ॥

चित्रा में जन्मनेवाला पुत्र स्त्री से संयुक्त, प्रसन्न, धन-धान्य से युक्त, देवता और ब्राह्मणों का भक्त होता है ॥ १५ ॥

कोविदो धार्मिकोऽल्पार्थः कृपणः प्रियवल्लभः ।
सुखी स्वदेवभक्तश्च स्वातीजातो भवेन्नरः ॥ १६ ॥

स्वाती नक्षत्र में जन्मनेवाला नर पंडित, धार्मिक स्वल्प धनवाला, कृपण, स्त्रियों का प्रिय, सुखी और अपने इष्टदेव का भक्त होता है ॥ १६ ॥

अतिलुब्धोऽतिपापी च निष्ठुरः कलहप्रियः ।
विशाखायां नरो जातो वेश्याजनरतो भवेत् ॥ १७ ॥

विशाखा नक्षत्र में जन्मनेवाला नर अतिलोभी, पापी, कठोर, कलह करने-वाला और वेश्या से रमण करनेवाला होता है ॥ १७ ॥

पुरुषार्थी प्रवासी च बन्धुकार्ये सदोद्यमी ।
अनुराधाभवो लोकः सदा हृष्टश्च जायते ॥ १८ ॥

पुरुषार्थी, परदेश में रहनेवाला, भाइयों के काम में सदा उद्यमी, सदा प्रसन्न, ऐसा नर अनुराधा नक्षत्र में जन्मनेवाला होता है ॥ १८ ॥

बहुमित्रः प्रधानश्च विद्यार्थी च विचक्षणः ।
ज्येष्ठाजातो धर्मरतो जायते शूद्रपूजितः ॥ १९ ॥

बहुत मित्रोंवाला, मुख्यजन, विद्या का प्रयोजनवाला, पंडित धर्म में तत्पर और शूद्रजनों से पूजित, ऐसा नर ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्मनेवाला होता है ॥ १९ ॥

स्थिरभोगी च मानी च धनवांश्च सुखी भवेत् ।
तृतीयपादे तुर्ये च मूलाद्येऽर्धे परित्यजेत् ॥ २० ॥

स्थिर भोगी, मानी, धनवान्, सुखी ऐसा नर मूल नक्षत्र के तीसरे चरण में या चौथे चरण में जन्मनेवाला होता है। मूल के पूर्वार्द्ध में उत्पन्न बालक को त्याग देना चाहिए ॥ २० ॥

आद्यपादे पितुः पीडा मूले मातुर्द्वितीयके।
तृतीये धनहानिश्च चतुर्थे सर्वदा सुखम् ॥ २१ ॥

मूल के प्रथम चरण में जन्मे तो पिता को पीड़ा हो, दूसरे में जन्मे तो माता को पीड़ा हो, तीसरे में जन्मे तो धन की हानि हो और चौथे में सब प्रकार का सुख हो ॥ २१ ॥

दृष्टमात्रोपकारी च भाग्यवांश्च जनप्रियः।
पूर्वाषाढे नरा जातः सकलार्थं विचक्षणः ॥ २२ ॥

पूर्वाषाढ़ा में जन्मनेवाला नर देखने मात्र से उपकार करनेवाला, भाग्यवान्, सब जनो का प्रिय और सब काम में चतुर हो ॥ २२ ॥

बहुमित्रो महाकायो धार्मिको विनयी सुखी।
उत्तराषाढसंभूतः शूरश्च विजयी रणे ॥ २३ ॥

उत्तराषाढ़ा में जन्मनेवाला नर बहुत मित्रोंवाला, विशाल शरीरवाला धार्मिक, विनयी, सुखी, शूरवीर और रण में विजयी होवे ॥ २३ ॥

कृतज्ञो विनयी दाता सदा रोगविवर्जितः।
श्रीमांश्च बहुसंतानः श्रवणे जायते नरः ॥ २४ ॥

श्रवण में जन्मनेवाला कृतज्ञ, विनयी, दानी, सदा रोग से वर्जित, लक्ष्मीवान् और बहुत सन्तानवाला होता है ॥ २४ ॥

गीतप्रियो बन्धुमान्यो हेमरत्नैरलंकृतः।
धनिष्ठायां नरा जातश्चैकः शतपतिर्भवेत् ॥ २५ ॥

धनिष्ठा में जन्मनेवाला गीतों का प्रिय, बंधुजनों से मान्य, सुवर्ण रत्नों से विभूषित तथा अकेला ही सैकड़ों का पति होवे ॥ २५ ॥

कृपणो धनपूर्णश्च परदारोपसेवकः।
मानवः शततारायां विदेशगमने रतः ॥ २६ ॥

शतभिषा में जन्मनेवाला नर कृपण, धन से पूर्ण, पराई स्त्री से रमण करने और विदेश में गमन करनेवाला होता है ॥ २६ ॥

वक्ता सुखी प्रजायुक्तो बहुनिद्रो निरर्थकः।
पूर्वाभाद्रपदाजातो नरो भवति दुःखितः ॥ २७ ॥

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में जन्मनेवाला नर अच्छे प्रकार से बातें करनेवाला, सुखी, संतान से युक्त, बहुत नींदवाला, निरर्थक रहनेवाला और दुःखित होता है ॥ २७ ॥

गौरः समस्तधर्मज्ञः शत्रुघाती च पामरः।
उत्तराभाद्रनक्षत्रजातः साहसिको भवेत् ॥ २८ ॥

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में जन्मनेवाला गौरवर्ण, सब धर्म को जाननेवाला, शत्रु-नाशक, तुच्छ और हठ करनेवाला होता है ॥ २८ ॥

सम्पूर्णाङ्गः शुचिर्दक्षः साधुः शूरो विचक्षणः।
रेवतीसम्भवो लोके धनधान्यैरलंकृतः ॥ २९ ॥

रेवती नक्षत्र में जन्मनेवाला नर संपूर्ण (उत्तम) अंगोंवाला, पवित्र, चतुर, साधुजन, शूरवीर, पंडित तथा धन-धान्य से विभूषित होता है ॥ २९ ॥

निर्वेधे सौम्यसंयुक्ते नक्षत्रे शोभनं फलम्।
विपरीतफलं तस्मै सवेधे क्रूरपीडिते ॥ ३० ॥

वेधरहित अथवा शुभग्रह संयुक्त नक्षत्र में जन्मे तो शुभ फल हो, जो वेधसहित और क्रूर ग्रह से पीड़ित नक्षत्र हो तो विपरीत (अशुभ) फल होता है ॥ ३० ॥

अथ योगफलम्।

विष्कुंभजातो मनुजो रूपवान्गुणवान्भवेत्।
नानालंकारसंपूर्णो महाबुद्धिविशारदः ॥ १ ॥

विष्कुम्भ योग में जन्मनेवाला मनुष्य रूपवान, गुणवान्, अनेक प्रकार के आभूषणों से युक्त और महाबुद्धिमान् पंडित होता है ॥ १ ॥

प्रीतियोगे समुत्पन्नो योषितां वल्लभो भवेत् ।
तत्त्वज्ञश्च महोत्साही स्वार्थी नित्यं कृतोद्यमः ॥ २ ॥

प्रीतियोग में जन्मे तो स्त्रियों का प्रिय, तत्त्वज्ञ, महाउत्साही और नित्यप्रति स्वार्थ में उद्यत करनेवाला हो ॥ २ ॥

आयुष्मान्नाम्नि योगे च जातो मानी धनी कविः ।
दीर्घायुः सत्त्वसंपन्नो युद्धे चाप्यपराजितः ॥ ३ ॥

आयुष्मान् योग में जन्मे तो वह मानी, धनी, कवि, दीर्घ आयुवाला, पराक्रमी और युद्ध में शूरवीर होता है ॥ ३ ॥

सौभाग्ये यः समुत्पन्नो राजमन्त्री च जायते ।
निपुणः सर्वकार्येषु वनितानां च वल्लभः ॥ ४ ॥

सौभाग्य योग में जन्मनेवाला राजा का मंत्री, सब कार्यों में निपुण और स्त्रियों का प्रिय होता है ॥ ४ ॥

शोभने शोभनो बालो बहुपुत्रकलत्रवान् ।
आतुरः सर्वकार्येषु युद्धभूमौ सदोत्सुकः ॥ ५ ॥

शोभन योग में जन्मनेवाला बालक सुन्दर, बहुत पुत्र तथा स्त्री से युक्त, सब कामों में आतुर और युद्धभूमि में उत्साहवाला हो ॥ ५ ॥

अतिगण्डे च यो जातो मातृहंता भवेच्च सः ।
गण्डान्तेषु च जातस्तु कुलहंता प्रकीर्तितः ॥ ६ ॥

अतिगंड योग में जन्मनेवाला अपनी माता को नष्ट करे और जो इस अतिगंड योग के अन्त की (घटियों) में जन्मे तो सम्पूर्ण कुल नष्ट करे ॥ ६ ॥

सुकर्मणि च यो जातः सुकर्मा जायते नरः ।
सर्वैः प्रीतः सुशीलश्च रागी भोगी गुणाधिकः ॥ ७ ॥

सुकर्मा योग में जन्मनेवाला, नर सुन्दर कर्म करे, सबसे प्रसन्न रहे, सुन्दर स्वभाववाला, रोगी, भोगी और अधिक गुणवाला हो ॥ ७ ॥

धृतियोगे च धृतिमान्कीर्तिपुष्टिधनान्वितः ।
भाग्यवान्गुणसंपन्नो विद्यावान् रूपवान्भवेत् ॥ ८ ॥

धृत योग में जन्मनेवाला धृतिमान, कीर्ति पुष्टि और धन से युक्त, भाग्यवान्, गुण संपन्न, विद्यावान् और रूपवान् होता है ॥ ८ ॥

शूले शूलव्यथायुक्तो धार्मिकः शास्त्रपारगः ।
विद्यार्थकुशलो यज्वा जायते मनुजः सदा ॥ ९ ॥

शूल योग में जन्मे तो शूल रोग की पीड़ा से युक्त, धार्मिक, शास्त्र के पार को जाननेवाला, विद्या के प्रयोजन में निपुण और सदा यज्ञ करनेवाला होता है ॥ ९ ॥

गण्डे गण्डव्यथायुक्तो बहुक्लेशो महाशिरः ।
ह्रस्वकायो महास्थूलो बहुभोगी दृढव्रतः ॥ १० ॥

गण्ड योग में जन्मे तो गण्डमाला रोग की पीड़ा से युक्त, बहुत क्लेशवाला, बड़ा शिरवाला, छोटा शरीरवाला, महास्थूल, बहुत भोगी और दृढ़व्रत होता है ॥ १० ॥

वृद्धियोगे च दीर्घायुः सर्वेषां प्रियदर्शनः ।
सुरूपो बहुपुत्रश्च कलावान्सुकलत्रवान् ॥ ११ ॥

वृद्धि योग में जन्मे तो वह दीर्घ आयुवाला, सबको प्रिय दर्शन, सुरूपवान्, बहुत पुत्रोंवाला, कलावान् और सुन्दर स्त्रीवाला होता है ॥ ११ ॥

ध्रुवयोगेऽतिशक्तश्च स्थिरकर्मा सदा नरः ।
धनवानतिभोक्ता च सत्त्ववानपि जायते ॥ १२ ॥

ध्रुव योग में जन्मे तो वह अत्यन्त समर्थ, स्थिर कर्म करनेवाला, धनवान्, अत्यन्त भोगी और पराक्रमी होता है ॥ १२ ॥

व्याघातयोगे जातस्तु सर्वज्ञः सर्वपूजितः ।
सर्वकर्मकरो लोके विख्यातः सर्वकर्मसु ॥ १३ ॥

व्याघात योग में जन्मे तो वह नर सर्वज्ञ, सर्व पूजित, लोक में सब काम करनेवाला और सब कामों में प्रसिद्ध हो ॥ १३ ॥

हर्षणे जायते लोके महाभोगी नृपप्रियः ।
हृष्टः सदा धनैर्युक्तो वेदशास्त्रविशारदः ॥ १४ ॥

हर्षण योग में जन्मे तो लोक में महाभोगी, राजा का प्रिय, हृष्ट, सदा धन-युक्त और वेद-शास्त्र को जाननेवाला होता है ॥ १४ ॥

वज्रयोगे वज्रमुष्टिः सर्वविद्यासु पारगः ।
धनधान्यसमायुक्तो मनुजो वज्रविक्रमः ॥ १५ ॥

वज्र योग में जन्मे तो वज्र के समान मुष्टिवाला, सब विद्याओं को जाननेवाला, धन-धान्य से युक्त और वज्र के समान पराक्रमी हो ॥ १५ ॥

सिद्धियोगे समुत्पन्नः सर्वसिद्धियुतो भवेत् ।
दाता भोक्ता सुखी कान्तः शोकी रोगी च मानवः ॥ १६ ॥

सिद्धि योग में जन्मे तो वह सब कामों की सिद्धिवाला, दाता, भोक्ता सुखी, रूपवान्, शोकी और रोगी होता है ॥ १६ ॥

व्यतीपाते च संजातो महाकष्टेन जीवति ।
जीवेच्चेद्भाग्ययोगेन स भवेदुत्तमो नृणाम् ॥ १७ ॥

व्यतीपात में जन्मे तो वह महाकष्ट से जीवे । जो भाग्य के योग से जीवे भी तो मनुष्यों में श्रेष्ठ हो ॥ १७ ॥

योगे वरीयसि मर्त्यो वरिष्ठो जायते नरः ।
शिल्पकाव्यकलाभिज्ञो गीतनृत्यादिकोविदः ॥ १८ ॥

वरियान् योग में जन्मे तो वह अत्यंत श्रेष्ठ, शिल्प आदि कला और गीत नृत्य आदि को जाननेवाला हो ॥ १८ ॥

परिघे च नरो जातः स्वकुलोन्नतिकारकः ।
शास्त्रविज्ञः कविर्वाग्मी दाता भोक्ता प्रियंवदः ॥ १९ ॥

परिघ योग में जन्मनेवाला नर अपने कुल की उन्नति करे और शास्त्र को जाननेवाला, कवि, सुन्दर वाणीवाला, दाता, भोगी और प्रिय बोलनेवाला हो ॥ १९ ॥

शिवयोगे नरो जातः सर्वकल्याणकारकः ।
महादेवसमो लोके महाबुद्धिर्वरप्रदः ॥ २० ॥

शिव योग में जन्मे तो वह नर सब का कल्याण करनेवाला, लोक में महादेव के समान, महा बुद्धिवाला और वरदानी होता है ॥ २० ॥

सिद्धियोगे सिद्धिदाता मन्त्रसिद्धिप्रवर्तकः ।
दिव्यनारीसमेतश्च सर्वसम्पद्यतो भवेत् ॥ २१ ॥

सिद्धि योग में सिद्धिदाता, मन्त्रसिद्ध का प्रवर्तक, दिव्य, स्त्री से युक्त और संपूर्ण संपत्ति से युक्त होता है ॥ २१ ॥

साध्ये मानसिकासिद्धिर्यत्नोऽशेषः सुखागमः ।
दीर्घसूत्रः प्रसिद्धिश्च जायते सर्वसम्मतः ॥ २२ ॥

साध्य योग में जन्मा मन में कार्य सिद्धिवाला, यत्नवाला, सुखी, दीर्घसूत्री (देरी में काम करनेवाला), विख्यात और सबका मान्य होता है ॥ २२ ॥

शुभे शुभशतैर्युक्तो धनवानपि जायते ।
विज्ञानशास्त्रसम्पन्नो दाता ब्राह्मणपूजकः ॥ २३ ॥

शुभ योग में सैकड़ों शुभ कर्मोंमें युक्त, धनवान्, विज्ञान शास्त्र से सम्पन्न, दाता और ब्राह्मणों का पूजक होता है ॥ २३ ॥

शुक्ले सर्वकलायुक्तः सर्वार्थज्ञानवान्भवेत् ।
क्वचित्प्रतापी शूरश्च धनी सर्वजनप्रियः ॥ २४ ॥

शुक्ल योग में जन्मे तो वह कलाओं से युक्त, सब प्रयोजन के ज्ञानवाला, प्रतापी, शूरवीर, धनी और सब जनों का प्रिय हो ॥ २४ ॥

ब्रह्मयोगे महाविद्वान्विदशास्त्रपरायणः ।
ब्रह्मज्ञानरतो नित्यं सर्वकार्येषु कोविदः ॥ २५ ॥

ब्रह्म योग में जन्मा महाविद्वान्, वेदशास्त्र का जाननेवाला, हमेशा ब्रह्मज्ञान में रत और सब कामों में चतुर होता है ॥ २५ ॥

ऐन्द्रे भूपकुले जातो राजा भवति विश्रुतः ।
अल्पायुश्च सुखी भोगी गुणवानपि जायते ॥ २६ ॥

ऐन्द्र योग में जन्मनेवाला नर राजा के कुल में विख्यात राजा, अल्प आयुवाला, सुखी, भोगी और गुणवान् होता है ॥ २६ ॥

वैधृतौ जायते मर्त्यो निरुत्साहो बुभुक्षितः ।
कुर्वाणोऽपि जनैः प्रीतिं प्रयात्यप्रियतां नरः ॥ २७ ॥

वैधृति योग में जन्मे जो वह नर उत्साहरहित, बुभुक्षित (कंगाल) और प्रीति करता हुआ भी निरादृत होवे ॥ २७ ॥

अथ करणफलम् ।

बवाख्ये करणे जातो मानी धर्मरतः सदा ।
शुभमंगलकर्मा च स्थिरकर्मा च जायते ॥ १ ॥

बव करण में जन्मनेवाला मानी, सदा धर्मरत, शुभकर्म करनेवाला और स्थिर कर्मवाला होगा ॥ १ ॥

बालवे करणे जातो देवतीर्थादिसेवकः ।
विद्यावान्सौख्यसम्पन्नो राजमान्यश्च जायते ॥ २ ॥

बालव करण में जन्मनेवाला देवता, तीर्थादिकोंकी सेवा करनेवाला, विद्यावान् सुख से युक्त और राजा से मान्य हो ॥ २ ॥

कौलवे च नरो जातः प्रीतिः सर्वजनैः सह ।
संगतिर्मित्रवर्गैश्च मानवैश्चापि मित्रता ॥ ३ ॥

कौलव करण में जन्मनेवाला नर सब जनों के संग प्रीति रखे, मित्रजनों की संगति और सब मनुष्यों से मित्रता करे ॥ ३ ॥

तैतिले करणे जातः सौभाग्यगुणसंयुतः ।
स्नेहः सर्वजनैः सार्द्धं विचित्राणि गृहाणि ॥ ४ ॥

तैतिल करण में जन्मे तो सौभाग्य गुण से युक्त, सब जनों के साथ स्नेह रखनेवाला और विचित्र घरों की प्राप्ति करनेवाला हो ॥ ४ ॥

गराख्ये कृषिकर्मा च गृहकार्यपरायणः ।
यद्वस्तु कांक्षितं तच्च लभ्यतेऽत्र महोद्यमैः ॥ ५ ॥

गर करण में जन्मे तो वह खेती करनेवाला तथा घर के काम में निपुण हो और वह जिस वस्तु की अभिलाषा करे उसी को अपने उद्यम करने से प्राप्त कर ले ॥ ५ ॥

वणिजे करणे जातो वाणिज्येनैव जीवति ।
वांछितं लभते लोके देशान्तरगमागमैः ॥ ६ ॥

वणिज करण में जन्मे तो वणिज की आजीविका करे और देशान्तर में गमन करके अपने मनचाहे काम को सिद्ध करे ॥ ६ ॥

विष्ट्याख्ये करणे जातो ह्यशुभारंभशीलवान् ।
कुशलो विषकार्येषु परघातरतः सदा ॥ ७ ॥

विष्टि योग में जन्मे तो वह अशुभ कार्य का आरम्भ करे, विष के कामों में निपुण हो और सदा पराघात करने में रत रहे ॥ ७ ॥

शकुनौ जन्म यस्याभूत्पौष्टिकादिक्रियाकृती ।
औषधादिषु दक्षश्च भिषग्वृत्तिश्च जायते ॥ ८ ॥

जो शकुनि करण में जन्मे तो वह पुष्टिकारक क्रिया करनेवाला, औषधि आदिकों में चतुर और वैद्य की आजीविका करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

करणे च चतुष्पादे देवद्विजरतः सदा ।
गोकर्मा गोप्रभुर्लोके चतुष्पादचिकित्सकः ॥ ९ ॥

चतुष्पद करण में जन्मे तो वह सदा देवता ब्राह्मणों में भक्ति रक्खे, संसार में गौओं का काम गौओं का स्वामी तथा चौपायों का इलाज करनेवाला हो ॥ ९ ॥

नागाख्ये करणे जातः स्थावरप्रीतिकारकः ।
कुरुते दारुणं कर्म दुर्भगो लोललोचनः ॥ १० ॥

नाग करण में जन्मे तो वह स्थावर (वृक्ष आदि) से प्रीति रक्खे, दारुण काम करे, अभागा तथा चंचल नेत्रोंवाला हो ॥ १० ॥

किंस्तुघ्ने करणे जातः शुभकर्मरतो नरः ।
तुष्टिं पुष्टिं च मांगल्यं सिद्धिं च लभते सदा ॥ ११ ॥

किंस्तुघ्न करण में जन्मे तो वह सदा शुभ कर्म में लगा रहे और तुष्टि, पुष्टि, मांगल्य इत्यादि सिद्धियों को प्राप्त करे ॥ ११ ॥

अथ मेषादिराशिफलम् ।

लोलनेत्रः सदा रोगी धर्मार्थकृतनिश्चयः ।
पृथुजङ्घः कृतघ्नश्च विक्रान्तो राजपूजितः ॥ १ ॥
कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि ।
चण्डकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः ॥ २ ॥

जिसका जन्म मेष राशि के चन्द्रमा में हो तो वह चंचल नेत्रवाला, सदा रोगी, धर्म और अर्थ (धन) का निश्चय करनेवाला, स्थूल जाँघवाला, किये हुए कार्य को जाननेवाला और बलवान् तथा राजाओं से पूजित एवं कामिनी के हृदय को आनन्द देनेवाला, दाता, जल से भय रखनेवाला, घोर कर्म करनेवाला और अन्त में कोमल होवे ॥ १–२ ॥

भोगी दाता शुचिर्दक्षो महागर्वो महाबलः ।
धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत् ॥ ३ ॥

जिसका वृष राशि के चन्द्रमा में जन्म हो वह मनुष्य भोगी, दाता, पवित्र, दक्ष, महाभिमानी, महाबलवान्, धनी, विलासी, तेजस्वी और अच्छे मित्रवाला होवे ॥ ३ ॥

मिष्टवाक्यो लोलदृष्टिर्दयालुर्मैथुनप्रियः ।
गान्धर्ववित् कण्ठरोगी कीर्तिभागी धनी गुणी ॥ ४ ॥
गौरो दीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढव्रतः ।
समर्थो ह्यतिवादी च जायते मिथुने नरः ॥ ५ ॥

जिसका मिथुन राशि के चन्द्रमा में जन्म हो. वह मीठी वाणी बोलनेवाला, चंचल दृष्टिवाला, दयालु, मैथुनप्रिय, गानेवाला, कण्ठरोगी, यश का भागी, धनी, गुणी, गौर वर्ण (रंग) वाला, लंबा, पटु, वाचाल, बुद्धिमान् सत्य प्रतिज्ञावाला, समर्थ और बहुत विवाद करनेवाला होता है। ४–५ ॥

कार्यकारी धनी शूरो धर्मिष्ठो गुरुवत्सलः ।
शिरोरोगी महाबुद्धि कृशाङ्ग कृतवित्तमः ॥ ६ ॥
प्रवासशीलः कोपान्धो बाल्ये दुःखी सुमित्रकः ।
अनासक्तो गृहे वक्ता कर्कराशौ भवेन्नरः ॥ ७ ॥

जिसका कर्क राशि के चन्द्रमा में जन्म हो वह कार्य करनेवाला, धनी, पराक्रमी, धर्मिष्ठ, गुरुप्रिय, शिर का रोगी, महाबुद्धिमान्, दुर्बल शरीरवाला, अच्छा जाननेवाला, परदेशी, क्रोध से अधा, बाल्य अवस्था में दुःखी, अच्छे मित्रवाला, घर में अनासक्त और बहुत बोलनेवाला होवे ॥ ६–७ ॥

क्षमायुक्तस्तपायुक्तो मद्यमांसरतः सदा ।
देशभ्रमणशीलश्च शीतभीतः सुमित्रकः ॥ ८ ॥
विनयी शीघ्रकोपश्च जननीजनवल्लभः ।
व्यसनी प्रकटो लोके सिंहे राशौ नरो भवेत् ॥ ९ ॥

जिसका सिंह राशि के चन्द्रमा में जन्म हो वह मनुष्य क्षमायुक्त, लज्जा-युक्त, सदा मद्य-मांस में प्रीति रखनेवाला, देश में भ्रमण करनेवाला, जाड़े से भय रखनेवाला, सुन्दर मित्रवाला, विनयी, शीघ्र कोप करनेवाला, माता को प्रिय, जनों को प्रिय, व्यसनी और संसार में विख्यात होवे ॥ ८-९ ॥

विलासी सुजनाह्लादी शुभलक्षणपूरितः ।
दाता दक्षः कविर्वृद्धो वेदमार्गपरायणः ॥ १० ॥
सर्वलोकप्रियो नाट्यगान्धर्वव्यसने रतः ।
प्रवासशीलः स्त्रीदुःखी कन्याजातो भवेन्नरः ॥ ११ ॥

जिसका कन्या राशि के चन्द्रमा में जन्म हो वह विलासी, सुजनों को प्रसन्न करनेवाला, सुन्दर लक्षणों से युक्त, दाता, दक्ष, कवि, वृद्ध, वेदमार्ग परायण, सब लोगों का प्रिय, नाच-गान में रत (प्रीति करनेवाला), परदेश में प्रेम करनेवाला और स्त्री से दुःखी होवे ॥ १०-११ ॥

स्वस्थानरोषणो दुःखी पटुभाषी कृपान्वितः ।
चञ्चलाक्षः सलक्ष्मीको गृहमध्येऽतिविक्रमी ॥ १२ ॥
वाणिज्यदक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः ।
प्रवासी सुहृदामिष्टस्तुले जातो भवेन्नरः ॥ १३ ॥

जिस मनुष्य का तुला राशि के चन्द्रमा में जन्म हो वह घर में क्रोधी, दुःखी, बात करने में चतुर, कृपालु, चंचल नेत्रवाला, लक्ष्मीवान्, घर में विशेष बली, व्यापारमें निपुण, देवपूजक, मित्र को माननेवाला, परदेशी और मित्रों का अत्यन्त प्रिय होवे ॥ १२-१३ ॥

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिङ्गललोचनः ।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने जने ॥ १४ ॥
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्टधीः ।
धूर्तश्चौरः कलारम्भी वृश्चिके जायते नरः ॥ १५ ॥

जिसका जन्म वृश्चिक राशि के चन्द्रमा में हो, वह मनुष्य बाल्य अवस्था में परदेशी, क्रूर प्रकृतिवाला, पराक्रमी, पीले नेत्रवाला, पराई स्त्रियों से आसक्त, मानी अपने जनों में निठुर, साहस से लक्ष्मी प्राप्त करनेवाला, माता में भी दुष्ट मतिवाला, धूर्त, चोर, और कलाओं का आरम्भ करनेवाला होवे ॥१४-१५॥

शूरः समधिया युक्तः सात्त्विको जननन्दनः ।
शिल्पविज्ञानसम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः ॥ १६ ॥
मानी चरित्रसम्पन्नो ललिताक्षरभाषकः ।
तेजस्वी स्थूलदेहश्च धनुर्जातः कुलान्तकः ॥ १७ ॥

जिसका जन्म धनु राशि के चन्द्रमा में हो वह मनुष्य पराक्रमी, सम बुद्धिवाला, सात्त्विक, मनुष्यों को सुख देनेवाला, कारीगरी को जाननेवाला, धन से युक्त, मन हरनेवाला, सुन्दर अक्षरों का कहनेवाला, वक्ता, तेजस्वी, मोटे शरीरवाला और कुल का नाश करनेवाला होवे ॥ १७ ॥

कुले नेष्टो वशः स्त्रीणां पण्डितः पारिवारिकः ।
गीतज्ञो लालसी गुह्यः पुत्राढ्यो मातृवत्सलः ॥ १८ ॥
धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः ।
परिचिन्तितसौख्यश्च मकरे जायते नरः ॥ १९ ॥

जिसका मकर राशि में जन्म हो वह अपने कुल में श्रेष्ठ, स्त्रियों के वश में रहनेवाला, पण्डित, परिवारवाला, गाने में चतुर, लालसी, गुप्त पुत्रों से युक्त, माता का प्यारा, धनी, दानी, सुन्दर, सेवकवाला, दयालु, बहुत भाइयोंवाला और सुख की चिन्ता करनेवाला होवे ॥ १८-१९ ॥

दाताऽलसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनेश्वरः ।
शुभदृष्टिः सदा सौम्यो मानविद्याकृतोद्यमः ॥ २० ॥
पुण्याढ्यः स्नेहहीनश्च धनी भोगी स्वशक्तितः ।
शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः ॥ २१ ॥

जिस मनुष्य का कुम्भ राशि में जन्म हो वह दानी, आलसी, कृतज्ञ, हाथी-घोड़ा और धन का मालिक, शुभ दृष्टिवाला, सदा सुन्दर स्वभाववाला अभिमानी, विद्या में उद्यम करनेवाला, पुण्य से युक्त, प्रेम से रहित, धनी, अपनी शक्ति के अनुसार भोगी, शार्दूल पक्षी के समान कुक्षिवाला और भयरहित होता है ॥ २१-२२ ॥

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुर्वाग्मी नरोत्तमः ।
कोपनः कृपणो ज्ञानी कुलश्रेष्ठः कुलप्रियः ॥ २२ ॥
नित्यसेवी शीघ्रकामी गान्धर्वकुशलः शुभः ।
मीनराशौ समुत्पन्नो जायते बन्धुवत्सलः ॥ २३ ॥

जिस मनुष्य का मीन राशि में जन्म हो वह गम्भीर चेष्टावाला, वीर, प्रवीण, मीठी वाणी बोलनेवाला मनुष्यों में श्रेष्ठ, क्रोधी, कृपण, ज्ञानी, कुल में श्रेष्ठ, कुलप्रिय, सदा सेवा करनेवाला, जल्दी चलनेवाला, गाने में निपुण, अच्छे स्वभाववाला और अपने बन्धुजनों का प्रिय होवे ॥ २२-२३ ॥

अथ संक्षेपेण मेषादिराशिफलम् ।

मेषे दीनो वृषे मानी पटुबुद्धिश्च मन्मथे ।
क्रूरः कर्के धृतिः सिंहे कन्यायां बहुमायिता ॥ १ ॥
जूके स्त्रीत्वमलौ मानी चापे पापाशयो नरः ।
मुखरो मकरे कुम्भे चतुरः स्थिरधीर्झषे ॥ २ ॥

जिसका मेष राशि में जन्म हो वह दीन, वृष में अभिमानी, मिथुन में पटु बुद्धिवाला, कर्क में क्रूर, सिंह में धैर्यवाला, कन्या में बहुत माया करनेवाला, तुला में स्त्रियों के समान प्रकृतिवाला, वृश्चिक में मानी, धनु में पापी, मकर में मुखर (अग्रसर) कुम्भ में चतुर और मीन में स्थिर बुद्धिवाला होवे ॥ १-२ ॥

अथ मेषादिलग्नोत्पन्नफलम् ।

मेषलग्ने समुत्पन्नश्चण्डो मानी सुधीः शुभः ।
क्रोधी च जनहन्ता च विक्रमी परवत्सलः ॥ १ ॥

मेष लग्न में जन्मनेवाला कठोर, अभिमानी, पंडित, क्रोधी, जनहन्ता, पराक्रमी और अन्य जनों में स्नेह करनेवाला होता है ॥ १ ॥

वृषलग्नभवो बालो गुरुभक्तः प्रियम्वदः ।
गुणी कृती धनी लुब्धः शूरः सर्वजनप्रियः ॥ २ ॥

वृष लग्न में जन्मनेवाला बालक गुरु का भक्त, प्रिय बोलनेवाला, गुणी, पंडित, लोभी, शूरवीर और सर्वजन प्रिय होता है ॥ २ ॥

मिथुनादयजातस्तु मानी स्वजनवत्सलः ।
त्यागी भोगी धनी कामी दीर्घसूत्रोऽरिमर्दनः ॥ ३ ॥

मिथुन लग्न में जन्मनेवाला अभिमानी, स्वजन परहित करनेवाला, त्यागी, भोगी, धनी, कामी, दीर्घसूत्री और शत्रुनाशक होता है ॥ ३ ॥

कर्कलग्ने समुत्पन्नो भोगी धर्मी जनप्रियः ।
मिष्टान्नपानभोगी च सौभाग्यः स्वजनप्रियः ॥ ४ ॥

कर्क लग्न में जन्मनेवाला भोगी, धर्मी, सर्वजनप्रिय, मीठा अन्नपान करनेवाला, ऐश्वर्यवान् और स्वजनप्रिय होता है ४ ॥

सिंहलग्नादय जातो भोगी शत्रुविमर्दकः ।
स्वल्पादरोऽल्पपुत्रश्च सोत्साही रणविक्रमः ॥ ५ ॥

सिंह लग्न में जन्मनेवाला भोगी, शत्रुओं को नष्ट करनेवाला, स्वल्प उदरवाला, थोड़े पुत्रोंवाला, उत्साहवाला, और रण में पराक्रमी होता है ॥ ५ ॥

कन्यालग्नभवो बालो नानाशास्त्रविशारदः ।
सौभाग्यगुणसंपन्नो सुन्दरः सुरतप्रियः ॥ ६ ॥

कन्या लग्न में जन्मनेवाला बालक अनेक शास्त्रों को जाननेवाला, सौभाग्य गुण से संपन्न, सुन्दर और मैथुनप्रिय होता है ॥ ६ ॥

तुलालग्नोदये जातः सुधीः सत्कर्मजीवनः ।
विद्वान्सर्वकलाभिज्ञो धनाढ्यो जनपूजितः ॥ ७ ॥

तुला लग्न में जन्मे तो पंडित, श्रेष्ठ काम की आजीविकावाला, विद्वान्, सर्व कलाओं को जाननेवाला, धनाढ्य और अन्य जनों से पूजित हो ॥ ७ ॥

वृश्चिकोदयजो बालः शौर्यवाननिघृष्टधीः ।
विज्ञानज्ञानसंपन्नः सुखी सुविग्रहः सुधीः ॥ ८ ॥

वृश्चिक लग्न में जन्मनेवाला बालक शूरवीर, उद्दण्ड बुद्धिवाला, विज्ञान और ज्ञान से संयुक्त, सुखी, सुन्दर शरीरवाला और पंडित होता है ॥ ८ ॥

धनुर्लग्नोदये जातो नीतिमान्गुणवान्सुधीः ।
कुलमध्ये प्रधानश्च प्राज्ञः सर्वस्य पोषकः ॥ ९ ॥

धनु लग्न में जन्मे तो नीतिमान्, गुणी, पण्डित, कुल के मध्य में प्रधान, बुद्धिमान् और सब जनों का पोषक हो ॥ ९ ॥

मकरोदयजो बालो नीचकर्मा बहुप्रजः ।
लुब्धःस्वस्थोऽलसो दीनः स्वकार्येषु कृतोद्यमः ॥ १० ॥

मकर लग्न में जन्मनेवाला बालक नीच कर्म करे, बहुत संतान हो, लोभी, स्वस्थ, आलसी, दीन और अपने कार्य में उद्यम करनेवाला होता है ॥ १० ॥

कुम्भलग्नोदये जातश्चलचित्तोऽतिसौहृदः ।
परदाररतो नित्यं मृदुकायो महासुखी ॥ ११ ॥

कुम्भ लग्न में जन्मे तो चञ्चल चित्तवाला, अत्यन्त प्रिय, नित्य पराई स्त्री में रत, कोमल शरीरवाला और महासुखी होता है ॥ ११ ॥

मीनलग्नोद्भवो बालो रत्न काञ्चनपूरितः ।
अल्पकामोऽतिरक्तश्च दीर्घकालविचिंतकः ॥ १२ ॥

मीन लग्न में जन्मनेवाला बालक रत्न-सुवर्ण से भरपूर, अल्प कामनावाला, अत्यन्त स्नेही और दीर्घकाल की बात का चिन्तन करनेवाला हो ॥ १२ ॥

अथ जन्मराशिनवमांशफलम् ।

पिशुनश्चपलो दुष्टः पापकर्मा निराकृतिः ।
परेषां व्यसने सक्तश्चौरश्च प्रथमांशके ॥ १ ॥

जन्म-राशि के प्रथम नवांशक में जन्मे तो चुगली करनेवाला, चञ्चल बुद्धिवाला, दुष्ट, पापकर्म करनेवाला, बुरी आकृतिवाला और अन्य जनों के व्यसन में आसक्त तथा चोर हो ॥ १ ॥

उत्पन्नविभवो भोक्ता संग्रामविगतस्पृहः ।
गंधर्वप्रमदासक्तो द्वितीयांशे नरो भवेत् ॥ २ ॥

दूसरे नवांशक में जन्मे तो ऐश्वर्यवान्, भोगी, युद्ध की इच्छा रहित, गायन करनेवाला और स्त्री में आशक्त हो ॥ २ ॥

धर्मिष्ठः सततव्याधिः सर्वसारज्ञ एव च ।
सर्वज्ञो देवताभक्तस्तृतीयांशे च जायते ॥ ३ ॥

तीसरे नवांशक में जन्मनेवाला नर धर्मिष्ठ, निरन्तर व्याधिवाला, सम्पूर्ण सार को जाननेवाला, सर्वज्ञ और देवता का भक्त हो ॥ ३ ॥

चतुर्थांशेऽभिजातस्तु दीक्षितो गुरुभक्तिमान् ।
यत्किंचिद्भूमिगं वस्तु तत्सर्वं लभते च सः ४ ॥

चौथे नवांशक में जन्मे तो वह दीक्षित (यज्ञादिकारक) गुरु की भक्तिवाला और भूमि में गड़े हुए धन को प्राप्त करनेवाला हो ॥ ४ ॥

सर्वलक्षणसंपन्नो राजा भवति विश्रुतः ।
दीर्घायुर्बहुपुत्रश्च जायते पंचमांशके ॥ ५ ॥

पाँचवें नवांशक में जन्मे, तो वह दीर्घ आयुवाला बहुत पुत्रोंवाला सब लक्षणों से सम्पन्न तथा प्रसिद्ध राजा होता है ॥ ५ ॥

स्त्रीनिर्जितः शुभैर्हीनो बहुभाषी नपुंसकः ।
अर्थध्वंसः प्रमादी च षष्ठांशे जायते नरः ॥ ६ ॥

छठें नवांशक में जन्मे तो वह स्त्री के वश में रहनेवाला, शुभ कार्मो से रहित, बहुत बोलनेवाला, नपुंसक, द्रव्य को नष्ट करनेवाला और प्रमादी होता है ॥ ६ ॥

विक्रांतो मतिमाच्छूरः संग्रामेष्वपराजितः ।
महोत्साही च संतोषी जायते सप्तमांशके ॥ ७ ॥

सातवें नवांशक में जन्म लेवे तो वह बलवान्, बुद्धिमान्, शूरवीर, युद्ध में जीतनेवाला, महा उत्साही और सन्तोषी होता है ॥ ७ ॥

कृतघ्नो मत्सरी क्रूरः क्लेशभोक्ता बहुप्रजः ।
फलकालपरित्यागी जायते चाष्टमांशके ॥ ८ ॥

आठवें नवांश में जन्मे तो वह कृतघ्न, ईर्ष्यालु, पापी, क्लेशभोगी, बहुत सन्तानवाला, फल (कार्यसिद्धि के) काल को त्यागनेवाला होता है ॥ ८ ॥

क्रियासु कुशलो दक्षः सुप्रतापी जितेन्द्रियः ।
भृत्यैश्चावेष्टितो नित्यं जायते नवमेंऽशके ॥ ९ ॥

जो जन्म-राशि के नवें नवांशक में उत्पन्न हो तो वह क्रियाओं में कुशल, चतुर, सुन्दर, प्रतापी, जितेन्द्रिय और भृत्यों (नौकरों) वाला हो ॥ ९ ॥

अथ गणफलम् ।

सुन्दरो दानशीलश्च मतिमान्सबलः सदा ।
अल्पभोगी महाप्राज्ञो नरो देवगणोद्भवः ॥ १ ॥

देवगण में उत्पन्न होनेवाला नर सुन्दर, दानी, बुद्धिमान्, सदा बलवान्, अल्प भोगी और महापंडित होता है ॥ १ ॥

मानी धनी विशालाक्षो लक्ष्यवेधी धनुर्धरः ।
गौरः पौरजनाह्लादि नरो मर्त्यगणोद्भवः ॥ २ ॥

मनुष्यगण में उत्पन्न होनेवाला नर मानी, धनी, विशाल नेत्रोंवाला, लक्ष्य (निशाना) बाँधनेवाला, धनुर्धारी, गौरवर्ण और पुरजनों को आनन्द देनेवाला होता है ॥ २ ॥

उन्मादी भीषणाकारः सर्वदा कलिवल्लभः ।
नरो दुःखी सदा जातः प्रमेही राक्षसे गणे ॥ ३ ॥

राक्षसगण में जन्मनेवाला नर उन्मादी, भयंकर, सदा कलह करनेवाला, दुःखी और प्रमेह रोगवाला होता है ॥ ३ ॥

अथ गण्डयोगः—

आदौ मूलमघाश्विन्यां तिस्रः स्युर्गण्डनाडिकाः ।
ज्येष्ठाश्लेषारेवतीनामन्ते पंच च नाडिकाः ॥ १ ॥

मूल, मघा, अश्विनी इन तीन नक्षत्रों के आदि की तीन-तीन घटी गण्डांत है और ज्येष्ठा, आश्लेषा, रेवती इन तीन नक्षत्रों के अन्त्य की पांच घटी गण्डांत है ॥ १ ॥

अथ गण्डशान्तिः—

सन्ध्यारात्रिदिवाभागे गण्डयोगे ध्रुवं शिशुः ।
आत्मानं मातरं तातं विनिहन्ति यथाक्रमम् ॥ २ ॥
यात्रायां स्याच्चौरभयं विवाहे मृत्युरेव च ।
जननीपितरौ हन्ति वदत्येवं बृहस्पतिः ॥ ३ ॥

गण्डयोग में उत्पन्न बालक यदि संध्याकाल, रात्रि तथा दिन में जन्म ले तो क्रम से अपनी माता तथा पिता का नाश करे अर्थात् यदि सायंकाल को

गण्डयोग में बालक पैदा हो तो अपने शरीर को, रात्रि में पैदा हो तो माता को दिन में पैदा हो तो पिता को नाश करता है। इस गण्ड योग में यात्रा करने से चोर का भय हो, विवाह में मृत्यु हो और ऐसे ही बृहस्पति कहते हैं कि माता-पिता का नाश करे ॥ २-३ ॥

गण्डेऽरिष्टं चंदनं च कुष्ठं गोरोचनं तथा।
घृतेन मिश्रितं कृत्वा चतुर्भिः कलशैस्ततः ॥ ४ ॥
सहस्रशीर्षामन्त्रेण बालकं स्नापयेद्बुधः।
पितृयुक्तं दिवाजातं मातृयुक्तं च रात्रिजम् ॥ ५ ॥
स्नापयेत्पितृमातृभ्यां सन्ध्योरुभयोरपि।
कांस्यपात्रं घृतैः पूर्णं दद्याद्गण्डोपशांतये ॥ ६ ॥
कृष्णां धेनुं सुवर्णं च ग्रहजाप्यं च कारयेत्।
आश्लेषायां च मूलेऽपि*शांतिरेवं विधीयते ॥ ७ ॥

यदि गण्डयोग में बालक उत्पन्न हो अथवा यात्रा आदि करे तो उसकी शांति यह है कि अरिष्ट (नीम) चन्दन कूट गोरोचन इनमें घृत मिलाकर चार कलशों में रक्खे। फिर पण्डित बालक को 'सहस्र-शीर्षा पुरुषः' इत्यादि वैदिक मन्त्रों से स्नान करावे। यदि तीन दिन में बालक पैदा हुआ हो तो पिता-सहित, रात्रि में हो तो माता-समेत स्नान करावे और यदि दोनों संध्या (प्रातः-सायं) में उत्पन्न हो तो माता-पिता दोनों के सहित बालक को स्नान करावे और गण्ड की शांति के निमित्त घृत से पूर्ण कांस्यपात्र का दान करे। कृष्ण गौ और सुवर्ण दान करे और ग्रह का जप करावे। इस प्रकार आश्लेषा तथा मूल नक्षत्र में उत्पन्न हुए बालक की भी शांति कही है ॥ ४-७ ॥

---

* मूलादि नक्षत्र शांतिप्रकारो मुहूर्तचिंतामणिपीयूषधाराटीकायां विलोक्यः।

अथ रव्यादीनां स्वोच्चगतफलम्।

महाधनी महोग्रश्च तुङ्गस्थे भास्करे नरः।
सभूषणो महाभोगी धनी तुङ्गे निशाकरे ॥ १ ॥

जिसके सूर्य उच्च का हो वह मनुष्य महाधनी तथा महा उग्र हो और चन्द्रमा उच्च का हो तो सुन्दर आभूषणोंवाला, भोगी तथा धनी हो ॥ १ ॥

उच्चे भौमे सुपुत्रश्च तेजस्वी गर्वितो नरः।
मेधावी दृढवाक्यश्च बलाढ्यश्च बुधे भवेत् ॥ २ ॥

मंगल उच्च का हो तो सुन्दर पुत्रोंवाला, तेजस्वी और अभिमानी हो। बुध उच्च का हो तो बुद्धिमान्, दृढ वाक्यवाला और बलाढ्य होता है ॥ २ ॥

राजपूज्यश्च विख्यातो विद्वानार्यो गुरौ नरः।
स्वोच्चे शुक्रे विलासी च हास्यगीतादिसंयुतः ॥ ३ ॥

बृहस्पति उच्च का हो तो राजपूज्य, विख्यात, विद्वान् और श्रेष्ठजन हो। शुक्र उच्च का हो तो विलास (भोग) हास्य तथा गीत आदिकों में लगा रहता है ॥ ३ ॥

स्वोच्चगे रविपुत्रे च चक्रवर्ती धनी भवेत्।
राजलब्धनियोगश्च राहुः शनिसमो मतः ॥ ४ ॥

शनि उच्च का हो तो चक्रवर्ती राजा, धनी वा राजा से लब्ध अधिकारवाला हो। राहु का फल शनि के समान ही होता है ॥ ४ ॥

अथ मूलत्रिकोणगतग्रहफलम्।

धनी सुखी कार्यविज्ञो रवौ मूलत्रिकोणगे।
चन्द्रे धनी सुभोक्ता च भौमे शूरोऽदयः खलः ॥ १ ॥

सूर्य मूलत्रिकोण में हो तो धनी, सुखी और कार्य को जाननेवाला हो। चन्द्रमा मूलत्रिकोण में हो तो धनी और भोगी हो। मंगल हो तो शूरवीर, निर्दयी तथा दुष्ट हो ॥ १ ॥

बुधे त्रिकोणे विज्ञश्च विनोदी विजयी नरः।
गुरौ ग्रामपुरादीनां मठस्य च पतिर्भवेत् ॥ २ ॥

बुध मूलत्रिकोण में हो तो पंडित, आनन्दयुक्त और विजयी मनुष्य हो। बृहस्पति हो तो ग्राम, पुर और मठ आदि का अधिपति हो ॥ २ ॥

शुक्रे त्रिकोणे सुज्ञश्च सुखयुक्तो महत्तमः।
मंदे नरो धनैः पूर्णो महाशूरः कुलंधरः ॥ ३ ॥

शुक्र त्रिकोण में हो तो पंडित, सुखयुक्त, महान् और उत्तम जन हो। शनि मूलत्रिकोण में हो तो धनों से परिपूर्ण, महा शूरवीर और कुल को बढ़ानेवाला होता है ॥ ३ ॥

सिंहवृषाजप्रमदाकार्मुकभृत्तौलिकुंभधराः।
मूलत्रिकोणानिरविग्लौभौमज्ञेज्यशुक्रसौरीणाम् ॥ ४ ॥

सिंह, वृष, मेष, कन्या, धनु, तुला, कुम्भ राशि में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र तथा शनि इन ग्रहों की यथाक्रम से मूलत्रिकोण राशि कहलाती है ॥ ४ ॥

अथ स्वगृहस्थग्रहफलम्।

स्वगृहस्थे रवौ लोके महोग्रश्च महोद्यमी।
चन्द्रे धर्मरतः साधुर्मनस्वी रूपवानपि ॥ १ ॥

सूर्य अपने घर में बैठा हो तो लोक में वह उग्र और महाउद्यमी हो। चन्द्रमा हो तो धर्म में रत, साधु, मनस्वी तथा रूपवान् हो ॥ १ ॥

स्वगृहस्थे कुजे मल्लो धनवानपराजितः।
बुधे नानाकलाभिज्ञः पंडितो धनवान्नरः ॥ २ ॥

मंगल अपने घर में हो तो मल्ल, धनवान् और अपराजित (नहीं हारनेवाला) हो। बुध हो तो अनेक कला जाननेवाला, धनवान् तथा पण्डित हो ॥ २ ॥

धनी काव्यश्रुतिज्ञश्च सुचेष्टः स्वगृहे गुरौ।
स्फीत कृषीवलः शुक्रे शनौ मान्यः खलो नरः ॥ ३ ॥

बृहस्पति अपने घर में हो तो धनी, कवि, वेदवेत्ता और सुन्दर चेष्टावाला हो। शुक्र हो तो उज्ज्वल स्वरूपवाला, कृषीवल (खेती करनेवाला) हो। शनि हो तो मान्य तथा दुष्टजन होता है ॥ ३ ॥

अथ मित्रगृहस्थग्रहफलम्।

सूर्ये मित्रगृहे ख्यातः शास्त्रज्ञः स्थिरसौहृदः।
चन्द्रे नरो भाग्ययुक्तश्चतुरो धनवानपि ॥ १ ॥

सूर्य मित्र के घर में हो तो प्रसिद्ध शास्त्रज्ञ और स्थिर मित्रवाला हो। चन्द्रमा हो तो भाग्ययुक्त, चतुर तथा धनवान् हो ॥ १ ॥

भौमे शस्त्रोपजीवी च बुधे रूपधनान्वितः।
गुरौ मित्रगृहे पूज्यः सतां सत्कर्मसंयुतः ॥ २ ॥

मंगल हो तो शस्त्र की आजीविकावाला, बुध हो तो रूप धन से युक्त, बृहस्पति मित्र के घर में हो तो श्रेष्ठ जनों का पूज्य और शुभकर्म करनेवाला हो ॥ २ ॥

शुक्रे मित्रगृहे लोके धनी बंधुजनप्रियः।
शनौ परान्नभोगी च कुकर्मनिरतो नरः ॥ ३ ॥

शुक्र मित्र के घर में हो तो लोक में धनी तथा बन्धु का प्रिय हो, शनि मित्र के घर में हो तो पराये अन्न का भोजन करनेवाला और कुकर्मी हो ॥ ३ ॥

अथ शत्रुगृहस्थग्रहफलम् ।

सूर्ये रिपुगृहे निःस्वो विषयैः पीडितो नरः ।
चन्द्रे हृदयरोगी च भौमे जायाजडोऽधनः ॥ १ ॥

सूर्य शत्रु के घर में हो तो दरिद्र और विषयों से पीड़ितजन हो । चन्द्रमा हो तो हृदय में रोगवाला और मंगल हो तो मूर्ख स्त्रीवाला तथा निर्धन होवे ॥ १ ॥

बुधे रिपुगृहे मूर्खो वाग्धनी दुःखपीडितः ।
जीवेऽरिभे नरः क्लीबो नाप्तवृत्तिर्बुभुक्षितः ॥ २ ॥

बुध शत्रु के घर में हो तो मूर्ख, बातों का ही धनवाला और दुःखी हो । बृहस्पति शत्रु के घर में हो तो नपुंसक, आजीविका से हीन और बुभुक्षत हो ॥ २ ॥

शुक्रे शत्रुगृहे भृत्यः कुबुद्धिर्दुःखितो नरः ।
शनौ व्याध्यर्थशोकेन संतप्तो मलिनो भवेत् ॥ ३ ॥

शुक्र शत्रु के घर में हो तो भृत्य, कुबुद्धि तथा दुःखी हो । शनि हो तो बीमारी और धन के शोक से दुःखी तथा मलिन हो ॥ ३ ॥

अथ नीचगृहस्थग्रहफलम् ।

नीचे सूर्ये भवेत्प्रेष्यो बंधुभिर्वर्जितो नरः ।
चन्द्रे रोगी स्वल्पपुण्यो दुर्भगो नीचराशिगे ॥ १ ॥

सूर्य नीच का हो तो सेवा करनेवाला और भाइयों से त्यागा हुआ रहे । चन्द्रमा नीच राशि का हो हो रोगी, स्वल्प पुण्यवाला और कंगाल हो ॥ १ ॥

नीचे भौमे भवेन्नीचः कुत्सितो व्यसनातुरः ।
बुधे क्षुद्रो बंधुवैरी गुरौ दीनो मलान्वितः ॥ २ ॥

मंगल नीच का हो तो नीच, कुत्सित तथा व्यसनी हो । बुध हो तो तुच्छ और बन्धुजनों से वैर करनेवाला हो । बृहस्पति हो तो सदा दीन और मलिन रहे ॥ २ ॥

शुक्रे नीचे नष्टदारः स्वतंत्रः शीलवर्जितः ।
शनौ काणो दरिद्रश्च गताचारोऽतिगर्हितः ॥ ३ ॥

शुक्र नीच का हो तो उसकी स्त्री मरे और वह शीलरहित होकर स्वतन्त्र विचरे । शनि नीच का हो तो काना, दरिद्र, आचार रहित तथा अत्यन्त निन्दित हो ॥ ३ ॥

इति प्रथम परिच्छेदः ॥ १ ॥

अथ द्वितीयपरिच्छेदः ॥ २ ॥

तत्र लग्नादिद्वादशभावस्थरविफलम् ।

लग्ने सूर्येऽतितीव्रश्च चंचलात्मा स्मरातुरः ।
नेत्ररोगी पीडितांगो जायते चारुणाकृतिः ॥ १ ॥

लग्न में सूर्य हो तो अत्यन्त तेज स्वभाववाला, चञ्चल मनवाला, कामदेव से पीड़ित, नेत्र-रोगी, पीड़ित शरीरवाला और लाल रंग की आकृतिवाला होता है ॥ १ ॥

सूर्ये धने विवादी च बहुशत्रुश्च निर्धनः ।
परापवादी सेर्ष्यश्च कृतघ्नश्च नरो भवेत् ॥ २ ॥

दूसरे घर में सूर्य हो तो विवादी, बहुत शत्रुओंवाला, निर्धन, औरों से विवाद करनेवाला और कृतघ्न होता है ॥ २ ॥

तृतीयगे दिवानाथे प्रसिद्धो रोगवर्जितः ।
भूपतिश्च दयालुश्च सुशीलः स भवेन्नरः ॥ ३ ॥

तीसरे घर में सूर्य हो तो प्रसिद्ध, रोगरहित, राजा, दयालु तथा सुन्दर स्वभाववाला होता है ॥ ३ ॥

सूर्ये चतुर्थे दुर्बुद्धिः कृशांगः सुखवर्जितः।
अप्रभावो निष्ठुरश्च दुष्टसंगी भवेन्नरः ४ ॥

चौथे घर में सूर्य हो तो दुष्ट बुद्धिवाला, कृशांग, सुखरहित, प्रभावरहित, कठोर तथा दुष्ट जनों की संगति में रहे ॥ ४ ॥

पञ्चमेऽर्के कोपयुक्तो कुरूपः शीलवर्जितः।
कुमंगलब्धवृत्तिश्च गतमांसश्च जायते ॥ ५ ॥

पाँचवें घर में सूर्य हो तो क्रोधयुक्त, कुरूप, शीलरहित और दुर्बल होता है ॥ ५ ॥

षष्ठे सूर्ये गतारिश्च ख्यातमानः सुखी शुचिः।
शूरोऽनुरागो भूपालसम्मतश्च भवेन्नरः ॥ ६ ॥

छठें घर में सूर्य हो तो शत्रु रहित, विख्यात, सुखी, पवित्र, शूरवीर, अनुरागी और राजा का मान्य होता है ॥ ६ ॥

सप्तमेऽर्के कुदारश्च दुष्टप्रीतोऽल्पपुत्रकः।
गुह्यरोगी सपापश्च जातको हि प्रजायते ॥ ७ ॥

सातवें घर में सूर्य हो तो कुत्सित स्त्रीवाला, दुष्टों से प्रीति करनेवाला, अल्प पुत्रवाला, गुदा के रोगवाला और पापी होता है ॥ ७ ॥

अष्टमस्थे दिवानाथे कृतघ्नो हीनमानसः।
शत्रुदग्धो वृथागामी बन्धुहीनश्च जायते ॥ ८ ॥

आठवें घर में सूर्य हो तो कृतघ्न, हीन मतवाला, शत्रुओं द्वारा दग्ध किया हुआ, वृथा गमन करनेवाला और बंधुओं से हीन होता है ॥ ८ ॥

नवमस्थे रवौ जातः कुकर्मी भाग्यवर्जितः।
विद्याविवेकहीनश्च कुशीलश्च प्रजायते ॥ ९ ॥

नवें में सूर्य हो तो कुकर्मी, भाग्यहीन, विद्या विवेकहीन और दुष्ट स्वभाववाला हो ॥ ९ ॥

दशमेऽर्के बन्धुहीनः कुकर्मा शीलवर्जितः।
स्त्रीचश्चलो हीनतेजा हीनकोशश्च जायते ॥ १० ॥

दशवें घर में सूर्य हो तो बन्धुओं से हीन, कुकर्मी, शील रहित, स्त्रियों में चंचल, तेजहीन और द्रव्यहीन होता है ॥ १० ॥

लाभे सूर्ये समुत्पन्नो नानालाभसमन्वितः।
सात्त्विको धार्मिको मानी रूपवानपि जायते ॥ ११ ॥

ग्यारहवें घर में सूर्य हो तो जन्मनेवाला नर अनेक लाभों से संयुक्त सत्त्वगुणी, धार्मिक, मानी और रूपवान् होता है ॥ ११ ॥

व्यये सूर्ये नरो रोगी सत्त्वहीनो वृथाटनः।
असद्व्ययी पुत्रदारभक्तिहीनश्च जायते ॥ १२ ॥

बारहवें घर में सूर्य हो तो रोगी, बलहीन, वृथागमन करनेवाला, वृथा खर्च करनेवाला और भक्तिहीन होता है ॥ १२ ॥

अथ लग्नादिद्वादशभावस्थचन्द्रफलम्।

लग्ने चन्द्रे जडः शुद्धः प्रसन्नो धनपूरितः।
स्त्रीवल्लभो धार्मिकश्च कृतघ्नश्च नरो भवेत् ॥ १ ॥

लग्न में चन्द्रमा हो तो जड़, शुद्ध, प्रसन्न, धन से पूर्ण, स्त्री का प्यारा, धार्मिक और कृतघ्न होता है ॥ १ ॥

धने चन्द्रे धनैः पूर्णो नृपपूज्यो गुणान्वितः।
शास्त्रानुरागी सुभगो जनप्रीतिश्च जायते ॥ २ ॥

धन स्थान में चन्द्रमा हो तो धन से परिपूर्ण, राजा से पूज्य, गुण-युक्त, शास्त्रानुरागी और सुन्दर जनों से प्रीति करनेवाला हो ॥ २ ॥

तृतीयस्थे निशानाथे धनविद्यादिभिर्युतः ।
कफाधिकः कामुकश्च वंशमुख्योऽपि जायते ॥ ३ ॥

तीसरे घर में चन्द्रमा हो तो धन और विद्यादि से युक्त, अधिक कफवाला, कामी और वंश में मुख्य होता है ॥ ३ ॥

चतुर्थस्थे निशानाथे पुत्रदारसमन्वितः ।
धनी सुखी यशस्वी च विद्यावानपि स स्मृतः ॥ ४ ॥

चौथे घर में चन्द्रमा हो तो प्राणी पुत्र और स्त्री से युक्त होकर धनी, सुखी, यशस्वी तथा विद्यावान् होता है ॥ ४ ॥

सुते चन्द्रे सुताढ्यश्च रोगी कामी भयानकः ।
कृत्रिमैः पौरुषैर्युक्तो विनयी च भवेन्नरः ॥ ५ ॥

पांचवें घर में चन्द्रमा हो तो पुत्रयुक्त, रोगी, कामी, भयानक, कृत्रिम पुरुषार्थों से युक्त और विनयवाला नर होता है ॥ ५ ॥

षष्ठे चन्द्रे वित्तहीनो मृदुकायोऽतिलालसः ।
मन्दाग्निस्तीक्ष्णदृष्टिश्च पापबुद्धिर्भवेन्नरः ॥ ६ ॥

छठें घर में चन्द्रमा हो तो धनहीन, कोमल शरीरवाला, अत्यन्त लालची, मन्दाग्निवाला, तीक्ष्ण दृष्टिवाला और पापबुद्धिवाला हो ॥ ६ ॥

चन्द्रे च सप्तमे जातो दुःखी कुष्टी च वञ्चकः ।
कृपणो बहुवैरी च जायते परदारिकः ॥ ७ ॥

सातवें चन्द्रमा हो तो दुःखी, कुष्ट रोगी, ठग, कृपण, बहुत शत्रुओंवाला और पराई स्त्री से रमण करनेवाला हो ॥ ७ ॥

अष्टमे तारकानाथे दीनोऽल्पायुः सकष्टकः ।
प्रगल्भश्च कृशांगश्च पापबुद्धिर्भवेन्नरः ॥ ८ ॥

आठवें घर में चन्द्रमा हो तो दीन (गरीब), अल्प आयुवाला, दुःखी, प्रगल्भ (ढीठ) दुबला और पाप बुद्धिवाला हो ॥ ८ ॥

धर्मे चन्द्रे चारुकांतिः स्वधर्मनिरतः सदा ।
वीतरोगः सतां श्लाघ्यः पापहीनश्च जायते ॥ ९ ॥

नवें घर में चन्द्रमा हो तो उत्तम कान्तिवाला, सदा अपने धर्म में रत, रोगरहित, श्रेष्ठजनोंसे श्लाघ्य और पापहीन होता है ॥ ९ ॥

कर्मस्थाने सुधारश्मौ बहुभाग्यो महाधनी ।
मनस्वी च मनोज्ञश्च राजमान्यश्च जायते ॥ १० ॥

दसवें घर में चन्द्रमा हो तो बहुत भाग्यवाला, महाधनी, मनस्वी, मनोहर तथा राजमान्य हो ॥ १० ॥

लाभे चन्द्रे लाभयुक्तः प्रगल्भः सुभगो नरः ।
सुमार्गगामी लज्जालुः प्रतापी भाग्यवान् भवेत् ॥ ११ ॥

ग्यारहवें घर में चन्द्रमा हो तो लाभयुक्त, प्रगल्भ (ढीठ), ऐश्वर्यवान्, सुमार्गगामी लज्जावाला, प्रतापी और भाग्यवान् होता है ॥ ११ ॥

व्यये चन्द्रे पापबुद्धिर्बहुभक्षी पराजितः ।
कुलाधमो मद्यपश्च विकारी जातको भवेत् ॥ १२ ॥

बारहवें घर में चन्द्रमा हो तो पाप बुद्धिवाला, बहुत खानेवाला, हारनेवाला, कुल में अधम, मदिरा पीनेवाला और विकारवान् होता है ॥ १२ ॥

अथ लग्नादिद्वादशभावस्थकुजफलम् ।

भौमे लग्ने कुरूपश्च रोगी बन्धुविवर्जितः ।
असत्यवादी निर्द्रव्यो जायते परदारिकः ॥ १३ ॥

मंगल लग्न में हो तो कुरूप, रोगी, बंधुहीन, झूठ बोलनेवाला, निर्धन और अन्य स्त्री से रमण करनेवाला हो ॥ १३ ॥

धने कुजे धनैर्हीनः क्रियाहीनश्च जायते ।
दीर्घसत्री सत्यवादी पुत्रवानपि मानवः ॥ १४ ॥

धनस्थान में मंगल हो तो धनहीन, क्रियाहीन, दीर्घसूत्री, सत्य बोलनेवाला और पुत्रवान् हो ॥ १४ ॥

तृतीयगे कुजे जातः प्रतापी शीलसंयुतः ।
रणे शूरो राजमान्यो सुविख्यातश्च जायते ॥ १५ ॥

तीसरे घर में मंगल हो तो प्रतापी, शीलयुक्त, युद्ध में शूर, वीर, राजमान्य और पृथ्वीपर विख्यात होता है ॥ १५ ॥

चतुर्थे भूसुते कृष्णः पित्ताधिक्योऽरिनिर्जितः ।
वृथाटनो हीनपुत्रो महाकामी च जायते ॥ १६ ॥

चौथे घर में मंगल हो तो काले वर्णवाला, अधिक पित्तवाला, शत्रुओं से हारा हुआ, वृथा गमन करनेवाला, पुत्रहीन और महाकामी होता है ॥ १६ ॥

पञ्चमस्थे धराशूनौ कुसंतानः सदारुजः ।
बन्धुवर्गे विरक्तश्च नरो बुद्धिविवर्जितः ॥ १७ ॥

पाँचवें घर में मंगल हो तो दुष्ट सन्तानवाला, सदा रोगी, बन्धुजनों से विरक्त तथा बुद्धिरहित होता है ॥ १७ ॥

षष्ठे भौमे शत्रुहीनो नानार्थैः परिपूरितः ।
स्त्रीलालसः पुष्टदेहः शुभचित्तश्च जायते ॥ १८ ॥

छटें घर में मंगल हो तो शत्रुरहित, अनेक धनों से परिपूरित, स्त्री की लालसावाला, पुष्ट शरीरवाला और शुभ चित्तवाला होता है ॥ १८ ॥

सप्तमे भूमिपुत्रे च रुधिराक्तोपि कोपवान् ।
नीचसेवा वञ्चकश्च निर्गुणोऽपि भवेन्नरः ॥ १९ ॥

मंगल सातवें घर में हो तो मनुष्य रुधिर से भरा हुआ, क्रोधी, नीच जनों की सेवा करनेवाला, ठग और निर्गुण होता है ॥ १९ ॥

अष्टमे मंगले कुष्ठी स्वल्पायुः शत्रुपीडितः ।
अल्पद्रव्यः सरोगश्च निर्गुणोऽपि हि जायते ॥ २० ॥

आठवें मंगल हो तो कुष्ठी, स्वल्प आयुवाला, शत्रु से पीड़ित, अल्प द्रव्यवाला, रोगी और निर्गुण होता है ॥ २० ॥

धर्मस्थे धरणीपुत्रे कुकर्मा गतपौरुषः ।
नीचानुरागी क्रूरश्च सकष्टश्च प्रजायते ॥ २१ ॥

नवें घर में मंगल हो तो कुकर्मी, पुरुषार्थ-रहित, नीच जनों का स्नेही, क्रूर और कष्टसहित रहता है ॥ २१ ॥

कर्मभावे महीपुत्रे शुभकर्मा शुभान्वितः ।
सुपुत्री स्यात्सुखी शूरो गर्विष्ठोऽपि भवेन्नरः ॥ २२ ॥

दसवें घर में मंगल हो तो शुभ कर्मवाला, आनन्दयुक्त, सुन्दर पुत्रोंवाला, सुखी, शूरवीर और अभिमानी हो ॥ २२ ॥

लाभे भौमे भूरिलाभो नानापक्वान्नभक्षकः ।
नेत्ररोगी भूपमान्यो देवद्विजरतो नरः ॥ २३ ॥

ग्यारहवें घर में मंगल हो तो बहुत लाभ हो, अनेक प्रकार के पक्वान्नों का भक्षण करे, वह नेत्र-रोगी, राजमान्य, देवता और ब्राह्मण की भक्तिवाला हो ॥ २३ ॥

असद्व्ययी व्यये भौमे नास्तिको निष्ठुर शठः ।
बहुवैरी विदेशे च सदा गच्छति मानवः ॥ २४ ॥

बारहवें घर में मंगल हो तो बुरे काम में द्रव्य खर्च करनेवाला, कठोर मूर्ख, बहुतों का वैरी और सदा परदेश गमन करे ॥ २४ ॥

अथ लग्नादिद्वादशभावस्थबुधफलम् ।

लग्ने बुधे च गीतज्ञो निष्पापो भूपपूजितः ।
रूपज्ञानयशोयुक्तः प्रगल्भो मानवो भवेत् ॥ १ ॥

लग्न में बुध हो तो गायक, विद्या जाननेवाला, पाप रहित, राजा से पूजित रूपवान् और यश से युक्त और प्रगल्भ होता है ॥ १ ॥

धनभावे चन्द्रपुत्रे धनधान्यादिपूरितः ।
शुभकर्मा सुखी नित्यं राजपूज्यश्च जायते ॥ २ ॥

दूसरे घर में बुध हो तो धन-धान्य में भरपूर, शुभ कर्म करनेवाला, नित्य, सुखी और राज-पूज्य होता है ॥ २ ॥

तृतीयस्थे बुधे जातः प्रशस्तो बन्धुमानितः ।
धर्मध्वजी यशस्वी च गुरुदेवार्चको भवेत् ॥ ३ ॥

तीसरे घर में बुध हो तो श्रेष्ठजन, बन्धुओं से मान्य, धर्म की ध्वजा रूप, यशस्वी, गुरु और देवता का पूजक हो ॥ ३ ॥

चतुर्थे चन्द्रपुत्रे च बहुभृत्ययशोन्वितः ।
पटुवाक्यो भाग्ययुक्तः सत्यवादी च जायते ॥ ४ ॥

चौथे घर में बुध हो तो बहुत भृत्योंवाला, यश युक्त, अच्छा बोलनेवाला, भाग्य युक्त तथा सत्य बोलनेवाला हो ॥ ४ ॥

पञ्चमे रोहिणीपुत्रे पुत्रपौत्रसमन्वितः ।
सुबुद्धिः सत्त्वसम्पन्नः सुखी भवति मानवः ॥ ५ ॥

पाँचवें घर में बुध हो तो पुत्र-पौत्रादिकों से युक्त, सुन्दर बुद्धिवाला, बल-युक्त और सुखी मनुष्य हो ॥ ५ ॥

षष्ठे बुधे नृशंसश्च विरोधी सर्वबन्धुषु ।
ईर्ष्याधिकः कामपरो विद्वानपि भवेन्नरः ॥ ६ ॥

छठें घर में बुध हो तो जन्मनेवाला नर क्रूर, सब बन्धुओं का विरोधी अधिक ईर्ष्यावाला, काम में तत्पर और विद्वान हो ॥ ६ ॥

सप्तमस्थे सोमपुत्रे रूपविद्याधिको नरः ।
सुशीलः कामशास्त्रज्ञो नारीमान्यश्च जायते ॥ ७ ॥

सातवें घर में बुध हो तो अधिक रूप और अधिक विद्यावाला, सुन्दर बलवाला, काम-शास्त्र को जाननेवाला तथा स्त्रियों से मान्य होता है ॥ ७ ॥

बुधेऽष्टमे कृतघ्नश्च कुबुद्धिः परदारिकः ।
कामातुरोऽसत्यवादी रोगयुक्तो भवेन्नरः ॥ ८ ॥

आठवें घर में बुध हो तो कृतघ्न, कुबुद्धि, पराई स्त्री से रमण करनेवाला, कामातुर, असत्य बोलनेवाला और रोगी होता है ॥ ८ ॥

धर्मे बुधे धार्मिकश्च कूपारामादिकारकः ।
सत्यवादी च दांतश्च जायते पितृवत्सलः ॥ ९ ॥

नवें स्थान में बुध हो तो धार्मिक, वापी और बाग आदि का करनेवाला, सत्य बोलनेवाला, दाँत (जितेन्द्रिय) और पिता का प्रिय होता है ॥ ९ ॥

दशमस्थे बुधे जातो धनधान्ययशोन्वितः ।
बहुभाग्यश्च विजयी कान्तियुक्तश्च मानवः ॥ १० ॥

दसवें घर में बुध हो तो मनुष्य धन-धान्य और यश से युक्त, बहुत भाग्यवान, विजयी और कान्तियुक्त होता है ॥ १० ॥

लाभे बुधे नित्यलाभो नीरोगश्च सदा सुखी ।
जनानुरागवृत्तिश्च कीर्तिमानपि जायते ॥ ११ ॥

ग्यारहवें घर में बुध हो तो नित्य लाभवान्, रोगरहित और सदा सुखी रहे, मनुष्यों में स्नेह रक्खे और कीर्तिमान् हो ॥ ११ ॥

बुधे व्यये व्ययी लोके रोगी बन्धुसमन्वितः ।
पापसक्तः पराधीनः परापक्षी च जायते ॥ १२ ॥

बारहवें घर में बुध हो तो संसार में द्रव्य खर्चनेवाला, रोगी, बन्धुजनों से युक्त हो, पाप में आसक्त रहे, पराधीन और शत्रु का पक्ष ग्रहण करनेवाला हो ॥ १२ ॥

अथ लग्नादिद्वादशभावस्थगुरुफलम् ।

लग्ने गुरौ सुशीलश्च प्रगल्भो रूपवानपि ।
नृपाभीष्टश्च नीरोगो ज्ञानी सौम्यश्च जायते ॥ १ ॥

लग्न में बृहस्पति हो तो सुन्दर शीलवाला, ढीठ, रूपवान्, राजा से मान्य, रोगरहित, ज्ञानी और सौम्य जन होता है ॥ १ ॥

धने जीवो धनी लोकः कृतज्ञो बन्धुसंयुतः।
गजाश्वमहिषीयुक्तः कांतिमानपि जायते ॥ २ ॥

दूसरे घर में बृहस्पति हो तो धनी, कृतज्ञ, बन्धुजनों से युक्त, हाथी-घोड़े और भैंस से युक्त तथा कान्तिमान् होता है ॥ २ ॥

जीवे तृतीये तेजस्वी कर्मदक्षो जितेन्द्रियः।
मित्राप्तसुखसंपन्नस्तीर्थयात्राप्रियो भवेत् ॥ ३ ॥

तीसरे घर में बृहस्पति हो तो तेजस्वी, काम में चतुर, जितेन्द्रिय, मित्र से प्राप्त सुख से सम्पन्न और तीर्थयात्रा में प्रीतिवाला होता है ॥ ३ ॥

सुखे जीवे सुखी लोके सुभगो राजपूजितः।
विजितारिः कुलाध्यक्षो गुरुभक्तश्च जायते ॥ ४ ॥

चौथे घर में बृहस्पति हो तो संसार में सुखी, ऐश्वर्यवान, राजा से मान्य, शत्रुओं का जीतनेवाला, कुल का पति और गुरु की भक्तिवाला होता है ॥ ४ ॥

सुते जीवे सुतैर्युक्तो धार्मिकः पण्डितः सुखी।
शुभचेता दयायुक्तो विनयी च भवेन्नरः ॥ ५ ॥

पाँचवें घर में बृहस्पति हो तो पुत्रादिकों से युक्त, धार्मिक, पण्डित, सुखी, शुद्ध चित्तवाला, दयायुक्त और विनयी होता है ॥ ५ ॥

षष्ठे गुरौ विघ्नयुक्तो बहुशत्रुश्च निष्ठुरः।
उद्वेगी मतिहीनश्च कामुको जायते नरः ॥ ६ ॥

छठें घर में बृहस्पति हो तो विघ्नयुक्त, बहुत शत्रुओंवाला, कठोर, उद्वेगी बुद्धिहीन और कामी होता है ॥ ६ ॥

सप्तमस्थे सुराचार्ये कामचित्तो महाबलः।
धनी दाता प्रगल्भश्च चित्रकर्मा प्रजायते ॥ ७ ॥

सातवें घर में बृहस्पति हो तो कामी, महाबली, धनी, दानी, प्रगल्भ (ढीठ), और विचित्र कर्म करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

जीवेऽष्टमे सदा रोगी कृपणः शोकसंयुतः।
बहुवैरी कुकर्मा च कुरूपश्च भवेन्नरः ॥ ८ ॥

आठवें घर में बृहस्पति हो तो सदा रोगी, कृपण, शोक संयुक्त, बहुतों का वैरी और कुरूप होवे ॥ ८ ॥

धर्मे जीवे धर्मकर्ता साधुसंगी च शास्त्रवित्।
विनयी तीर्थसेवी च ब्रह्मज्ञश्च स जायते ॥ ९ ॥

नवें घर में बृहस्पति हो तो साधुओं का संगी, शास्त्र को जाननेवाला, विनयी, तीर्थसेवी और ब्रह्मवेत्ता होता है ॥ ९ ॥

कर्मभागवते जीवे पुण्यकीर्तिसुखान्वितः।
राजतुल्यः सुरूपश्च दयालुर्जायते नरः ॥ १० ॥

दसवें घर में बृहस्पति हो तो पुण्य, कीर्ति, सुख इनसे युक्त, राजा के समान सुन्दर रूपवाला और दयालु होता है ॥ १० ॥

लाभे गुरौ विवेकी स्याद्धस्त्यश्वादिधनैर्युतः।
अलोलुपः सरूपश्च गुणवानपि जायते ॥ ११ ॥

ग्यारहवें घर में बृहस्पति हो तो ज्ञानी, हाथी-घोड़े आदि से युक्त, अत्यन्त तृष्णा से रहित, सुन्दर रूपवाला और गुणवान् हो ॥ ११ ॥

व्यये बृहस्पतौ रोगी व्यसनी परधर्मकृत्।
बन्धुवैरी नीचसेवी गुरुद्वेषी च जायते ॥ १२ ॥

बारहवें घर में बृहस्पति हो तो रोगी, व्यसनी हो, सदा पराये धर्म को माने, बन्धुओं से वैर करे, नीच-सेवी और गुरु का द्वेषी हो ॥ १२ ॥

अथ लग्नादिद्वादशभावस्थशुक्रफलम्।

लग्ने शुक्रे सुशीलश्च वृत्तवानपि सुन्दरः।
शुचिर्विद्वान् मनोज्ञश्च धार्मिकश्च भवेन्नरः ॥ १ ॥

लग्न में शुक्र हो तो सुन्दर शील स्वभाववाला, अच्छी वृत्तिवाला, सुन्दर, पवित्र, विद्वान्, मनोहर और धार्मिक होता है ॥ १ ॥

धने शुक्रे धनी विद्वान्बन्धुमान्यो नृपार्चितः ।
यशस्वी गुरुभक्तश्च कृतज्ञश्च भवेन्नरः ॥ २ ॥

दूसरे घर में शुक्र हो तो धनी, विद्वान्, बंधुओं से मान्य, राजा से पूजित, यशस्वी, गुरु का भक्त और कृतज्ञ होवे ॥ २ ॥

भार्गवे सहजे जातो धनधान्यसुतान्वितः ।
नीरोगी राजमान्यश्च प्रतापी च प्रजायते ॥ ३ ॥

तीसरे घर में शुक्र हो तो धन-धान्य और पुत्र से युक्त, रोगरहित, राजमान्य और प्रतापी होता है ॥ ३ ॥

सुखे शुक्रे सुखी विज्ञो बहुभार्यो धनान्वितः ।
ग्रामाधिपो यशस्वी स्याद्विवेकी च भवेन्नरः ॥ ४ ॥

चौथे घर में शुक्र हो तो सुखी, पण्डित, बहुत स्त्रियोंवाला, धन से युक्त, ग्राम का अधिपति, यशस्वी और विवेकी हो ॥ ४ ॥

सुते शुक्रे समृद्धश्च सुरूपोऽपि सदा नरः ।
पुत्रकन्यापौत्रयुतः सुभगोऽपि भवेन्नरः ॥ ५ ॥

पाँचवें घर में शुक्र हो तो स्मृद्धिमान्, सुन्दर, रूपवान् और पुत्र-पौत्रादिकों से युक्त, तथा बहुत ऐश्वर्यवान् हो ॥ ५ ॥

षष्ठे शुक्रो भवेद्दम्भी जाड्यहानिभयान्वितः ।
दुःसङ्गी कलही तातद्वेषी चैव सदा नरः ॥ ६ ॥

छठें घर में शुक्र हो तो पाखंडी, मूर्ख, निर्भय, दुष्ट जनों की संगतिवाला कलहकारी और पिता से वैर करनेवाला हो ॥ ६ ॥

सप्तमे भृगुपुत्रे स्याद्धनी दिव्यांगनायुतः ।
नीरोगः सुखसम्पन्नो बहुभाग्यश्च जायते ॥ ७ ॥

सातवें घर में शुक्र हो तो धनी, दिव्य स्त्री से संयुक्त, रोगरहित, सुखसंपन्न तथा बहुत भाग्यवान् हो ॥ ७ ॥

अष्टमस्थे दैत्यपूज्ये सरोगः कलहप्रियः ।
वृथाटनी कार्यहीनो जनानां च प्रियो मतः ॥ ८ ॥

आठवें घर में शुक्र हो तो रोगी, कलह में प्रीति करनेवाला, वृथा गमनशील, कार्यहीन और सब जनों का प्रिय हो ॥ ८ ॥

धर्मे शुक्रे धर्मपूर्णो ज्ञानवृद्धः सुखी धनीः ।
नरेन्द्रमान्यो विजयी नराणां च प्रियः सदा ॥ ९ ॥

नवें घर में शुक्र हो तो धर्म परिपूर्ण, ज्ञान में बढ़ा हुआ, सुखी, धनी, राजा से मान्य, विजयी और मनुष्यों को सदा प्रिय रहे ॥ ९ ॥

कर्मस्थिते भर्गोः पुत्रे सुकर्मा निधिरत्नवान् ।
राजसेवी धार्मिकश्च जायते दायिताप्रियः ॥ १० ॥

दसवें घर में शुक्र हो तो सुन्दर कर्म करनेवाला, खजाना तथा रत्नोंवाला, राजसेवी, धार्मिक और स्त्री का प्रिय हो ॥ १० ॥

लाभे शुक्रे सदा लाभो यशःसत्यगुणान्वितः ।
धनी भोगी क्रियाशुद्धो जायते मानवोत्तमः ॥ ११ ॥

ग्यारहवें घर में शुक्र हो तो सदा लाभ हो, यश, रत्न और गुण से युक्त, धनो, भोगी, शुद्ध क्रियावाला और उत्तम मनुष्य हो ॥ ११ ॥

व्यये शुक्रे व्ययाढ्यश्च गुरुमित्रविरोधवान् ।
मिथ्यावादी बन्धुवर्गे गुणहीनोऽपि जायते ॥ १२ ॥

बारहवें घर में शुक्र हो तो खर्चीला, गुरु, मित्र से विरोध करनेवाला, झूठ बोलनेवाला और बन्धुजनों में गुणहीन हो ॥ १२ ॥

अथ लग्नादिद्वादशभावस्थशनिफलम् ।

लग्ने शनौ सदा रोगी कुरूपः कृपणो नरः ।
कुशीलः पापबुद्धिश्च जडश्च भवति ध्रुवम् ॥ १ ॥

यदि लग्न में शनि हो तो सदा रोगी, कुरूप, कृपण, कुशील, पाप बुद्धिवाला और मूर्ख होवे ॥ १ ॥

धने मन्दे धनैर्हीनो वातपित्तकफातुरः ।
देहास्थिपित्तरोगश्च गुणः स्वल्पोऽपि जायते ॥ २ ॥

दूसरे घर में शनि हो तो धनहीन, वात-पित्त कफ से पीड़ित, देह में अस्थि-रोगी, पित्त-रोगी और स्वल्पगुणी होता है ॥ २ ॥

छायात्मजे तृतीयस्थे प्रसन्नो गुणवत्सलः ।
शत्रुमर्दी नृणां मान्यो धनी शूरश्च जायते ॥ ३ ॥

तीसरे घर में शनि हो तो प्रसन्न, शत्रुओं का नाशक, मनुष्योंका मान्य, धनी और शूरवीर हो ॥ ३ ॥

सुखे मन्दे सुखैर्हीनो हृतार्थो बान्धवैर्नरः ।
गुणस्वभावो दुःसङ्गी कुजनैश्च न संशयः ॥ ४ ॥

चौथे घर में शनि हो तो सुखहीन, बन्धुजनों से अपहृत धनवाला अर्थात् उसके भाई धन को हर लें, गुणी स्वभाववाला और दुष्टजनों के संगवाला हो ॥ ४ ॥

पुत्रे मन्दे पुत्रहीनः क्रियाकीर्तिविवर्जितः ।
हीनकोशो विरूपश्च मानवो भवति ध्रुवम् ॥ ५ ॥

पाँचवें घर में शनि हो तो पुत्रहीन, क्रिया-कीर्तिहीन, द्रव्यहीन और बुरे रूपवाला हो ॥ ५ ॥

शत्रुभावस्थिते मन्दे शत्रुहीनो महाधनी ।
पशुपुत्रयशोयुक्तो निरोगो जायते नरः ॥ ६ ॥

छठे घर में शनि हो तो शत्रुहीन, महाधनी, पशु, पुत्र तथा यशयुक्त और रोगरहित हो ॥ ६ ॥

कलत्रस्थे मित्रपुत्रे सकलत्रो रुजान्वितः ।
बहुशत्रुर्विवर्णश्च कृशश्च मलिनो भवेत् ॥ ७ ॥

सातवें घर में शनि हो तो स्त्री सहित रोगी रहे, उसके बहुत शत्रु रहें, वह बुरा वर्ण, दुर्बल और मलिन हो ॥ ७ ॥

क्रोधातुरोऽष्टमे मन्दे दरिद्रो बहुरोगवान् ।
मिथ्याविवादकर्ता स्याद्वातरोगी भवेन्नरः ॥ ८ ॥

आठवें शनि हो तो क्रोधातुर, दरिद्र, बहुत रोगवाला, झूठ विवाद करने वाला और वातरोगी हो ॥ ८ ॥

धर्मे मन्दे धर्महीनो विवेकी च रिपोर्वशः ।
नृशंसो जायते लोके परदाररतः सदा ॥ ९ ॥

नवें घर में शनि हो तो धर्महीन, ज्ञानी, शत्रु के वशीभूत, क्रूर और पराई स्त्री से सर्वदा रमण करनेवाला हो ॥ ९ ॥

कर्मभावे सूर्यपुत्रे कुकर्मा धनवर्जितः ।
दयासत्यगुणैर्हीनश्चंचलोऽपि भवेत्सदा ॥ १० ॥

दसवें घर में शनि हो तो कुकर्मी, धनहीन, दया सत्य और गुणहीन हो तथा चंचल रहे । १० ॥

छायात्मजे तु लाभस्थे सर्वविद्याविशारदः ।
खरोष्ट्रमहिषैः पूर्णो राजमान्योऽशुचिर्भवेत् ॥ ११ ॥

ग्यारहवें घर में शनि हो तो सब विद्याओं में निपुण, गधे, ऊँट, भैंस इत्यादि से पूर्ण, राजा का मान्य और अपवित्र रहे ॥ ११ ॥

असद्व्ययी व्यये मन्दे कृतघ्नो वित्तवर्जितः ।
बन्धुवैरी कुवेषः स्याच्चंचलश्च सदा नरः ॥ १२ ॥

बारहवें घर में शनि हो तो वृथा खर्च करे, कृतघ्न, धनहीन, बन्धुओं का वैरी, कुवेशधारी व सर्वदा चञ्चल रहे, राहु-केतु का फल शनि के समान ही होता है ।

अथ तृतीयपरिच्छेदः ॥ ३ ॥

तत्रादौ नरचक्रम् ।

लिखित्वा नरचक्रं च सूर्यो यत्र व्यवस्थितः ।
तन्नक्षत्रादिकं कृत्वा त्रयं दद्याच्च मस्तके ॥ १ ॥
वदने च त्रयं दद्यादेकैकं स्कन्धयोर्द्वयोः ।
बाहुद्वये तथैकैकं पाण्योरेकैकमेव च ॥ २ ॥
ऋक्षादि हृदये पंच नाभौ स्यादेकमेव हि ।
ऋक्षं गुह्ये भवेदेकमेकैकं जानुनोर्द्वयोः ॥ ३ ॥
नक्षत्राणि षडन्यानि निदध्यात्पादयोर्बुधः ।
सूर्यनक्षत्रतो जन्मनक्षत्रावधि गण्यते ॥ ४ ॥

मनुष्य के आकार का चक्र लिखकर जहाँ सूर्य स्थित हो—उस नक्षत्र को आदि में रखकर तीन नक्षत्र मस्तक पर धरे। तीन नक्षत्र मुख पर धरे, दोनों कन्धों पर एक-एक नक्षत्र, दोनों भुजाओं पर एक-एक नक्षत्र और दोनों हाथों में एक-एक नक्षत्र धरे। हृदय पर पाँच नक्षत्र, नाभि पर एक ही नक्षत्र धरे, गुदा पर एक नक्षत्र धरे, दोनो घुटनों पर एक-एक धरे। फिर बाकी छः नक्षत्रों को पैरों में धर दे और पीछे सूर्य के नक्षत्र से जन्म के नक्षत्र तक गिने ॥ १–४ ॥

अथ रविचक्रम् ।

मस्तकस्थे च नक्षत्रे पट्टबंधी भवेन्नरः ।
मुखे मिष्टान्नभोक्ता स्यात्स्कन्धभे गजवाहन ॥ १ ॥

मस्तक पर स्थित नक्षत्र में हो तो पट्टबंधी (चपरास बाँधने आदि राजसेवा में नियुक्त) मुख में आवे तो मिष्ठान भोजन करे, दोनों कन्धों पर आवे तो हाथी की सवारी करे ॥ १ ॥

बाह्वोर्भे बलवान्मर्त्यः पाणिभे तस्करो भवेत् ।
हृदये चेश्वरो जातो नाभौ स्वल्पेन तोषितः ॥ २ ॥

भुजा पर नक्षत्र हो तो मनुष्य बलवान् हो, हाथों पर नक्षत्र हो तो चोरी करे, हृदय पर हो तो ऐश्वर्यवान् हो और नाभि पर हो तो थोड़ी वस्तु से सन्तुष्ट हो जाय ॥ २ ॥

गुह्यभे परदारः स्याज्जानुभे परदेशगः ।
पापस्थिते स्वनक्षत्रे निर्धनोऽल्पायुरेव च ॥ ३ ॥

गुदा पर नक्षत्र आवे तो पराई स्त्री से रमण करे, घुटनों पर नक्षत्र हो तो परदेश गमन करे। यदि अपना जन्म नक्षत्र पैरों पर स्थित हो तो निर्धन और अल्प आयुवाला हो ॥ ३ ॥

अथ चन्द्रचक्रम् ।

जन्मराशेश्च नक्षत्रान्नक्षत्रं वर्तमानकम् ।
गणयेद्गणकः प्राज्ञश्चन्द्रस्यैव शुभाशुभम् ॥ १ ॥

जन्म-राशि के नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक बुद्धिमान् ज्योतिषी गिने फिर चन्द्रमा का शुभाशुभ फल कहे ॥ १ ॥

षडास्ये पृष्ठके षट्कं करे षट्कं त्रयं गुदे ।
त्रयं पादे त्रयं कण्ठे दातव्यं गणकोत्तमैः ॥ २ ॥

छः नक्षत्र मुख पर धरे, छः पीठ पर धरे, गुदा पर तीन धरे, पैरों पर तीन धरे और पीठ पर तीन धरे। उत्तम ज्योतिषी इस प्रकार नक्षत्र स्थापित करे ॥ २ ॥

मुखे हानिश्च विज्ञेया धनहानिश्च पृष्ठके ।
हस्ते राजभयं ज्ञेयं राजमानं च गुह्यके ॥ ३ ॥

मुख के नक्षत्रों में हानि हो, पीठ के न र्रों में धन की हानि हो, हाथ के नक्षत्रों में राजा से भय हो, गुदा के नक्षत्रों में राजा से मान मिले ॥ ३ ॥

स्थानभ्रष्टो भवेत्पादे कंठे सर्वं सुखं भवेत् ।
जन्मनक्षत्रतश्चन्द्रनक्षत्रस्य फलं क्रमात् ॥ ४ ॥

पैरों में हो तो स्थान से भ्रष्ट हो, कण्ठ पर सब सुखदायी कहे । इस प्रकार जन्म नक्षत्र के क्रम से चन्द्र नक्षत्र का फल कहा गया है ॥ ४ ॥

अथ भौमचक्रम् ।

यस्मिन्नृक्षे भवेद्भौमस्तदादि त्रिणि मस्तके ।
त्रयं नेत्रे त्रयं मौलौ चतुष्कं बाहुयुग्मके ॥ १ ॥

जिस नक्षत्र पर मंगल हो, उससे आदि लेके तीन नक्षत्र मस्तक पर धरे, फिर तीन नेत्र पर और तीन ललाट पर धरे, चार नक्षत्र दोनों भुजाओं पर धरे ॥ १ ॥

कंठे द्वे हृदये पञ्च त्रयं गुह्ये श्रुतिः पदोः ।
मुखे रोगी धनं नेत्रे यशो मौलौ धनं हृदिः ॥ २ ॥

कंठपर दो नक्षत्र धरे, हृदय पर पाँच नक्षत्र धरें, गुदा पर तीन नक्षत्र धरे, पैरों पर चार नक्षत्र धरे। मुख पर हो तो रोग हो, नेत्रों में धन हो, मस्तक पर यश और हृदय पर धन हो ॥ ८ ॥

कंठे हिक्का रतिर्गुह्ये पादे देशान्तरं व्रजेत् ।
भवेद्रोगो दक्षिणे गणको भवेत् ॥ ३ ॥

कंठ पर पड़े तो हिचकी रोग और गुदा पर हो तो अरुचि रोग, पैरों में हो तो विदेश में गमन करें, बायीं भुजा पर हो तो रोग हो और यदि दाहिनी भुजा हो तो ज्योतिषी हो ॥ ३ ॥

अथ बुधचक्रम् ।

बुधो यत्र भवेदृक्षे तदादौ विलिखेत्क्रमात् ।
मुखे ज्ञानाय पंच स्युर्नेत्रे राज्याय पञ्च च ॥ १ ॥

जिस नक्षत्र पर बुध हो तो उसको क्रम से लिखे—तहाँ मुख पर पाँच नक्षत्र ज्ञानदायक हैं और नेत्र पर पाँच नक्षत्र राज्य देनेवाले होते हैं ॥ १ ॥

पंच कंठे सुखाय स्युर्हृदि ज्ञानाय पंच च ।
क्षयाय पादयोः पंच करे च ज्ञानदं द्वयम् ॥ २ ॥

कण्ठपर पाँच नक्षत्र सुखदायी होते हैं, हृदय पर पाँच नक्षत्र ज्ञानदायी होते हैं, फिर पैरों पर पाँच नक्षत्र नाश करनेवाले, हाथों पर दो नक्षत्र ज्ञानदायी होते हैं ॥ २ ॥

एकं गुह्यस्थनक्षत्रं क्षयदं परिकीर्तितम् ।
बुधमाजन्मभं यावद्बुधचक्रं विचारयेत् ॥ ३ ॥

गुदा पर एक नक्षत्र नाश करनेवाला होता है। इस प्रकार बुध के नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक बुधचक्र का विचार करे ॥ ३ ॥

अथ गुरुचक्रम् ।

मौलौ चत्वारि राज्यं युगपरिगणितं स्कंधयुग्मे च लक्ष्मी—
रेकं कंठे विभूतिर्मदनहरिमितं वक्षसि प्रीतिलाभः ।
षड्भिः पीडांघ्रियुग्मे जलधिपरिमितं वामबाहौ च मत्यु-
र्दृग्युग्मे त्रीणि दद्युर्नृपतिसमसुखं वाक्पतेश्चक्रमेतत् ॥ १ ॥

मस्तक पर चार नक्षत्र राज्यदायी हैं । चार नक्षत्र दोनों कंधों पर लक्ष्मी देनेवाले हैं। एक नक्षत्र कंठ पर ऐश्वर्य देनेवाला है। पाँच नक्षत्र हृदय में धरे वे प्रीति देनेवाले हैं। छः नक्षत्र दोनों पैरों पर धरे सो पीड़ा करनेवाले होते हैं। फिर चार नक्षत्र जो बायीं भुजा पर हैं, वे मृत्यु देनेवाले हैं। दोनों नेत्रों पर जो तीन नक्षत्र हैं, वे राजा के समान सुख देनेवाले हैं। यह बृहस्पति चक्र का शुभाशुभ फल कहा गया है ॥ १ ॥

अथ शुक्रचक्रम् ।

मौलौ पंच द्वयं वक्त्रे चतुष्कं हृदये स्वभात् ।
सप्त बाह्वोस्त्रयं गुह्ये द्वे जान्वोर्जलधिः पदे ॥ १ ॥

शुक्र के नक्षत्र से पाँच नक्षत्र मस्तक पर धरे, दो मुख पर धरे, चार नक्षत्र हृदय पर धरे, सात नक्षत्र भुजा पर धरे, तीन नक्षत्र गुदा पर, फिर चार नक्षत्र पैरों पर धरे ॥ १ ॥

सुखं हृदि तथा मौलौ गुह्यभे मरणं ध्रुवम् ।
मुखे सुभोजनं बाह्वौ मृत्युर्जानुपदोर्व्यथा ॥ २ ॥

हृदय पर तथा मस्तक पर जन्म नक्षत्र आवे तो सुख हो, गुदा पर हो तो मृत्यु हो, मुख पर सुन्दर भोजन मिले, भुजा पर मृत्यु और पैरों पर पड़े तो पीड़ा हो ॥ २ ॥

अथ शनिचक्रम् ।

यस्मिञ्छनिश्चरति वक्रगते तदृक्षं ।
चत्वारि दक्षिणकरेऽङ्घ्रियुगे भषट्कम् ।
चत्वारि वामकरगान्युदरे च पंच
मूर्ध्नि त्रयं नयनयोर्द्वितयं गुदे च ॥ १ ॥

जिस नक्षत्र पर शनि हो, वह नक्षत्र मुख पर धरे। फिर उससे आगे के चार नक्षत्र नरचक्र में दहिने हाथ पर धरे, दोनों चरणों पर छः नक्षत्र धरे, चार नक्षत्र बायें हाथ पर धरे, उदर पर पाँच रक्खे, मस्तक पर तीन, नेत्रों पर दो नक्षत्र धरे और गुदा पर भी दो ही नक्षत्र धरे ॥ १ ॥

मुखस्थिते भानुसुतेऽतिपीडा लक्ष्मीर्यशोदक्षिणहस्तसंस्थे ।
पादद्वये निष्फलता च वामे करे च युद्धे तनुसंशयश्च ॥ २ ॥

शनि मुख पर स्थित हो तो अत्यन्त पीड़ा हो, दाहिने हाथ पर हो तो लक्ष्मी और यश प्राप्त हो, दोनों पैर पर निष्फलता और बायें हाथ पर हो तो युद्ध में शरीर-नाश का सन्देह है ॥ २ ॥

हृद्यर्थो मस्तके राज्यं नेत्रयोः परमं सुखम् ।
गुदे च प्राणसंदेहः शनिचक्रे विनिर्दिशेत् ॥ ३ ॥

हृदय पर द्रव्य-प्राप्ति, मस्तक पर राज्य-प्राप्ति, नेत्रों पर परम सुख और गुदा पर प्राणों का संदेह हो, ऐसा शनिचक्र का फल कहे ॥ ३ ॥

मुखाच्चरति गुह्ये च गुह्यादायाति मस्तके ।
मस्तकाल्लोचने याति लोचनाद्धृदयं व्रजेत् ॥ ४ ॥

(कुछ लोगों का ऐसा भी मत है कि) शनैश्चर मुख से गुदा पर, गुदा से मस्तक पर आता है, मस्तक से नेत्रों पर आता है, नेत्रों से हृदय पर आता है ॥ ४ ॥

हृदयाद्वामहस्तं च वामहस्तात्पदद्वयम् ।
पादाच्च दक्षिणं हस्तं शनिचारोऽयमुच्यते ॥ ५ ॥

हृदय से बायें हाथ पर, बायें हाथ से दोनों पैरों पर और पैरों से दाहिने हाथ पर आता है। ऐसा यह शनिचार अर्थात् (शनि का चलना) कहा जाता है ॥ ५ ॥

अथ राहुचक्रम् ।

यस्मिन्नृक्षे भवेद्राहु तदादौ सप्त पादयोः ।
दक्षिणे च करे पंच शिरसि त्रीणि दापयेत् ॥ १ ॥

जिस नक्षत्र पर राहु हो—उससे सात नक्षत्र पैरों पर धरे, फिर पाँच नक्षत्र दाहिने हाँथ पर धरे, तीन नक्षत्र सिर पर धरे ॥ १ ॥

नक्षत्रे द्वे हृदि न्यस्य मुखे चैकं नियोजयेत् ।
पञ्च वामकरे दद्यान्नाभौ चैकं नियोजयेत् ॥ २ ॥

दो नक्षत्र हृदय पर धरे, एक मुख पर धरे, पाँच बायें हाथ पर धरे और एक नक्षत्र नाभि पर धरे ॥ २ ॥

गुह्यदेशे त्रयं दद्याद्राहुचक्रमिदं स्मृतम् ॥ ३ ॥

तीन नक्षत्र गुदा पर धरे, यही राहुचक्र कहाता है ॥

पादयोर्धनहानिः स्यात्सन्तापो दक्षिणे करे ।
मस्तके च भयं शत्रोर्हृदये दुर्जनप्रियः ॥ ४ ॥

पैरों पर जन्म नक्षत्र आवे तो धन की हानि हो, दाहिने हाथ पर हो तो सन्ताप हो, मस्तक पर हो तो शत्रु से भय हो और हृदय पर हो तो दुर्जनों से मित्रता हो ॥ ४ ॥

मुखे दुर्जन संहारो मत्युर्वामकरे भवेत् ।
नाभिगं सर्वनाशाय गुह्ये प्राणविनाशनम् ॥ ५ ॥

मुख पर आवे तो दुष्टजनों का नाश हो, बांये हाथ पर हो तो मृत्यु हो. नाभि पर हो तो सर्व वस्तु का नाश हो, गुदा पर जन्म नक्षत्र आवे तो प्राणों का नाश हो ॥ ५ ॥

अथ केतुचक्रम् ।

यस्मिन्नृक्षे भवेत्केतुस्तदादौ तु फलं वदेत् ।
नेत्रे द्वे रोगशोकाय मुखे लाभाय पञ्च च ॥ १ ॥

जिस नक्षत्र पर केतु हो उसका इस तरह फल कहे—जैसे पहले दो नक्षत्र नेत्रों पर रोग और शोक को देनेवाले और भुजा पर के पाँच नक्षत्र लाभ देने वाले होते हैं ॥ १ ॥

राज्यप्रदं त्रयं मौलौ नक्षत्रं परिकीर्तितम् ।
चतुष्कं दक्षिणे हस्ते नक्षत्र च यशःप्रदम् ॥ २ ॥

फिर तीन नक्षत्र मस्तक पर राज्य देनेवाले कहे हैं और चार नक्षत्र दाहिने हाथ पर यश देनेवाले कहे गये हैं ॥ २ ॥

वामहस्ते चतुष्कं च भयरोगकरं सदा ।
एकं नाभौ च नाशाय गुह्ये द्वे मृत्युकारके ॥ ३ ॥

बायें हाथ पर चार नक्षत्र सदा भय और रोग करनेवाले हैं, एक नक्षत्र नाभि पर नाश करनेवाला है, गुदा पर दो नक्षत्र मृत्यु करनेवाले हैं ॥ २८ ॥

ऋक्षाणि पादयोः षट्कं धननाशकराणि वै ।
केतुचक्रस्य माहात्म्यं देहस्थं ज्ञायते बुधैः ॥२९॥

पैरों पर छः नक्षत्र धन का नाश करनेवाले होते हैं। इस प्रकार पण्डित जनों ने केतु नराकारचक्र का शुभाशुभ फल कहा है ॥ २० ॥

अथ स्त्रीचक्रम् ।

मौलौ त्रयं मुखे सप्त स्तनयोरष्टभानि च ।
हृदि त्रयं त्रयं नाभौ त्रयं गुह्ये च विन्यसेत् ॥ १ ॥

सूर्य नक्षत्र से मस्तक पर तीन, मुख पर सात, स्तनों पर आठ, हृदय पर तीन, नाभि पर तीन और गुदा पर तीन ही नक्षत्र धरे ॥ १ ॥

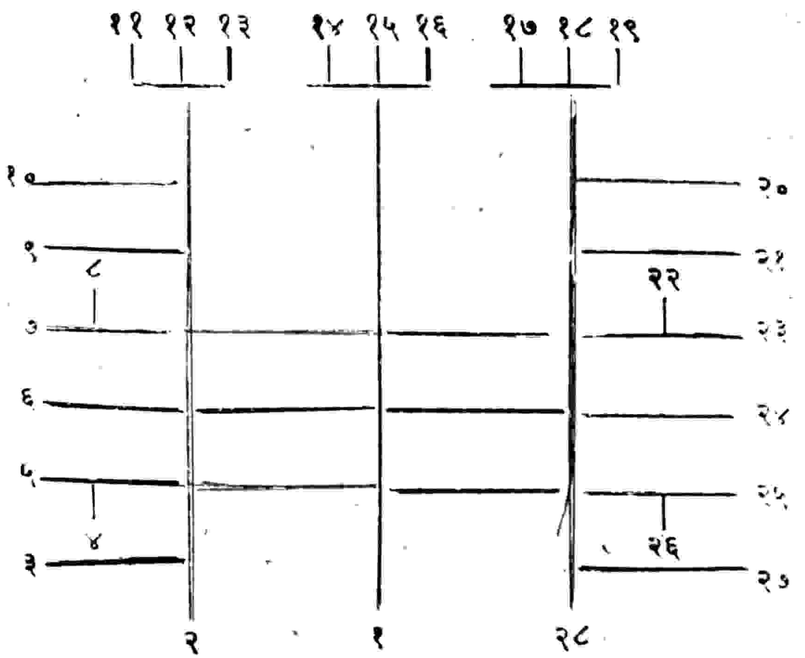
मौलौ संतापकृत्सूर्यो मुखे मिष्ठान्नदो भवेत् ।
स्तनयोः कामदः प्रोक्तो हृदये सुखदः स्त्रियः ॥ २ ॥

मस्तक पर जन्म-नक्षत्र पड़े तो सूर्य सन्ताप करनेवाला हो, मुख पर मिष्टान्न भोजन दे, स्तनों पर कामना दे और हृदय पर हो तो स्त्री को सुख देनेवाला हो ॥ २ ॥

नाभौ पतिसुखं दत्ते गुह्ये कामप्रदः सदा ।
सूर्यडिंभाख्यचक्रं तु स्त्रीणां प्रोक्तं विशेषतः ॥ ३ ॥

नाभि पर हो तो पति को सुख दे और गुदा पर हो तो कामना करे। इस प्रकार यह सूर्यडिंभाख्य चक्र स्त्रियों को विशेष फलदायक कहा है ॥ ३ ॥

अथ सूर्यकालानलचक्रम् ।



ऊर्ध्वास्तिस्रशूलाग्रे रेखास्तिस्रस्थिरः स्थिताः ।
द्वे द्वे रखे कोणयोश्च शृङ्गयुग्मं तथैकया ॥ १ ॥

ऊपर को तीन रेखा त्रिशूल के अग्रभाग आकारवाली खींचे. तीन रेखा तिरछी खींचे, दो-दो रेखा कोणों में खींचे और एक-एक रेखा से दो शृङ्ग बनावे ॥ १ ॥

मध्यत्रिशूलदंडाधो भानुनक्षत्रमालिखेत् ।
अन्यान्यभिजिता सार्द्धं विलिखेदंडमस्तके ॥ २ ॥

मध्य में त्रिशूल के दंड के नीचे सूर्य के नक्षत्र को लिखे। फिर अन्य अभिजित् सहित सब नक्षत्रों को क्रम से इन रेखाओं के मस्तक पर रखे ॥ २ ॥

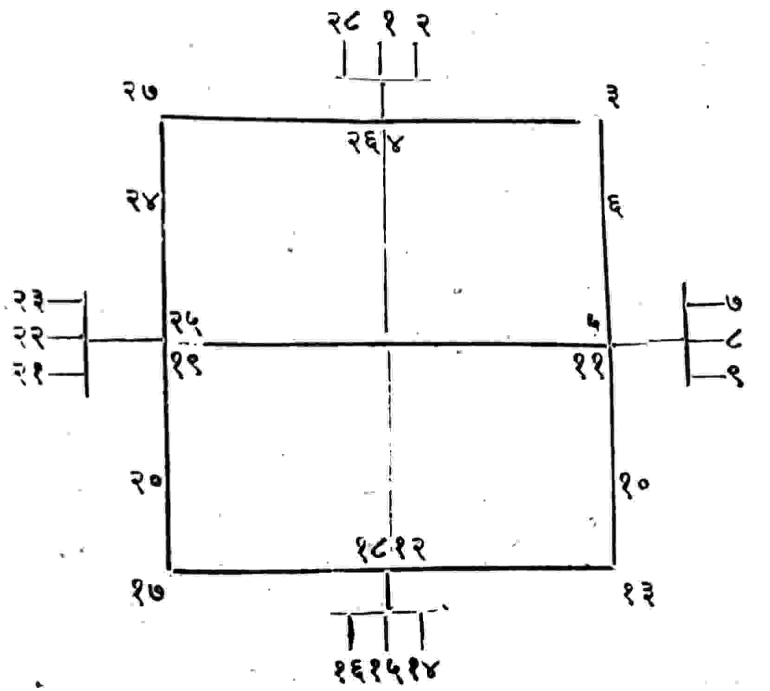
अधःस्थितैस्त्रिनक्षत्रैरुद्वेगवधबंधनम् ।
रेखाष्टके भवेल्लाभ ऋक्षषट्के तथा पुनः ॥ ३ ॥

नीचे स्थित तीन नक्षत्रों में जन्म का नक्षत्र आवे तो उद्वेग, भय तथा बंधन हो। रेखाष्टक अर्थात् चारों कोणों की ८ रेखा में हो तो लाभ हो, छः नक्षत्रों में अर्थात् तिरछी रेखाओं में हो तो भी लाभ हो ॥ ३ ॥

शृङ्गद्वये रोगभंगो मृत्युः शूलत्रये स्फुटम् ।
त्रिवादे विग्रहे युद्धे रोगार्त्ते गमने तथा ॥ ४ ॥
सूर्यकालानलं चक्रं कथितं गणकोत्तमैः ।

शृङ्ग के दोनों नक्षत्रों में रोग दूर हो, त्रिशूलाग्र की रेखाओं में अवश्य मृत्यु हो। विवाद, विग्रह, युद्ध, रोग-पीडा, गमन इनमें यह सूर्य कालानलचक्र विचारना पंडितजनों ने कहा है ॥ ४ ॥

अथ चन्द्रकालानलचक्रम् ।



चन्द्रकालानलं चक्रं व्योमाकारं लिखेद्बुधः ।
चतुर्दिक्षु त्रिशूलानि मध्यभिन्नानि कारयेत् ॥ १ ॥

पंडितों को चाहिए कि आकाश के आकार के चक्र की चारों दिशाओं में मध्य से भिन्न-भिन्न त्रिशूल निकाले ॥ १ ॥

पूर्वं त्रिशूलमध्यस्थं चंद्रभं च लिखेद्बुधः ।
अन्यान्यभिजिता सार्धं नक्षत्राणि लिखेत्क्रमात् ॥ २ ॥

पूर्व दिशा में त्रिशूल के मध्य में चन्द्र नक्षत्र लिख कर क्रम से अभिजित् सहित अन्य नक्षत्रों को लिखे ॥ २ ॥

नामभं च स्थितं यत्र तत्र ज्ञेयं शुभाशुभम् ।
त्रिशूलेषु भवेन्मृत्युर्मध्यमं बहिरष्टके ॥ ३ ॥

जिस दिशा में नाम का नक्षत्र आवे उसका शुभाशुभ फल कहे । यदि त्रिशूलों के मध्य में नक्षत्र आवे तो मृत्यु हो और बाहरके आठ नक्षत्रों में आवे तो मध्यम फल कहे ॥ ३ ॥

लाभं क्षेमं जयं प्रज्ञां चन्द्रे गर्भाष्टके वदेत् ।
शूले मध्ये च गर्भे च फलं ज्ञेयं द्विधा बुधैः ॥ ४ ॥

चन्द्रगर्भ के भीतर के ८ नक्षत्र आवें तो लाभ, क्षेम, जय और बुद्धि वढ़े और शूल के मध्य तथा गर्भ में आये हुए नक्षत्रों से दो प्रकार का फल जाने ॥ ४ ॥

लाभालाभौ सुखं दुःखं जयं चैव पराजयः ।
चंद्रकालानले चक्रे नित्यमेव विचारयेत् ॥ ५ ॥

लाभ-अलाभ, सुख-दुःख, जय-पराजय, यह चन्द्रकालानल चक्र में नित्य विचारना चाहिए ॥ ५ ॥

अथ यमदंष्ट्राचक्रम् ।

नवोर्ध्वगानि धिष्ण्यानि नव तिर्यग्गतानि च ।
अधोगतानि धिष्ण्यानि नव चैव लिखेद्बुधः ॥ १ ॥

नौ नक्षत्र ऊपर, नौ तिरछे, नौ अधोगत लिखे ॥ १ ॥

चतुर्नाडीकृते वेधे सव्यर्क्षत्रयं स्फुटम् ।
सर्पाकारस्य चक्रस्य कालचक्रं प्रयाजते ॥ २ ॥

चार नाड़ी में वेध किया जाना चाहिए । फिर बायीं ओर से तीन लिखे, इस प्रकार सर्पाकारचक्र तथा कालचक्र बन जाता है ॥ २ ॥

मुखमध्ये त्रयं धिष्ण्यं स्थितं कालमुखं विदुः ।
धिष्ण्यद्वयं च कोणस्थं कालदंष्ट्राद्वयं मतम् ॥ ३ ॥

मुख में तीन नक्षत्र रखे, वही कालमुख मानना चाहिए । दो नक्षत्र कोनों में धरे, ये दो कालदंष्ट्रा नक्षत्र कहे जाते हैं ॥ ३ ॥

दिनर्क्षभादितः कृत्वा जन्मर्क्षं यत्र संस्थितम् ।
मुखदंष्ट्रागतं मृत्युः शुभमन्यत्र संस्थिते ॥ ४ ॥

दिन के नक्षत्र से लेकर जन्म-नक्षत्र तक गिने । यदि मुख अथवा दंष्ट्रा में जन्म-नक्षत्र पड़े तो मृत्यु हो और अन्य जगह पड़े तो शुभ जाने ।

ज्वरिते नष्टनष्टे च विवादे विग्रहे रणे ।
मुखदंष्ट्रागतं नाम यस्य नस्य महद्भयम् ॥ ५ ॥

ज्वर का आना, ऊँचे से गिरना, चोट लगना, विवाद तथा युद्ध में जिनका नक्षत्र मुख वा दंष्ट्रा में आ जावे, उसे महान् भय होता है ॥ ५ ॥

—:०:—

अथ वेधफलम्

रवेर्वेधो मनस्तापो द्रव्यहानिर्धरासुते ॥ १ ॥

पूर्वोक्त वेध चक्र में सूर्य का वेध हो तो मन में सन्ताप और मंगल का वेध हो तो द्रव्य की हानि हो ॥ १ ॥

रोगपीडाकरो मन्दो राहुकेतु च मृत्युदौ ।
गुरोर्वेधे भवेल्लाभो रतिलाभश्च भार्गवे ॥ २ ॥

शनि के वेध में रोग तथा पीड़ा हो, राहु-केतु का वेध हो तो मृत्यु हो, बृहस्पति का वेध हो तो लाभ और शुक्र का वेध हो तो संभोग की प्राप्ति हो ॥ २ ॥

स्त्रीलाभश्चन्द्रवेधे च सुखं च बुधवेधतः ।
जन्मराशेश्च वेधे च फलमेतत्प्रकीर्तितम् ॥ ३ ॥

चन्द्रमा का वेध हो तो स्त्री का लाभ हो, बुध का वेध हो तो सुख जन्म राशि के वेध से यह फल कहा है ॥ ३ ॥

अथ दुर्गचक्रम्

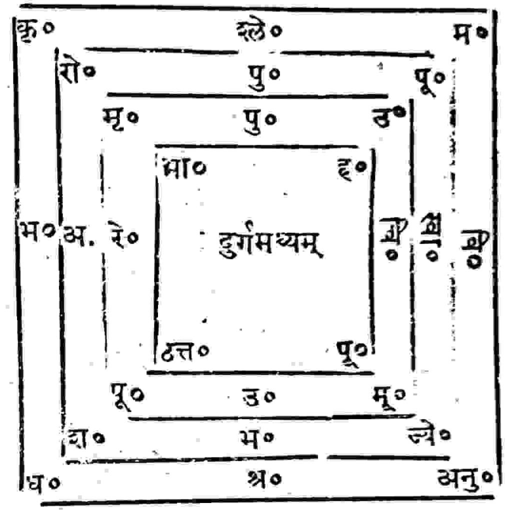
दुर्गाकारं लिखेच्चक्रं रेखात्रयसमन्वितम् ।
ईशाने ग्रामनक्षत्रं दत्वा चाभिजिता सह ॥ १ ॥

दुर्गाकार अर्थात् किले के सदृश चक्र लिखे। तीन रेखा (चक्र) ऊपर बनावे फिर गाँव के नक्षत्र को ईशान कोण में धर के अभिजित् सहित सब नक्षत्रों को धरे ॥ १ ॥

चतुष्कं च चतुष्कं च कोणेषु सकलेषु च ।
मध्ये मध्ये सग्रहं च दद्याद्धिक्षत्रयं त्रयम् ॥ २ ॥

सब कोणों में चार-चार और मध्य में तीन-तीन नक्षत्र ग्रहों सहित धरे ॥ २ ॥

दुर्गचक्रम्



दुर्गमध्ये स्थिते सूर्ये जलशोषः प्रजापते ।
चन्द्रे भंगः कुजे दाहो बुधे बुद्धियुतो नृपः ॥ ३ ॥

दुर्ग के मध्य में सूर्य आ जावे तो (किला में) जल का शोष हो जाय, चन्द्रमा हो तो दुर्ग भंग हो, मंगल हो तो दुर्ग जल जाय, बुध दुर्ग के मध्य में हो तो राजा बुद्धियुक्त होता है ॥ ३ ॥

बृहस्पतौ दुर्गमध्ये सुभिक्षं प्रचुरं भवेत् ।
चलचित्तौ नृपः शुक्रे भेदभगौ शनैश्चरे ॥ ४ ॥
राहुकेतौ दुर्गमध्ये विषदग्धा भवेन्नृपः ।

बृहस्पति दुर्ग में हो तो सुभिक्ष यानी अन्न-पानादि भरपूर रहे, शुक्र हो तो राजा का चित्त चलायमान हो, शनि हो तो किला टूट-फूट जावे, राहु-केतु दुर्ग के मध्य में आवें तो वह राजा विष से दग्ध हो ॥ ४ ॥

सूर्यः शनैश्चरौ भौमो राहुः केतुर्यदा स्थितः ।
एते ग्रहा दुर्गमध्ये दुर्गभंगः प्रजायते ॥ ५ ॥
गुरुः शुक्रो बुधश्चंद्रो दुर्गमध्ये यदा स्थितः ।
तदा दुर्गो न भंज्येत महेंद्रेणापि भेदितः ॥ ६ ॥

सूर्य, शनि, मंगल, राहु-केतु ये पापग्रह दुर्ग में स्थित हों तो दुर्ग भंग हो किला टूटे, बृहस्पति, शुक्र, बुध, चन्द्रमा ये ग्रह दुर्ग के बीच में आवें तो वह दुर्ग इन्द्र का तोड़ा हुआ भी नहीं टूटे ॥ ५-६ ॥

अथ रव्यादीनां मध्यमचारः ।

मासं शुक्रबुधादित्याः सपादद्विदिनं शशी ।
भौमस्त्रिपक्षं जीवोऽब्दं सार्धवर्षद्वयं शनिः ॥
राहुः केतुः सदा भुंक्ते सार्धमेकं तु वत्सरम् ॥ १ ॥

शुक्र, बुध, और सूर्य ये एक महीने तक एक राशि पर ठहरते हैं। चन्द्रमा सवा दो २। दिन तक, मंगल डेढ़ महीने तक, बृहस्पति एक वर्ष, शनि ढाई वर्ष तक और राहु-केतु डेढ़ वर्ष तक ठहरते है ॥ १ ॥

अथ जन्मलग्नज्ञानम् ।

न पश्यति शशी लग्नं लग्नस्वामी न पश्यति ।
न पश्यति यदा सूर्यः सोऽन्यजातस्तदोच्यते ॥ १ ॥

चन्द्रमा लग्न को न देखता हो और लग्न का स्वामी भी लग्न को न देखता हो, सूर्य भी लग्न को न देखता हो तो वह बालक अन्य से उत्पन्न हुआ जानना चाहिए ॥ १ ॥

सुतपतिरस्तगतो वा तापयुतः पापमध्यगो वा स्यात् ।
सन्ततिबाधां कुरुते केन्द्रे वा पापसंयुते चन्द्रे ॥ २ ॥

पाँचवें घर का पति अस्त हो अथवा पापग्रह से युक्त या पापग्रह के मध्य में आ रहा हो और चन्द्रमा पापग्रह से युक्त हो तो उस नर को सन्तान की बाधा रहे ॥ २ ॥

उदयाद्या गता नाड्यस्तासामर्धेन संख्यया ।
सूर्यर्क्षाद्यद्भवेदृक्षं तेन लग्नस्य निर्णयः ॥ ३ ॥

उदय से आदि लेकर गत घटियों को (इष्ट को) आधी कर तिस संख्या तक सूर्य के नक्षत्र से गिने। जितनी संख्या नक्षत्र की हो, उसी लग्न का नक्षत्र जानो (यह स्थूलमत माना जाता है) ॥ ३ ॥

तिस्रो मीने च मेषे च चतस्रो वृषकुम्भयोः ।
मिथुने मकरे पञ्च पञ्च चापे च कर्कटे ॥ ४ ॥

मीन और मेष लग्न में तीन स्त्री, वृष-कुम्भ में चार स्त्री, मिथुन-मकर में पाँच स्त्री और धन-कर्क में पाँच स्त्री कहे ॥ ४ ॥

सूतिकायां स्त्रियो ज्ञेयाः पञ्च कन्या तुलेपि च ।
योषितोऽन्येषु तिस्रः प्रोक्ता मनीषिभिः ॥ ५ ॥

कन्या-तुला में पाँच स्त्री सूतिका के पास और इनसे अन्य लग्न हो तो पंडित तीन ही स्त्री कहे ॥ ५ ॥

लग्ने तदीशपार्श्वे वा यावंतश्च खयायिनः ।
धनगा व्ययगाश्चैव तावत्यः सूतिका स्मृताः ॥ ६ ॥

लग्न में अथवा लग्न के स्वामी के पास जितने ग्रह हों, अथवा धन स्थान में वा बारहवें स्थान में जितने ग्रह हों, उतनी ही स्त्री सुत्रिका के समीप कहे ॥ ६ ॥

चन्द्रलग्नांतरस्थैर्वाग्रहैस्तुल्याश्च सूतिकाः ।
यथा राहुस्तथा शय्या मंगलः क्षेत्रभंगदः ॥ ७ ॥

अथवा चन्द्रमा के और लग्न के मध्य में जितने ग्रह हों उतनी ही स्त्री

कहना, जिस (दिशा) में राहु हो वहाँ शय्या बतावे, जिस घर में मंगल हो उससे नालच्छेदन का स्थान कहे ॥ ७ ॥

रविस्थाने भवेद्दीपः शनौ लोहंनिगद्यते ।
मेषादिद्वादशर्क्षेषु त्रिरावृत्तिक्रमेण तु ।
पूर्वादिकं गृहद्वारं जन्मकालान्निगद्यते ॥ ८ ॥

सूर्य के स्थान में दीपक और शनि के स्थान में लोहा कहना। मेष आदि राशियों की (लग्न की) तीन आवृत्ति क्रमशः करने से जन्म-काल से पूर्व आदि घर का द्वार कहे ॥ ८ ॥

अथाष्टोत्तरीदशाक्रमः ।

चत्वारि भानि पापेषु शुभेषु त्रीणि योजयेत् ।
आर्द्रादिमृगपर्यन्तं लिखेदभिजिता सह ॥ १ ॥

पापग्रहों के चार नक्षत्र, शुभग्रहों के तीन नक्षत्र जाने। आर्द्रा से मृगशिरा पर्यन्त अभिजित् सहित सब नक्षत्र धरे ॥ १ ॥

षडादित्ये च वर्षाणि चन्द्रे पञ्चदशैव तु ।
मङ्गले चाष्टवर्षाणि बुधे सप्तदशैव तु ॥ २ ॥
शनौ च दश वर्षाणि जीवे चैकोनविंशतिः ।
राहौ द्वादशवर्षाणि भार्गवे चैकविंशतिः ॥ ३ ॥

अष्टोत्तरी दशा में सूर्य की दशा ६ वर्ष, चन्द्रमा की १५ वर्ष, मङ्गल की ८ वर्ष, बुध की १७ वर्ष, शनैश्चर की १० वर्ष, बृहस्पति की १९ वर्ष, राहु की १२ वर्ष और शुक्र की दशा २१ वर्ष की होती है (सबकी दशा के वर्ष १०८ होते हैं ॥ २–३ ॥

मरमायुःप्रामणेन: गुणयेद्गतनाडिकाः ।
नक्षत्रस्य हरेद्भागं नवत्याप्तं विशोधयेत् ॥ ४ ॥

गत नाड़ी को परमायु प्रमाण से गुणें। फिर नक्षत्र का भाग देवे, शेष को ९ से गुणा करके फिर भाग देवे यह भुक्त-भोग्य दशा निकालने का क्रम है ॥ ४ ॥

आर्द्राचतुष्कमादित्ये चन्द्रे ज्ञेयं मघात्रयम् ।
भौमे हस्तचतुष्कं स्यादनुराधात्रिकं बुधे ॥ ५ ॥
पूषाचतुष्कं मन्दे च धनिष्ठात्रितयं गुरौ ।
राहौ चोत्तरचत्वारि कृत्तिकात्रितयं भृगौ ॥ ६ ॥

जिसका आर्द्रा से चार नक्षत्रों में जन्म हो तो सूर्य की दशा, मघा से ३ नक्षत्रों तक चन्द्रमा की दशा हस्त से ४ नक्षत्रों में मंगल की दशा, अनुराधा से ३ नक्षत्रों में बुध की दशा, पूर्वाषाढ़ से ४ नक्षत्रों में बृहस्पति की दशा, उत्तरा भाद्रपद से ४ नक्षत्रों में राहु की दशा और कृत्तिका से ३ नक्षत्र शुक्र की दशा होती है ॥ ५–६ ॥

दशा दशाहता कार्या भागो नन्दैर्विधीयते ।
अन्तर्दशेयं तस्यैव प्रथमं ज्ञायते दशा ॥ ७ ॥

जिस ग्रह की अन्तर्दशा जाननी हो उस ग्रह की जै वर्ष की दशा हो उसको उसी के वर्ष प्रमाण अङ्क से गुणे उसमें ९ का भाग देने से लब्ध मासादि अन्तर्दशा जाने। जिसकी दशा रहती है उसी की पहिले अन्तर्दशा होती है ॥ ७ ॥

सूर्यदशाफलम् ।

उद्विग्नचित्तः स्वजनस्य पीडा
शरीररोगी स्वजनैर्वियोगी ।
निपीडितो राजजनैः प्रवासी
नरोऽश्वघाती च रवेर्दशायाम् ॥ १ ॥

सूर्य की दशा में चित्त उद्विग्न रहे. स्वजन को पीड़ा शरीर में रोग. बन्धुजनों में वियोग, राजदूतों से पीड़ित, परदेश में रहनेवाला और घोड़ों से घात होवे ॥ १ ॥

सूर्यस्यान्तर्गते सूर्ये लाभो राजकुलोद्भवः ।
चित्तपीडा व्ययोऽर्थानां विप्रयोगश्च बन्धुभिः ॥ २ ॥

यदि सूर्य की दशा में सूर्य ही की अन्तर्दशा (मान मासादि ४।०।०।०) हो तो लाभ, चित्तमें पीड़ा, द्रव्य का खर्च तथा बन्धुओं से वियोग होवे ॥ २ ॥

शत्रुनाशोऽर्थलाभश्च चिन्तानाशः सुखागमः ।
सूर्यस्यान्तर्गते चन्द्रे व्याधिनाशश्च जायते ॥ ३ ॥

यदि सूर्य की दशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा (मान मासादि १०।०।०।०) हो तो शत्रु का नाश,-धन का लाभ, चिन्ता का नाश तथा व्याधि का नाश होता है ॥ ३ ॥

मणिर्मुक्ता कांचनं च जयो युद्धं सुखं तथा ।
प्राप्यते भूपतेर्मानं सूर्यस्यान्तर्गते कुजे ॥ ४ ॥

यदि सूर्य की दशा में मङ्गल की अन्तर्दशा (मान मासादि ५।१०।०।०) हो तो मणि, सोना, युद्ध में जय और राजाओं में सत्कार मिले ॥ ४ ॥

विलाससुखदारिद्र्यं जायते रोगसम्भवः ।
पामाविचर्चिकादीनि सूर्यस्यान्तर्गते बुधे ॥ ५ ॥

यदि सूर्य की दशा में बुध की अन्तर्दशा (मान मासादि ११।१०।०।०) हो तो विलास-सुख, रोग की उत्पत्ति, दाद्र और विचर्चिकादि रोग होते हैं ॥ ५ ॥

राजभीतिः शत्रुभीतिः कलहो दुःखमेव च ।
जायते धननाशश्च सूर्यस्यान्तर्गते शनौ ॥ ६ ॥

यदि सूर्य की दशा में शनि की अन्तर्दशा (मान मासादि ६।२०।०।०) हो तो राज-भय, शत्रु-भय, कलह, दुःख और धन का नाश होवे ॥ ६ ॥

निष्पापो व्यसनैर्हीनो नीरोगो धनवानपि ।
प्राप्नोति पदवीं गुर्वी सूर्यस्यान्तर्गते गुरौ ॥ ७ ॥

यदि सूर्य की दशा में गुरु की अन्तर्दशा (मान मासादि १२।२०।०।०) हो तो पाप से हीन, व्यसन के हीन, रोगरहित और धनी होवे ॥ ७ ॥

व्यसनं वित्तनाशश्च शंका चाथ पराजयः ।
सूर्यस्यान्तर्गते राहौ द्यूतं बन्धुजनैः कलिः ॥ ८ ॥

यदि सूर्य की दशा में राहु की अन्तर्दशा (मान मासादि ८।०।०।०) हो तो धन-नाश, शंका, पराजय, जुवा खेलनेवाला और बन्धुजनों से कलह करनेवाला होवे ॥ ८ ॥

ज्वररोगः शिरोरोगो नाना पीडा कलेवरे ।
क्वापि बन्धुजनैः क्लेशः सूर्यस्यान्तर्गते ॥ ९ ॥

यदि सूर्य की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा (मान मासादि १४।०।०।०) हो तो ज्वररोग, शिरोरोग, शरीर में अनेक प्रकार की पीड़ा और कभी-कभी बन्धुजनों से दुःख होवे ॥ ९ ॥

चन्द्रदशाफलम् ।

गजाश्वरत्नानि महाप्रतापो
मिष्टाशनं विविनं सुखं च ।
अरोगता सर्वजनानुरागो
भवेद्दशायां शशिनो नरस्य ॥ १ ॥

चन्द्रमा की दशा में मनुष्य को हाथी, घोड़ा, रत्न, महाप्रताप मिष्ठान्न-पान, अनेक प्रकार के सुख, आरोग्यता और सबसे प्रेम होवे ॥ १ ॥

शोभनस्त्रीसमायोगो वस्त्राभरणसम्पदः ।
शुभकन्यासमुत्पत्तिश्चन्द्रे चन्द्रान्तरे गते ॥ २ ॥

यदि चन्द्रमा की दशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा (मान मासादि २५।०।०।०) हो तो सुन्दर स्त्री से संयोग, वस्त्र, आभरण (गहने), संपदा और सुन्दर कन्या की उत्पत्ति होवे ॥ २ ॥

असृक्पित्तरुजां पीडा वह्निचौराद्युपद्रवाः ।
कलहः स्त्रीजनैः सार्द्धं चन्द्रस्यान्तर्गते कुजे ॥ ३ ॥

यदि चन्द्रमा की दशा में मङ्गल की अन्तर्दशा (मान मासादि १३।१०।०।०) हो तो रक्त पित्त रोग से पीड़ा, अग्नि, चौर आदि से उपद्रव और स्त्रियों से कलह होवे ॥ ३ ॥

सुखं सर्वत्र लाभं च गजवाजिधनादिकम् ।
गोमहिष्यादिकं यच्च चन्द्रस्यान्तर्गते बुधे ॥ ४ ॥

यदि चन्द्रमा की दशा में बुध की अन्तर्दशा का (मान मासादि २८।१०।०।०) हो तो सब जगह सुख तथा लाभ हो। घोड़ा, धन, गाय, भैंस आदि की प्राप्ति होवे ॥ ४ ॥

उद्वेगो वित्तनाशश्च शोकः शत्रूदयाद्भयम् ।
कलहो बन्धुवर्गेण चन्द्रस्यान्तर्गते बुधे ॥ ५ ॥

यदि चन्द्रमा की दशा में शनि की अन्तर्दशा (मान मासादि १६।२०।०।०) हो तो उद्वेग, धन का नाश, शत्रु के उदय से भय और भाइयों से कलह होवे ॥ ५ ॥

धनधर्मादिसम्पत्तिः वस्त्रालंकारभूषणम् ।
सर्वत्र लभते लाभं चन्द्रस्यांतर्गते गुरौ ॥ ६ ॥

चन्द्रमा की दशा में यदि बृहस्पति की अन्तर्दशा (मान मासादि ३१।२०।०।०) हो तो धन, धर्मादि सम्पत्ति हो तथा वस्त्र, अलंकार भूषण मिले और सब जगह लाभ हो ॥६॥

रिपुरोगाग्निभीतिश्च बन्धुनाशो धनक्षयः ।
चन्द्रस्यांतर्गते राहौ भवेदुद्वेगचिंतना ॥ ७ ॥

यदि चन्द्रमा की दशा में राहु की अन्तर्दशा (मान मासादि २०।०।०।०) हो तो शत्रु, रोग, अग्नि का भय और बन्धुओं का नाश, धन का क्षय, उद्वेग तथा चिन्ता होवे ॥ ७ ॥

उत्तमस्त्रीजनैर्योगो दिव्यकन्यासमुद्भवः ।
धर्मयुक्तधनप्राप्तिश्चन्द्रस्यान्तर्गते सिते ॥ ८ ॥

यदि चन्द्रमा की दशा शुक्र की अन्तर्दशा (मान मासादि ३५।०।०।०) हो तो सुन्दर स्त्री से संयोग, सुन्दर कन्या की उत्पत्ति और धर्मयुक्त धन की प्राप्ति हो ॥ ८ ॥

लाभो राजकुलेभ्यश्च व्याधिनाशो रिपुक्षयः ।
जायते सुखमैश्वर्यं चन्द्रस्यान्तर्गते रवौ ॥ ९ ॥

यदि चन्द्रमा की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा (मान मासादि १०।०।०।०) हो तो राजा के कुल से लाभ, व्याधि का नाश, शत्रु का नाश, सुख और धन की प्राप्ति हो ॥ ९ ॥

भौमदशाफलम् ।

शस्त्राभिघातो नृपतेश्च पीडा
चौराग्निरोगाश्च धनस्य हानिः ।
कार्य्याभिघातश्च नरस्य दैन्यं
भवेद्दशायां धरणीसुतस्य ॥ १ ॥

मङ्गल की दशा हो तो शस्त्र से चोट लगे, राजा से पीड़ा, चोर, [illegible] तथा रोग से पीड़ा, धन की हानि, कार्य का नाश और दीनता हो ॥ १ ॥

शत्रुभिः सह संमर्दो बन्धुभिः सह विग्रहः ।
स्त्रीसंगो रक्तपित्ताद्भीर्भौमस्यान्तर्गते कुजे ॥ २ ॥

यदि मङ्गल की दशा में मङ्गल की ही अन्तर्दशा (मान [illegible] ०।२।२।०।०) हो तो शत्रुओं से युद्ध, बन्धुओं से विग्रह, स्त्री से [illegible] और रक्तपित्त से भय हो ॥ २ ॥

शत्रुचौरनृपादिभ्यो महाभीतिः प्रजायते ।
महाज्वरकृता पीडा भौमस्यान्तर्गते बुधे ॥ ३ ॥

यदि मंगल की दशा में बुध की अन्तर्दशा (मान मासादि १५।३।२०।०) हो तो शत्रु, चोर और राजा आदि से विशेष भय हो ॥ ३ ॥

धनक्षयो महादुःखं जायतेऽत्र निरन्तरम् ।
भौमस्यान्तर्गते मन्दे नरस्य विपदः सदा ॥ ४ ॥

यदि मंगल की दशा में शनि की अन्तर्दशा (मान मासादि ८।२६।४०।०) हो तो नाश, निरन्तर महादुःख और सदा मनुष्य को विपत्ति रहे ॥ ४ ॥

धनलाभस्तीर्थलाभो देवब्राह्मणपूजनम् ।
भौमस्यान्तर्गते जीवे नृपात्किंचिद्भयं वदेत् ॥ ५ ॥

मंगल की दशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा (मान मासादि १६।२६।४०।०) हो तो धन-लाभ, तीर्थ-लाभ, देवता-ब्राह्मण की पूजा करनेवाला और राजा से कुछ भय न पावे, ऐसा कहे ॥ ५ ॥

शस्त्रचौराग्निभीतिश्च कृषिस्त्रीधनपीडनम् ।
भौमस्यान्तर्गते राहौ यत्र तत्र भयं वदेत् ॥ ६ ॥

यदि मंगल की दशा में राहु की अन्तर्दशा (मान मासादि १०।२०।०।१०) हो तो शस्त्र, चोर, अग्नि-भय, खेती, स्त्री, धन की पीड़ा और जहाँ-तहाँ से भय हो ॥ ६ ॥

व्याधयः शत्रुभीतिश्च धनक्षय उपद्रवः ।
विदेशगमनं नृणां भौमस्यान्तर्गते सिते ॥ ७ ॥

यदि मंगल की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा (मान मासादि २८।२०।०।०) हो तो व्याधि, शत्रु से भय, धन-नाश, उपद्रव तथा मनुष्यों का परदेश गमन हो ॥ ७ ॥

आरोग्यं सर्वतोभद्रं राजपक्षे जयोत्सवः ।
जायतेऽत्र धनप्राप्तिर्भौमस्यान्तर्गते रवौ ॥ ८ ॥

यदि मङ्गल की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा (मान मासादि ५।१०।०।०) हो तो आरोग्य, सबसे कुशल, राजपक्ष में जय तथा उत्सव और धन की प्राप्ति होवे ॥ ८ ॥

नानावृत्तिसमुत्पन्नो मणिमुक्तासुखान्वितः ।
जायते मनुजो नित्यं चन्द्रे भौमान्तरे गते ॥ ९ ॥

यदि मङ्गल की दशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा (मान मासादि १३।१०।०।०) हो तो नाना प्रकार की वृत्ति से उत्पन्न मणि, मुक्ता और सुख से युक्त मनुष्य होवे ॥ ९ ॥

अथ बुधदशाफलम् ।

नानाविधैरर्थशतैः समेतो
दिव्यांगनाकेलियुतो विलासी ।
सर्वार्थसिद्धिर्बहुमानितोऽत्र
भवेद्दशायां मनुजो बुधस्य ॥ १ ॥

बुध की दशा हो तो मनुष्य अनेकों प्रकार के सैकड़ों द्रव्यों से युक्त, सुन्दर स्त्री से विहार करनेवाला, विलासी तथा सर्व अर्थ की सिद्धिवाला और बहुत पूज्य होता है ॥ १ ॥

बुद्धिधर्मानुरागश्च मित्रबन्धुसमागमः ।
शत्रूद्भवा देहपीडा बुधस्यान्तर्गते बुधे ॥ २ ॥

यदि बुध की दशा में बुध की ही अन्तर्दशा (मान मासादि २२।३।२०।०) हो तो बुद्धिमान्, धर्मानुरागी, मित्र तथा बन्धुओं से समागम, शत्रु की उत्पत्ति और शरीर की पीड़ा हो ॥ २ ॥

अकस्माच्छत्रु संयोगो ह्यकस्मादर्थसंग्रहः ।
संपर्कोऽग्निगरादीनां बुधस्यान्तर्गते शनौ ॥ ३ ॥

यदि बुध की दशा में शनि की अन्तर्दशा (मान मासादि १८।२६।४०।०) हो तो अकस्मात् शत्रु से संयोग और अकस्मात् द्रव्य का संग्रह तथा विष (जहर) और अग्नि का सम्पर्क हो ॥ ३ ॥

स्वर्णादिधातुलाभश्च शरीरारोग्यमेव च ।
सम्पत्तिधर्म्मलाभश्च बुधस्यान्तर्गते गुरौ ॥ ४ ॥

यदि बुध की दशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा (मान मासादि ३६।२६।४०।०) हो तो सुवर्ण आदि धातु का लाभ और शरीर में आरोग्य, संपत्ति तथा धन का लाभ हो ॥ ४ ॥

प्रचण्डोत्साहसत्त्वं च नानाकार्यरणोद्यमः ।
बुधस्यान्तर्गते राहौ धनधर्मादिभोगयुक् ॥ ५ ॥

यदि बुध की दशा में राहु की अन्तर्दशा (मान मासादि २२।२०।०।०) हो तो अत्यन्त पराक्रम हो, अनेक कार्य तथा रण में उद्यम करनेवाला एवं धन और धर्म से युक्त हो ॥ ५ ॥

गुरुदेवार्चने प्रीतिर्ज्ञानधर्मरतिस्तथा ।
वस्त्रालङ्करणैर्युक्तो बुधस्यान्तर्गते सिते ॥ ६ ॥

यदि बुध की दशा में शुक्र ही की अन्तर्दशा (मान मासादि ३९।२०।०।०) हो तो गुरु और देवताओं के पूजन में प्रीति, ज्ञान तथा धर्म में प्रीति और वस्त्र तथा अलंकारों से विभूषित होवे ॥ ६ ॥

व्याधिशत्रुभयैर्मुक्तः पुत्रधर्मधनागमः ।
जायते राजमान्यश्च बुधस्यान्तर्गते रवौ ॥ ७ ॥

यदि बुध की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा (मान मासादि ११।१०।०।०) हो तो रोग, शत्रु और भय से छूटे । पुत्र, धर्म तथा धन का आगम हो और राजाओं में पूज्य होवे ॥ ७ ॥

क्षयरोगोऽत्र कुष्ठं च नानापीडा कलेवरे ।
बुधस्यान्तर्गे सोमे गलरोगश्च जायते ॥ ८ ॥

यदि बुध की दशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा (मान मासादि २८।१०।०।०) हो तो सिर का रोग, कुष्ठरोग, अनेक प्रकार की देह-पीड़ा और गलरोग होवे ॥ ८ ॥

शिरोरोगी गण्डरोगी नानाक्लेशैर्निपीडितः ।
यमभीतिश्चोरभीतिर्बुधस्यान्तर्गते कुजे ॥ ९ ॥

यदि बुध की दशा में मङ्गल की अन्तर्दशा (मान मासादि १५।३।२०।०) हो तो सिर का रोगी, गंडरोगी, अनेक प्रकार के रोगों से पीड़ित तथा यम और चोरों से भय होवे ॥ ९ ॥

अथ शनिदशाफलम् ।

मिथ्यापवादो विमुखोऽत्र बन्धो-
र्बन्धश्च बन्धोश्च निराशिता च ।
कार्याणि शून्यानि धनस्य हानिः
क्लेशा भवन्त्येव शनेर्दशायाम् ॥ १ ॥

शनि की दशा में झूठा कलंक, बन्धु से विमुख, बन्धुओं से निराशता, कार्य-शून्य, धन की हानि और क्लेश हो ॥ १ ॥

शरीरे जायते पीडा पुत्रदारैश्च विग्रहः ।
विदेशगमनं हानिः शनेरन्तर्गते शनौ ॥ २ ॥

यदि शनि की दशा में शनि ही की अन्तर्दशा (मान मासादि ११।३।२०।०) हो तो शरीर में पीड़ा, पुत्र तथा स्त्री से बिगाड़ और विदेश गमन तथा हानि होवे ॥ २॥

देवगोब्राह्मणाचार्य्यपुत्रमित्रधनागमः ।
प्राप्नोति गुरुसम्मानं शनेरन्तर्गते गुरौ ॥ ३ ॥

यदि शनैश्चर की दशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा (मान मासादि

२१।३।२०।०) हो तो देवता, गो, ब्राह्मण, आचार्य, पुत्र, मित्र और धन का आगम होवे ॥ ३ ॥

ज्वरातीसारपीडा च शत्रुभीतिर्धनक्षयः ।
शनेरन्तर्गते राहौ शस्त्रघातश्च जायते ॥ ४ ॥

यदि शनि की दशा में राहु की अन्तर्दशा (मान मासादि १३।१०।०।०)। हो तो ज्वर तथा अतिसार की पीड़ा हो, शत्रु से भय, धन-नाश और शस्त्रों से घात होवे ॥ ४ ॥

जायाधनसुतैर्युक्तो जायतेऽत्र जयान्वितः ।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं शनेरन्तर्गते सिते ॥ ५ ॥

यदि शनि की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा (मान मासादि २३।०।०।०) हो तो वह मनुष्य स्त्री धन से युक्त, जय में संयुक्त, आयु, आरोग्य तथा ऐश्वर्यवान् होवे ॥ ५ ॥

पुत्रमित्रकलत्राणां हानिश्चार्थस्य जायते ।
शनेरन्तर्गते भानौ जीवितस्यापि संशयः ॥ ६ ॥

यदि शनि की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा (मान मासादि ६।२०।०।०) हो तो पुत्र, मित्र, स्त्री, धन की हानि और जीने में भी सन्देह होवे ॥ ६ ॥

गोमहिष्यादिलाभाः स्युः स्त्रीलाभो विजयः सुखम् ।
जायते कन्यकापत्यं शनेरन्तर्गते विधौ ॥ ७ ॥

यदि शनि की दशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा (मान मासादि १६।२०।०।०) हो तो गौ, भैंस आदि का लाभ, स्त्री-लाभ, विजय, सुख और अधिक कन्या उत्पन्न होवे ॥ ७ ॥

देशत्यागो धनत्यागः शत्रुव्याधिसमागमः ।
शनेरन्तर्गते भौमे जायतेऽत्र महद्भयम् ॥ ८ ॥

यदि शनि की दशा में मंगल की अन्तर्दशा (मान मासादि ८।२६।४०।०) हो तो देश-त्याग, धन त्याग, शत्रु, व्याधि का आगम और महाभय हो ॥ ८ ॥

धनप्राप्तिश्च बन्धुभ्यः सौभाग्यं विजयं सुखम् ।
सभायां मान्यतां विद्याच्छनेरन्तर्गते बुधे ॥ ९ ॥

यदि शनि की दशा में बुध की अन्तर्दशा (मान मासादि १८।२६।४०।०) हो तो भाइयों से धन का लाभ, सौभाग्य, विजय, सुख और सभा में सत्कार होवे ॥ ९ ॥

अथ बृहस्पतिदशाफलम् ।

धर्मार्थकामैः परिपूरितोऽत्र
राजप्रतापैर्विनयैः समेतः ।
धनी जयी दारसुतादियुक्तो
गुरोर्दशायां च नरो निरोगी ॥ १ ॥

बृहस्पति की दशा में धर्म, अर्थ, काम से परिपूर्ण, राज्य प्रताप और नम्रता से युक्त और नीरोग शरीर होवे ॥ १ ॥

पुत्रोत्पत्तिर्धनोत्पत्तिः सर्वरत्नपरिग्रहः ।
जायते रत्नलाभश्च गुरोरन्तर्गते गुरौ ॥ २ ॥

यदि गुरु की दशा में गुरु की अन्तर्दशा (मान मासादि ४०।३।२०।०) हो तो पुत्र की उत्पत्ति, धन की उत्पत्ति, सब प्रकार के रत्नों का संग्रह और रत्नों का लाभ होवे ॥ २ ॥

विस्फोटकादिमोहश्च शोको रोगो धनक्षयः ।
गुरोरन्तर्गते राहौ रिपूणां च भयं भवेत् ॥ ३ ॥

यदि बृहस्पति की दशा में राहु की अन्तर्दशा (मान मासादि २५।१०।०।०) हो तो विस्फोट (शीतला) आदि रोग तथा मोह, शोक, रोग, धन का नाश और शत्रुओं का भय होवे ॥ ३ ॥

कलहो मानसी पीडा वित्तनाशो महद्भयम् ।
जायते स्त्रीवियोगश्च गुरोरन्तर्गते सिते ॥ ४ ॥

यदि गुरु की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा (मान मासादि ४४।१०।०।०) हो तो कलह, मानसिक चिन्ता, द्रव्य-नाश, महाभय और स्त्री से वियोग होवे ॥ ४ ॥

शत्रुनाशो जयो नित्यं नृपपूजा महत्सुखम् ।
प्रचण्डैः सह सङ्गश्च गुरोरन्तर्गते रवौ ॥ ५ ॥

यदि गुरु की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा (मान मासादि १२।२०।०।०) हो तो शत्रु का नाश, नित्य जय, राजाओं में सम्मान, बहुत सुख और क्रूर मनुष्यों के साथ मिलाप होवे ॥ ५ ॥

बहुस्त्रीसङ्गमः क्षीणः शत्रु पीडाविवर्जितः ।
गुरोरन्तगते चन्द्रे कन्याजन्म च जायते ॥ ६ ॥

यदि गुरु की दशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा (मान मासादि ३१।२०।०।०) हो तो बहुत स्त्रियों के संग से क्षीण, शत्रुओं की पीड़ा से रहित और कन्या जन्म होवे ॥ ६ ॥

रिपुनाशो धनप्राप्तिः सर्वकार्यसमागमः ।
सुखं सौभाग्यमारोग्यं गुरोरन्तर्गते कुजे ॥ ७ ॥

यदि बृहस्पति की दशा में मंगल की अन्तर्दशा (मान मासादि १६।२६।४०।०) हो तो शत्रु का नाश, धन का लाभ, सर्वकार्यों का समागम, सुख-सौभाग्य और आरोग्य होवे ॥ ७ ॥

बुद्धिविज्ञानकौशल्यं धनबन्धुसमागमः ।
गुरुदेवाग्निमक्तिश्च गुरोरन्तर्गते बुधे ॥ ८ ॥

यदि बृहस्पति की दशा में बुध की अन्तर्दशा (मान मासादि ३५।२६।४०।०) हो तो बुद्धि और ज्ञान में निपुण, धन, बन्धुजनों का समागन, गुरु देवता तथा अग्नि में श्रद्धा होवे ॥ ८ ॥

वेश्यास्त्रीद्यूतमद्यैश्च धनधान्यादिसंक्षयः ।
जायते लुप्तधर्म्मोऽत्र गुरोरन्तर्गते शनौ ॥ ९ ॥

यदि बृहस्पति की दशा में शनि की अन्तर्दशा (मान मासादि २१।३।२०।०) हो तो वेश्या, स्त्री, जुवा, मदिरा आदि से धन-धान्य और धर्म का नाश होवे ॥ ९ ॥

अथ राहुदशाफलम् ।

ज्ञानस्य हानिर्गमनं विदेशे
धर्मस्य हानिर्विविधाश्च रोगाः ।
सर्वत्र शून्यं तनुसंशयश्च
राहोर्दशायां नियतं नरस्य ॥ १ ॥

राहु की दशा में ज्ञान की हानि, विदेश की यात्रा, धर्म की हानि, अनेक प्रकार के रोग, सब जगह कार्य की हानि और जीवन में भी सन्देह होवे ॥ १ ॥

द्विजेन्द्रैः सह संसर्गः स्त्रीलाभो धनसंचयः ।
राहोरन्तर्गते राहौ कलहो बन्धुभिः सह ॥ २ ॥

यदि राहु की दशा में राहु की ही अन्तर्दशा (मान मासादि २६।०।०।०) हो तो श्रेष्ठ ब्राह्मणों के साथ संसर्ग, स्त्री का लाभ, धन का संचय और बन्धुजनों से कलह होवे ॥ २ ॥

धनिष्ठः सत्यवादी च धनी रोगविवर्जितः ।
जायते राजमान्यश्च राहोरन्तर्गते सिते ॥ ३ ॥

यदि राहु की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा (मान मासादि २८।०।०।०) हो तो धर्मवान्, सत्यवादी, धनी, रोगरहित तथा राजा से पूजनीय होवे ॥ ३ ॥

पुत्रदुःखं महाभीतिर्धननाशो विचिन्तना।
अग्निचौरभयं क्वापि राहोरन्तर्गते रवौ॥ ४॥

यदि राहु की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा (मान मासादि ८।०।०।०) हो तो पुत्र का दुःख, महाभय, धन-नाश, विशेष चिन्ता, कहीं-कहीं अग्नि और चोर का भय होवे॥ ४॥

स्त्रीनाशो धननाशश्च कलहो बान्धवैः सह।
राहोरन्तर्गते चन्द्रे जायते च महाभयम्॥ ५॥

यदि राहु की दशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा (मान मासादि २०।०।०।०) हो तो स्त्री और धन का नाश, बन्धुओं से कलह और महा भय होवे॥ ५॥

विषशस्त्राग्निचौरेभ्यो भयं प्राप्नोति दारुणम्।
राहोरन्तर्गते भौमे जीवितस्यापि संशयः॥ ६॥

यदि राहु की दशा में मंगल की अन्तर्दशा (मान मासादि १०।२०।०।०) हो तो विष, शस्त्र, अग्नि और चोरों से कठिन भय हो तथा जीने में भी संशय रहे॥ ६॥

सुहृद्बन्धुजनैर्योगो धनधान्यसमागमः।
न कश्चिज्जायते क्लेशो राहोरन्तर्गते बुधे॥ ७॥

यदि राहु की दशा में बुध की अन्तर्दशा (मान मासादि २२।२०।०।०) हो तो मित्र तथा बन्धुजनों से संग, धन-धान्य का सब प्रकार से आगम और किसी प्रकार का दुःख न होवे॥ ७॥

स्वदेशस्य परित्यागः कुटुम्बैस्सह सङ्गमः।
भृत्यार्थयोस्तथा नाशो राहोरन्तर्गते शनौ॥ ८॥

यदि राहु की दशा में शनि की अन्तर्दशा (मान मासादि १३।१०।०।०) हो तो अपने देश का परित्याग, कुटुम्बी के साथ मेल तथा सेवक और धन का नाश होवे॥ ८॥

रोगहानिः सुखी नित्यं देवब्राह्मणपूजनम्।
धनधान्यसमृद्धिश्च राहोरन्तर्गते गुरौ॥ ९॥

यदि राहु की दशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा (मान मासादि २५।१०।०।०) हो तो रोग की हानि, नित्य ही सुख, देव-ब्राह्मणों की पूजा करनेवाला और धन-धान्य की समृद्धिवाला होवे॥ ९॥

अथ शुक्रदशाफलम्।

नृपेन्द्रमान्यो धनलाभपूर्णो
हस्त्यश्वयुक्तः प्रमदानुरक्तः।
मन्त्रप्रयोगे निपुणश्च शास्त्रे
कवेर्दशायां कुशली मनुष्यः॥ १॥

शुक्र की दशा में मनुष्य राजाओं का मान्य, धन के लाभ से पूर्ण, हाथी, घोड़ों से युक्त, स्त्री में प्रीति करनेवाला, मंत्र के प्रयोग तथा शास्त्र में निपुण और कुशल होवे॥ १॥

मानवृद्धिः सुतोत्पत्तिर्धनधान्यागमं सुखम्।
स्वर्णाम्बरादिलाभश्च सितस्यान्तर्गते सिते॥ २॥

यदि शुक्र की दशा में शुक्र की ही अन्तर्दशा (मान मासादि ४९।०।०।०) हो तो मान की वृद्धि, पुत्र की उत्पत्ति, धन और धान्य का आगम, सुख, सुवर्ण तथा वस्त्रादिकों का लाभ होवे॥ २॥

शत्रुनाशो जयो नित्यं नृपाल्लाभो महत्सुखम्।
प्रचण्डैः सह संसर्गः शुक्रस्यान्तर्गते रवौ॥ ३॥

यदि शुक्र की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा (मान मासादि १४।०।०।०) हो तो शत्रुओं का नाश, नित्य ही विजय, राजाओं से लाभ और बहुत सुखवाला तथा प्रचण्ड मनुष्यों के साथ समागम होवे॥ ३॥

गुरुदेवाग्निभक्तिश्च दुःखं मध्यं सुखं तथा ।
शुक्रस्यान्तर्गते चंद्रे शत्रुमित्रसमागमः ॥ ४ ॥

यदि शुक्र की दशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा (मान मासादि ३५।०।०।०) हो तो गुरु, देवता और अग्नि में भक्ति, दुःख और सुखयुक्त शत्रु तथा मित्र से समागम होवे ॥ ४ ॥

संग्रामे च रिपुं जित्वा धनं कीर्तिश्च लभ्यते ।
आरोग्यं सुखमैश्वर्यं शुक्रस्यान्तर्गते कुजे ॥ ५ ॥

यदि शुक्र की दशा में मङ्गल की अन्तर्दशा (मान मासादि २८।२०।०।०) हो तो संग्राम में शत्रुओं को जीत कर धन और कीर्ति की प्राप्ति, आरोग्य, सुख तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति होवे ॥ ५ ॥

नखरोगः शिरोरोगो दुःखमामाशयोद्भवम् ।
शरीरे जायते पीडा शुक्रस्यान्तर्गते बुधे ॥ ६ ॥

यदि शुक्र की दशा में बुध की अन्तर्दशा (मान मासादि ३९।२०।०।०) हो तो नखों में रोग, सिर में रोग, आमाशय में उत्पन्न दुःख और शरीर में पीड़ा होवे ॥ ६ ॥

दुष्टस्त्रीमिश्र संसर्गः सुखं चार्थसमागमः ।
शत्रुनाशः सुहृल्लाभः शुक्रस्यान्तर्गते शनौ ॥ ७ ॥

यदि शुक्र की दशा में शनि की अन्तर्दशा (मान मासादि २३।१०।०।०) हो तो दुष्ट स्त्री के साथ संसर्ग हो, सुख तथा धन का समागम, शत्रु का नाश और मित्र का समागम होवे ॥ ७ ॥

धनधान्यसमृद्धिश्च नानाधर्मसमन्वितः ।
श्रेणीप्रभुत्वमाप्नोति शुक्रस्यान्तर्गते गुरौ ॥ ८ ॥

यदि शुक्र की दशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा (मान मासादि ४४।१०।०।०) हो तो धन-धान्य की समृद्धि, नाना प्रकार के धर्म से युक्त और बहुत जनों का मालिक होवे ॥ ८ ॥

वैरं विषादो दुःखं च सदोद्वेगो महाभयम् ।
शुक्रस्यान्तर्गते राहौ कदाचित्सुखमाप्नुयात् ॥ ९ ॥

यदि शुक्र की दशा में राहु की अन्तर्दशा (मान मासादि २८।०।०।०) हो तो वैर, विषाद, दुःख, सदा उद्वेग, महाभय और कभी-कभी सुख प्राप्त होवे ॥ ९ ॥

अथ विंशोत्तरीदशाफलम् ।

षडादित्ये दशेन्दौ च सप्तवर्षाणि मङ्गले ।
अष्टादशसमा राहौ षोडशैव बृहस्पतौ ॥ १ ॥
एकोनविंशतिर्मन्दे बुधे सप्तदशैव च ।
सप्त वर्षाणि केतौ च विंशति भार्गवे तथा ॥ २ ॥

सूर्य का ६ वर्ष, चन्द्रमा का १० वर्ष, मंगल का ७ वर्ष, राहु का १८ वर्ष, बृहस्पति का १६ वर्ष, शनि का १ वर्ष, बुध का १७ वर्ष, केतु का ७ वर्ष और शुक्र का २० वर्ष विंशोत्तरी दशा का प्रमाण है। इस प्रकार जाने ॥ १-२ ॥

कृत्तिकामवधिं कृत्वा भरणीं चावगण्यते ।
कृत्तिकादि त्रिरावृत्या सूर्यादि गणयेत्क्रमात् ॥ ३ ॥

कृत्तिका से भरणी तक गिने, कृत्तिका से तीन आवृत्ति सूर्यादि ग्रहों की दशा क्रम से होती है। जैसे–जिसका कृत्तिका नक्षत्र का जन्म हो उसकी सूर्य की दशा और जिसका जन्म नक्षत्र रोहिणी होगा उसकी चन्द्रमा की दशा है। इसी प्रकार सब जाने ॥ ३ ॥

अथ केतुदशाफलम् ।

लक्ष्मीविनाशो वनितावविपत्तिः
शरीरपीडा नृपमानभंगः ।

प्रियैः कुटुम्बैश्च भवेद्वियोगः
केतोर्दशायां सततं च तापः ॥ १ ॥

केतु की दशा में लक्ष्मी का नाश, स्त्री को विपत्ति, शरीर-पीड़ा, राजाओं में मानभंग, अपने प्रियजनों तथा कुटुम्बियों से वियोग और सदा ताप हो ॥ १ ॥

पुत्रनाशोऽर्थनाशश्च दुष्टनारीजनैः कलिः ।
केतोरंतर्गते केतौ राजभीः शत्रुविग्रहः ॥ २ ॥

यदि केतु की दशा में केतु ही की अन्तर्दशा (मान मासादि ४।२७।०।०) हो तो पुत्र का नाश, दुष्ट स्त्रीजनों से कलह, राजभय और शत्रु से विग्रह हो ॥ २ ॥

स्त्रियस्त्यागोऽग्निदाहश्च कन्याजन्म तथा ज्वरः ।
केतोरन्तर्गते शुक्रे मित्रैः सह कलिर्भवेत् ॥ ३ ॥

यदि केतु की दशा में शुक्र की अन्तर्दशा (मान मासादि १४।०।०।०) हो तो स्त्री का त्याग, अग्नि-दाह, कन्या का जन्म तथा ज्वर और मित्रों से कलह हो ॥ ३ ॥

अग्निदाहो ज्वरो रोगो विदेशगमनं तथा ।
केतोरन्तर्गते सूर्ये क्षयरोगश्च जायते ॥ ४ ॥

यदि केतु की दशा में सूर्य की अन्तर्दशा (मान मासादि ४।६।०।०) हो तो अग्नि-दाह, ज्वर, रोग, विदेशगमन क्षय रोग हो ॥ ४ ॥

अर्थलाभोऽर्थहानिश्च सुखं दुःखं क्वचित् क्वचित् ।
केतोरन्तर्गते चन्द्रे स्त्रीलाभश्चापि जायते ॥ ५ ॥

यदि केतु की दशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा (मान मासादि ७।०।०।०) हो तो कभी अर्थ का लाभ और कभी द्रव्य की हानि, कभी सुख, कभी दुःख और स्त्री का लाभ होवे ॥ ५ ॥

गोत्रजै सह संवादो वह्निचौरभयं तथा ।
शरीरे जायते पीड़ा केतोन्तर्गते कुजे ॥ ६ ॥

यदि केतु की दशा में मंगल की अन्तर्दशा (मान मासादि ४।२७।०।०) हो तो भाइयों के साथ झगड़ा, अग्नि और चोर का भय तथा शरीर में पीड़ा होवे ॥ ६ ॥

चौरभीतिर्देहभङ्गः कुमित्रैः सह संगतिः ।
केशोरन्तर्गते राहौ कलहः शत्रुभिः सह ॥ ७ ॥

यदि केतु की दशा में राहु की अन्तर्दशा (मान मासादि १२।१८।०।०) हो तो चोरों का भय, शरीर-भंग, दुष्ट मित्रों के साथ संग और शत्रुओं से कलह होवे ॥ ७ ॥

राजमान्यैर्जनैर्योगो द्विजेन्द्रैश्च धनागमः ।
भूमिलाभः पुत्रलाभः केतोरन्तर्गते गुरौ ॥ ८ ॥

यदि केतु की दशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा (मान मासादि ११।६।०।०) हो तो राजाओं से पूजित जनों से योग (मेल), ब्राह्मणों से धन का आगम, भूमि ओर पुत्र का लाभ होवे ॥ ८ ॥

वातपित्तकृता पीडा स्वजनैः सह विग्रहः ।
विदेशगमनं चापि केतोरन्तर्गते शनौ ॥ ९ ॥

यदि केतु की दशा में शनि की अन्तर्दशा (मान मासादि १३।९।०।०) हो तो वात-पित्त से पीड़ा, अपने इष्ट-मित्रों से कलह और विदेशगमन भी होवे ॥ ९ ॥

सुहृद्बन्धुसमायोगो भूनिमित्तं च विग्रहः ।
देहपीडा भवेन्नित्यं केतोरन्तर्गते बुधे ॥ १० ॥

यदि केतु की दशा में बुध की अन्तर्दशा (मान मासादि ११।२७।०।०) हो तो मित्र तथा बन्धुओं से संग, भूमि के लिये विग्रह और नित्य शरीर में पीड़ा होवे ॥ १० ॥

अथान्यग्रहमध्ये केतुफलम् ।

देशत्यागो बन्धुनाशो धननाशः सुतक्षयः ।
सूर्यस्यान्तर्गते केतौ दुःखमेव हि प्राप्यते ॥ १ ॥

यदि सूर्य की दशा में केतु की अन्तर्दशा (मान मासादि ४।६।०।०) हो तो देश-त्याग, बन्धुजनों का नाश, धन तथा पुत्र का विनाश और दुःख प्राप्त होवे ॥ १ ॥

देशत्यागो बन्धुनाशो धननाशः सुतक्षयः ।
चन्द्रस्यान्तर्गते केतौ सर्वत्रैवाशुभं भवेत् ॥ २ ॥

यदि चन्द्रमा की दशा में केतु की अन्तर्दशा (मान मासादि ७।०।०।०) हो तो देश-त्याग, बन्धु, पुत्र, धन का नाश और सर्वत्र अशुभ होवे ॥ २ ॥

विषशस्त्राग्निचौरेभ्यो जायतेऽत्र महाभयम् ।
भौमस्यान्तर्गते केतौ क्लेशभागी सदा नरः ॥ ३ ॥

यदि मंगल के अन्तर्गत केतु (मान मासादि ४।२७।०।०) तो विष, शस्त्र, अग्नि, चोर आदिकों से महाभय हो और मनुष्य सदैव क्लेशभागी रहे ॥ ३ ॥

अथ राहुदशामध्ये केत्वन्तरदशाफलम् ।

ज्वराग्निरिपुशस्त्रेभ्यो मृत्युरायाति सर्वदा ।
राहोरन्तर्गते केतौ शुभं क्वापि न लभ्यते ॥ १ ॥

यदि राहु की दशा में केतु की अन्तर्दशा (मान मासादि १२।१८।०।०) हो तो ज्वर, अग्नि, शत्रु तथा शस्त्रों से मृत्यु-भय होवे और शुभ कभी भी न प्राप्त हो ॥ १ ॥

पुत्रबन्धुकृतोद्वेगो निजस्थानविवर्जितः ।
गुरोरन्तर्गते केतौ परिभ्रमति मानवः ॥ २ ॥

जिस मनुष्य के बृहस्पति की दशा में केतु की अन्तर्दशा (मान मासादि १०।६।०।०) हो वह पुत्र तथा बन्धुओं से उद्विग्न, अपने स्थान से रहित होकर भ्रमण करे ॥ २ ॥

रक्तपित्तकृता पीडा कलहः स्वजनैः सह ।
शनेरन्तर्गते केतौ घोरदुःखप्रदर्शनम् ॥ ३ ॥

यदि शनि की दशा में केतु की अन्तर्दशा (मान मासादि १३।९।०।०) हो तो रक्त-पित्त से पीड़ा, बन्धुजनों से कलह और भयानक दुःख देख पड़े ॥ ३ ॥

दुःखशोकाकुलो नित्यं शरीरे क्लेशसंयुतः ।
बुधस्यान्तर्गते केतौ भवत्येव न संशयः ॥ ४ ॥

यदि बुध की दशा में केतु की अन्तर्दशा (मान मासादि ११।२७।०।०) हो तो नित्य दुःख तथा शोक से व्याकुलता और शरीर में क्लेश रहे, इसमें सन्देह नहीं है ॥ ४ ॥

यह ग्रहों के बीच केतु की अन्तर्दशा का फल है। इस ग्रन्थ में पहले अष्टोत्तरी दशा तथा अन्तर्दशा का फल दर्शाया है। उसी फलादेश से विंशोत्तरी का भी फल जानें। भेद केवल यही है कि विंशोत्तरी में सू. चं. मं. रा. बृ. श. बु. के शु. इस प्रकार का क्रम है, फलादेश में जहाँ विचारना या लिखना हो वहाँ इसी क्रम से विचारने तथा लिखने से स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होगा।

जन्मलग्नं समारभ्य गतवर्षाणि योजयेत् ।
द्वादशेषु च भागेषु ग्रहैर्वाच्यं शुभाशुभम् ॥ ५ ॥

जन्म-लग्न में गतवर्ष को जोड़े, उसमें १२ का भाग देवे, शेष के अनुसार ग्रहों का शुभ-अशुभ जो फल हो वह कहे ॥ ५ ॥

अथ मासदशाः ।

विंशतिर्वासराः सूर्ये पञ्चाशच्च निशाकरे ।
सप्तविंशतिरङ्गारे २७ सप्तपञ्चाश ५७दिन्दुजे ॥ १ ॥

त्रयस्त्रिंशच्च मन्दे स्युस्त्रिषष्टि६३श्च बृहस्पतौ ।
विंशतिः२० सैंहिकेये च केतावपि च विंशतिः ॥ २ ॥
सप्तमित७०भृगुपुत्रे च ज्ञेया मासदशा बुधैः
नामराशिं समारभ्य संक्रमावधि गण्यते ॥ ३ ॥

सूर्य में २ दिन, चन्द्रमा में ५० दिन, मंगल में २७ दिन, बुध में ५७ दिन, शनि में ३३ दिन, बृहस्पति से ६३ दिन, राहु तथा केतु में २० दिन तथा शुक्र में ७० दिन, नाम राशि से संक्रान्ति तक गिने यह दशा पंडितों से जानने योग्य है। पहले सूर्य की फिर चन्द्रमा की पूर्वोक्त प्रकार से दशा जाने ॥१-३॥

अथ दिनदशाः ।

तिथिर्वारं च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम् ।
नवभिश्च हरेद्भागं शेषा दिनदशोच्यते ॥ १ ॥

तिथि, वार, नक्षत्र और नाम के अक्षर की संख्या को जोड़कर नौ का भाग देवे, शेष अङ्क से विंशोत्तरी क्रम से दिन का फल कहे ॥ १ ॥

अन्यच्च ।

चैत्रादेर्द्विगुणा मासा गताभिस्तिथिभिर्युताः ।
नवभिश्च हरेद्भागं शेषं दिनफलं स्मृतम् ॥ १ ॥
सम्पत्तिः कलहो लोकैरानन्दः कालकण्टकः ।
धर्मस्तपश्च विजयो रविवारात्क्रमात्फलम् ॥ २ ॥

चैत्र आदि गत मास को दूना करे और बीती हुई तिथि में जोड़ कर ९ का भाग देने से शेष अंक से दिन का फल कहे। १ शेष से सूर्यवार-संपत्ति मिले, २ शेष से चन्द्रवार-लोक में कलह हो, ३ शेष से मंगलवार-आनन्द हो, ४ शेष से बुधवार-कालकंटक, ५ शेष से गुरुवार-धर्म हो, ६ शेष से शुक्रवार-

तप करे, ७ शेष से शनिवार-विजय हो, ८ शेष से राहु, ९ शेष से केतु जाने इन दोनों का सामान्य फल है ॥ १-२ ॥

क्रूरग्रहदशायां च क्रूरस्यान्तर्दशा यदा
शत्रुयोगे भवेन्मृत्युर्मित्रयोगे च संशयः ॥ ३ ॥

यदि क्रूर ग्रहों की दशा में क्रूर ग्रहों की अन्तर्दशा हो तो शत्रुयोग में मृत्यु होवे और मित्रयोग में मृत्यु होने में संशय रहे ॥ ३ ॥

अथभौमदशामध्ये शनेरन्तर्दशाफलम् ।

मंगलस्य दशायां च शनेरन्तर्दशा यदा ।
म्रियतेऽत्र चिरंजीवी का कथा स्वल्पजीविनाम् ॥ १ ॥

यदि मंगल की दशा में शनि की अन्तर्दशा हो तो बहुत काल जीनेवाला भी मरे और स्वल्पायुवालों की क्या बात है (अर्थात् जब दीर्घायुवाला मनुष्य शीघ्र मरेगा तो थोड़ी आयुवाले के मरने में क्या संदेह है !) ॥ १ ॥

अथ क्रूरग्रहमध्ये पापग्रहफलम् ।

क्रूरराशौ स्थितः पापः षष्ठे या निधनेऽपि वा ।
सितेन रविणा दृष्टः स्वपाके मृत्युदो ग्रहः ॥ १ ॥

यदि क्रूर ग्रह की राशि में पापग्रह छठवें, आठवें स्थान में शुक्र तथा सूर्य से देखा जाता हो तो वह ग्रह अपने पाक (दशा) में मृत्यु का देनेवाला होता है ॥ १ ॥

लग्नस्याधिपतेः शत्रुर्लग्नस्यान्तर्दशागमः ।
करोत्यकस्मान्मरणं सत्याचार्येण भाषितम् ॥ २ ॥

यदि लग्न के स्वामी का शत्रु लग्न में स्थित हो और उसकी अन्तर्दशा हो तो अकस्मात् मरण करता है, यह सत्याचार्यजी ने कहा है ॥ २ ॥

अथ दशारिष्टभङ्गः ।

दशायां बलवान् खेटः शुभैर्वा संनिराक्षितः ।
सौम्याधिमित्रवर्गस्थोऽरिष्टभङ्गो भवेत्तदा ॥ १ ॥

यदि दशा में बलवान् ग्रह हो या शुभग्रहों से देखा जाता हो अथवा सौम्य ग्रह अधिमित्र के वर्ग में स्थित हो तो उसकी दशा में अरिष्ट का भंग होवे ॥ १ ॥

मूलं दशाधिनाथस्य वाचस्पतिदशा यदा ।
बली शुभोऽथ विज्ञेयोऽरिष्टभंगस्तदा भवेत् ॥ २ ॥

मूलदशानाथ की दशा में यदि बृहस्पति की दशा हो तो शुभग्रह की दशा होने से बलवती दशा जाने, उससे अरिष्ट भंग होता है ॥ २ ॥

शुभग्रहो ग्रहैर्योगे विजयी यदि जायते ।
दशायां न भवेत्कष्टं स्वोच्चादिषु च संस्थितः ॥ ३ ॥

यदि शुभग्रह ग्रहों के योग में विजयी हो और अपने उच्चादि वर्ग में स्थित हो तो वह अपनी दशा में कष्ट न होने दे ॥ ३ ॥

इति तृतीयः परिच्छेदः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थपरिच्छेदः ॥ ४ ॥

रविद्विग्रहयोगाः ।

स्त्रीजितः कूटधर्मा च दुर्विनीतो दयाद्दढः ।
विक्रमी लघुचेताश्च सूर्यचन्द्रसमागमे ॥ १ ॥

जिसकी जन्म-पत्री में सूर्य चन्द्रमा का योग हो तो वह स्त्रीजित, झूठा, नीतिरहित, दयावान्, पराक्रमी और हल्के जी वाला होवे ॥ १ ॥

मिथ्यावादी च मूर्खश्च वधनिष्ठो बली नरः ।
तेजस्वी पापचित्तश्च सूर्यभौमसमागमे ॥ २ ॥

यदि सूर्य मंगल का योग हो तो झूठा, मूर्ख, हिंसक, तेजस्वी और पापी होता है ॥ २ ॥

विद्वानर्थी राजमान्यः सेवाशीलः प्रियंवदः ।
यशस्वी चास्थिरद्रव्यः सूर्यसौम्यसमागमे ॥ ३ ॥

सूर्य बुध का योग हो तो विद्वान्, मतलबी, राजमान्य, सेवा करनेवाला, प्रियवादी, यशस्वी और अस्थिर धनवाला होता है ॥ ३ ॥

नृपमान्यो धर्मनिष्ठो मित्रवानर्थवानपि ।
उपाध्यायोऽतिविख्यातो सूर्यजीवसमागमे ॥ ४ ॥

सूर्य बृहस्पति का योग हो तो राजा से मान्य, धर्मात्मा, मित्रवान्, धनवान्, उपाध्याय (अध्यापक) और अतिशय विख्यात होता है ॥ ४ ॥

शस्त्रप्रहारी बन्धश्च रङ्गज्ञो नेत्रदुर्बलः ।
स्त्रीसंगलब्धद्रव्यश्च शक्तोऽर्कभृगुसंगमे ॥ ५ ॥

सूर्य-शुक्र का समागम हो तो शस्त्र-प्रहार करने, बाँधने और रंग जाननेवाला, दुर्बल नेत्र तथा स्त्री से द्रव्य प्राप्त करने में समर्थ होता है ।

विद्वानात्मक्रियानिष्ठो गुणज्ञो वृद्धचेष्टितः ।
प्रनष्टसुतदारश्च सूर्यमन्दसमागमे ॥ ६ ॥

यदि सूर्य शनि का समागम हो तो विद्वान्, आत्मक्रिया में निष्ठावान्, गुणज्ञ, वृद्धजनों की चेष्टा करनेवाला और स्त्री-पुत्र-रहित होता है ॥ ६ ॥

चन्द्रद्विग्रहयोगाः ।

मृच्चर्मधातुशिल्पी च धनी शूरो रणे भवेत् ।
रक्तपीडातुरो नित्यं चन्द्रभौमसमागमे ॥ १ ॥

चन्द्र-मंगल का योग हो तो भूविज्ञ, चर्म तथा धातु की कारीगरी में निपुण, धनी, रण में शूर और नित्य रक्त की पीड़ा से व्याकुल रहे ॥ १ ॥

स्त्रीसंमतः सुरूपश्च काव्येऽतिनिपुणो भवेत् ।
धनी गुणी हास्यवक्त्रश्चंद्रसौम्यसमागमे ॥ २ ॥

चन्द्रमा-बुध का समागम हो तो स्त्री का आदरणीय, सुन्दर रूप, कविता में अत्यन्त निपुण, धनी, गुणी और हँसमुख होता है ॥ २ ॥

देवद्विजार्चासक्तश्च बंधुमानकरो धनी ।
दृढप्रीतिः सुशीलश्च चन्द्रजीवसमागमे ॥ ३ ॥

चन्द्र-गुरु का समागम हो तो देवता ब्राह्मणों की पूजा में तत्पर, बन्धुओं का सम्मान करनेवाला, धनी, दृढ़ प्रीति और सुन्दर स्वभाववाला होता है ॥ ३ ॥

कुशली विक्रयादौ च वृद्धिज्ञः कलहप्रियः ।
माल्यवस्त्रादिसंयुक्तः शशिभार्गवसंगमे ॥ ४ ॥

चन्द्र-शुक्र का योग हो तो विक्रय आदि मे चतुर, वृद्धि जाननेवाला, कलह करनेवाला और माला-वस्त्रादिकों से युक्त होता है ॥ ४ ॥

गजाश्वपालो दुःशीलो वृद्धस्त्रीरमणो नरः ।
वेश्याधनोऽनपत्यश्च चंद्रमंदसमागमे ॥ ५ ॥

चन्द्र-शनि का योग हो तो गज, अश्व आदि का पालक, दुष्ट स्वभाव, वृद्ध स्त्री से रमण करनेवाला, वेश्या को ही धन समझनेवाला और सन्तानरहित होता है ॥ ५ ॥

भौमद्विग्रहयोगाः ।

स्त्रीदुर्भगः क्रयप्रीतिः स्वर्णलोहप्रकारकः ।
निर्धनो विधवाभर्ता भूपुत्रबुधसंयुतौ ॥ १ ॥

मंगल-बुध का योग हो तो दुर्भगा स्त्री का पति, खरीद का व्यवहार करनेवाला, सुवर्ण तथा लोह की कारीगरी करनेवाला, निर्धन और विधवा के साथ संभोग करनेवाला होता है ॥ १ ॥

मेधावी शिल्पशास्त्रज्ञः श्रुतिज्ञो वाग्विशारदः ।
अश्वप्रियः प्रधानश्च भौमजीवसमागमे ॥ २ ॥

मंगल-गुरु का संयोग हो तो बुद्धिमान्, शिल्प-शास्त्रज्ञ, वेदज्ञानी, बोलने में चतुर और घोड़ों को रखनेवाला होता है ॥ २ ॥

गुणप्रधानो निपुणो द्यूतेऽनृतरतः शठः ।
परदाररतो मान्यो भौमशुक्रसमागमे ॥ ३ ॥

मंगल-शुक्र का संयोग हो तो गुणी, निपुण, जुवा झूठ में रत, मूर्ख, पर स्त्री में रत और मान्य होता है ॥ ३ ॥

वाग्मीन्द्रजालदक्षश्च विधर्मा कलहप्रियः ।
विषमद्यप्रपंचाढ्यो भौममंदसमागमे ॥ ४ ॥

मंगल-शनि का योग हो तो वाणी में चतुर, इन्द्रजाल विद्या का ज्ञाता, धर्मरहित, कलहप्रिय, विष तथा मदिरा का प्रपंच रखनेवाला होता है ॥ ४ ॥

बुधविग्रहयोगाः ।

धैर्ययुक्तः पंडितश्च सुखी भवति मानवः ।
नृत्ये वाद्ये च कुशलो बुधजीवसमागमे ॥ १ ॥

बुध-बृहस्पति का योग हो तो धैर्य-युक्त, पंडित, सुखी और नृत्य-वाद्य में चतुर होता है ॥ १ ॥

धनी सुवाक्यो वेदज्ञो गीते हास्ये च लालसः ।
नयज्ञो बहुशिल्पज्ञो बुधशुक्रसमागमे ॥ २ ॥

बुध-शुक्र का योग हो तो धनी, सुन्दर बोलनेवाला, वेदवेत्ता, गीत-हास्य में रुचि रखनेवाला, नीतिज्ञ और शिल्प-शास्त्र को भलीभाँति जाननेवाला होता है ॥ २ ॥

ऋणी गमनशीलश्च निरुपायोऽतिनिष्ठुरः ।
शुभवाक्यः काव्यदक्षो बुधमंदसमागमे ॥ ३ ॥

बुध-शनि का योग हो तो ऋणी, गमन करनेवाला, उपायरहित, अत्यन्त कठोर, शुभभाषी और काव्य में निपुण होता है ॥ ३ ॥

गुरुद्विग्रहयोगाः ।

धर्मस्थितः प्रमाणज्ञो विद्याजीवि च जायते ।
दिव्यदारो बहुधनो गुरुभार्गवसंगमे ॥ १ ॥

गुरु-शुक्र का योग हो तो धर्म में दृढ़ स्थिति, प्रमाणविद्, विद्या से आजीविका करनेवाला, दिव्य स्त्रीवाला और बहुत धनवाला होता है ॥ १ ॥

वृत्तिसिद्धिश्च शूरश्च यशस्वी नगराधिपः ।
श्रेणीसेनाग्राममुख्यो गुरुमंदान्वये नरः ॥ २ ॥

गुरु और शनि के योग में जन्मा हुआ बालक उपजीविका में सिद्ध, शूर, कीर्तिमान्, नगर का स्वामी, समूह, सेना तथा ग्राम में मुख्य माना जाता है ॥ २ ॥

भृगुद्विग्रहयोगाः ।

दारुदारणदक्षश्च क्षाराम्लादिकशिल्पवित् ।
मल्लः पशुपतिर्मंदचक्षुः शनिसितान्वये ॥ १ ॥

शुक्र और शनि के योग में उत्पन्न बालक काष्ठों की चीर-फाड़ करने में कुशल, खट्टे पदार्थ निर्माण की कला जाननेवाला, मल्ल और गाय, भैंसों का मालिक होता है ॥ १ ॥

अथ त्रिग्रहयोगाः ।

भानुभौमबुधैर्योगे ख्यातः साहसिको नरः ।
निष्ठुरो गतलज्जश्च धनस्त्रीपुत्रपीडितः ॥ १ ॥

सूर्य, मंगल और बुध इनके योग में जो पुरुष जन्मता है—वह विख्यात, साहसी, निर्दय, निर्लज्ज तथा धन, स्त्री और पुत्र से पीडित रहता है ॥ १ ॥

सूर्यभौमेज्यसंयोगे प्रचंडः सत्यभाषणः ।
राजमंत्री च मुख्यश्च वाक्ये च निपुणो भवेत् ॥ २ ॥

सूर्य, मंगल और बृहस्पति इनका योग हो तो प्रचंड, सत्य बोलनेवाला, राजा का मंत्री, मुख्य जन और वचन में निपुण होता है ॥ २ ॥

सूर्यारशुक्रसंयोगे सुभगो भजने रतः ।
कुलीनो वत्सलो लोके विषयासक्तमानसः ॥ ३ ॥

सूर्य, मंगल और शुक्र का योग हो तो सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, भजन करने में रत, कुलीन, दयावान् और विषयासक्त मनवाला होता है ॥ ३ ॥

सूर्यारशनिसंयोगे मूर्खो गोधनवर्जितः ।
रोगार्तः स्वजनैर्हीनो विकलः कलहाकुलः ॥ ४ ॥

सूर्य, मंगल, शनि का योग हो तो मूर्ख, धनहीन, रोग से पीड़ित, स्वजनों से हीन, विकल और कलह करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

सूर्यसौम्येज्यसंयोगो नेत्ररोगी महाधनः ।
शास्त्रशिल्पकलाभिज्ञो लिपिकर्त्ता भवेन्नरः ॥ ५ ॥

सूर्य, बुध, शुक्र का योग हो तो नेत्ररोगी, महाधनी, शास्त्र-विद्या की कारीगरी भी जानने और लिखने का काम करनेवाला होता है ॥ ५ ॥

सूर्यज्ञशुक्रसंयोगे गुरुवर्गे समावृतः ।
अभिशस्तो दिशो याति स्त्रीहेतोस्तप्तमानसः ॥ ६ ॥

सूर्य, बुध शुक्र का योग हो तो गुरुजनों के काम में लगा हुआ उत्तम, श्रेष्ठ मार्ग में चलनेवाला और स्त्री के वास्ते संतप्त मनवाला होता है ॥ ६ ॥

सूर्यज्ञशनिभियोगे दुराचारः पराजितः ।
बन्धुभिश्च परित्यक्तो विद्वेषी जायते नरः ॥ ७ ॥

सूर्य, बुध, शनि का योग हो तो दुराचारी, पराजित होनेवाला, बन्धुओं से त्यागा हुआ और विद्वेष करनेवाला होता है ॥ ७ ॥

सूर्येज्यशुक्रसंयोगे राजमन्त्री च निर्धनः ।
दुष्टचक्षुर्भवेत्क्रूरः प्राज्ञश्च परकर्मकृत् ॥ ८ ॥

सूर्य, गुरु, शुक्र का योग हो तो राजा का मन्त्री, निर्धन, बुरे नेत्रोंवाला, क्रूर, पण्डित और पराया काम करनेवाला होता है ॥ ८ ॥

सूर्येज्यशनिभियोगे पुत्रमित्रकलत्रवान् ।
निर्भयो नृपनिष्ठश्च द्वेष्यो बन्धुजनस्य च ॥ ९ ॥

सूर्य, गुरु, शनि का योग हो तो पुत्र मित्र-स्त्रीवाला निर्भय, राजा में निष्ठायुक्त रहे और बंधुजन से वैर करे ॥ ९ ॥

सूर्यशुक्रार्किसंयोगे कलामानविवर्जितः ।
कुष्ठी शत्रुजयोद्विग्नो दुराचारी भवेन्नरः ॥ १० ॥

सूर्य, शुक्र, शनि का योग हो तो कला और मान से रहित, कुष्ठी, शत्रु को जीतनेवाला, उद्विग्न और दुराचारी मनुष्य होता है ॥ १० ॥

चन्द्रारबुधसंयोगे त्वनाचारी च पापकृत् ।
आजीविकाहतो लोके बन्धुहीनश्च जायते ॥ ११ ॥

चंद्र, मंगल और बुध का योग हो तो आचार रहित, पापी, संसार में जीविकाहीन और बंधु हीन होता है ॥ ११ ॥

चन्द्रभौमेज्यसंयोगे स्त्रीलोलो व्रणसंयुतः ।
कांतश्च संमतः स्त्रीणां चन्द्रतुल्यमुखो भवेत् ॥ १२ ॥

चन्द्र, मंगल और बृहस्पति का योग हो तो स्त्री के लिये चंचल रहनेवाला, व्रण से संयुक्त मनोहर स्त्रियों का माना हुआ और चंद्रमा के समान मुखवाला होता है ॥ १२ ॥

चन्द्रारभृगुसंयोगे दुःशीलायाः पतिः सुतः ।
सदाभ्रमणशीलश्च शीतभीतोऽपि जायते ॥ १३ ॥

चन्द्रमा, मंगल और शुक्र का योग हो तो दुष्ट स्वभाववाली स्त्री का पति और ऐसी ही स्त्री का पुत्र हो, सदा भ्रम में और शीत से डरता रहे ॥ ३ ॥

चन्द्रारशनिभियोगे बाल्ये च मृतमातृकः ।
क्षुद्रश्च लोकविद्विष्टो विषमो जायते नरः ॥ १४ ॥

चन्द्रमा, मंगल और शनि का योग हो तो बालक की बाल्य अवस्था में माता मरे, तुच्छ जन हो, लोगों से वैर करे और विषम तथा कुटिल नर हो ॥ १४ ॥

चन्द्रज्ञजीवैः संयोगे यशस्वी धनवानपि ।
पुत्रमित्रादिसंयुक्तो वाग्मी ख्यातश्च कीर्तिमान् ॥ १५ ॥

चन्द्र, बुध और गुरु का योग हो तो यशस्वी, धनवान्, पुत्र-मित्रादिकों से युक्त, अच्छी तरह बोलनेवाला, विख्यात और कीर्तिमान् होता है ॥ १५ ॥

चन्द्रज्ञभार्गवयोगे विद्यया संयुतो नरः ।
सेर्ष्यो धनातिलोभी च नीचाचारश्च जायते ॥ १६ ॥

चन्द्र, बुध और शुक्र का योग हो तो विद्वान्, ईर्ष्यावाला, धन का अत्यन्त लोभी और नीच आचरण करनेवाला होता है ॥ १६ ॥

चन्द्रज्ञशनिभियोगे प्राज्ञो भूपतिपूजितः ।
अत्युच्चो विपुलांगश्च वाग्मी भवति मानवः ॥ १७ ॥

चन्द्र, बुध और शनि का योग हो तो पंडित, राजा से पूजित, अत्यन्त ऊँचा, भारी शरीरवाला और चतुराई से बोलनेवाला होता है ॥ १७ ॥

चन्द्रेज्यशुक्रसंयोगे साध्वीपुत्रश्च पंडितः ।
साधुः सर्वकलाभिज्ञः सुभगो जायते नरः ॥ १८ ॥

चन्द्र, बृहस्पति और शुक्र का योग हो तो उत्तम स्त्री का पुत्र, पंडित, साधुजन, सब कलाओं को जाननेवाला, सुन्दर और ऐश्वर्यवान् होता है ॥१८॥

चन्द्रेज्यशनिमियोंगे नीरोगः स्त्रीरतो नरः ।
शास्त्रार्थविज्ञो नीतिज्ञो ग्रामपत्तनपालकः ॥ १९ ॥

चन्द्र, बृहस्पति और शनि का योग हो तो रोगरहित, स्त्री में रत, शास्त्रार्थ को जाननेवाला, ग्राम और नगर का पालक होता है ॥ १९ ॥

चन्द्रशुक्रार्किभियोंगे लिपिकर्त्ता च वेदवित् ।
पुरोहितकुलोत्पत्तिर्भवेत्पुस्तक वाचकः ॥ २० ॥

चन्द्र, शुक्र और शनि का योग हो तो लिखने का काम करनेवाला, पुरोहित, वेद कुल में उत्पन्न और पुस्तक बाँचनेवाला होता है ॥ २० ॥

भौमज्ञजीवैः संयोगे सुकविर्युवतीपतिः ।
परोपकारकृत्तीक्ष्णो गांधर्वकुशलो नरः ॥ २१ ॥

मंगल, बुध और बृहस्पति का योग हो तो सुन्दर, कवि, सुन्दरी स्त्री का पति, पराया उपकार करनेवाला, तीक्ष्ण बुद्धि और गान्धर्व विद्या में निपुण होता है ॥ २१ ॥

भौमज्ञभृगुभियोंगे विकलांगश्च चञ्चलः ।
अकुलीनः सदोत्साही तुमश्च मुखरो नरः ॥ २२ ॥

मंगल, बुध और शुक्र का योग हो तो विकल अंग, चंचल स्वभाव, तुच्छ कुल में उत्पन्न, सदा उत्साही और अभिमानी मनुष्य होता है ॥ २२ ॥

कुजज्ञशनिभियोंगे प्रवासी नेत्ररोगवान् ।
प्रेष्यो वदनरोगी च हास्यलुब्धो भवेन्नरः ॥ २३ ॥

मंगल, बुध और शनि का योग हो तो परदेश में रहनेवाला, नेत्र रोगी, सेवक, मुख का रोगी और हास्य का लोभी होता है ॥ २३ ॥

कुजेज्यभृगुभियोंगे दिव्यनारीयुतः सुखी ।
सर्वानन्दकरो लोके जायते नृपतिप्रियः ॥ २४ ॥

मंगल, बृहस्पति और शुक्र का योग हो तो दिव्य स्त्री से युक्त, सुखी, लोक में सब आनन्दों को भोगनेवाला और राजा का प्रिय होता है ॥ २४ ॥

भौमजीवार्किभियोंगे क्षतांगो राजसंमतः ।
नीचाचारो निघृणश्च भवेन्मित्रैर्विगर्हितः ॥ २५ ॥

मंगल, बृहस्पति और शनि का योग हो तो क्षत अंगवाला, राजा का प्रिय, नीच आचरणवाला, दयारहित और मित्रजनों से निन्दित होता है ॥ २५ ॥

भौमशुक्रार्किसंयोगे दुःशीलायाः पति सुतः ।
प्रवासशीलो दुःखी च जायते जातकः सदा ॥ २६ ॥

मंगल, शुक्र और शनि का योग हो तो दुष्ट स्वभाववाली स्त्री का पति और ऐसी ही स्त्री का पुत्र, परदेश में रहनेवाला और सदा दुःखी होता है ॥ २६ ॥

बुधेज्यभृगुसंयोगे सुतनुर्नृपपूजितः ।
क्षतारिर्दीर्घकीर्तिश्च सत्यवादी भवेन्नरः ॥ २७ ॥

बुध, बृहस्पति और शुक्र का योग हो तो सुन्दर शरीर, राजा से पूजित, शत्रुओं को नष्ट करनेवाला, बड़ी कीर्तिवाला और सत्यवादी होता है ॥ २७ ॥

बुधजीवार्किसंयोगे सुदारो बहुभोगवान् ।
धनैश्वर्ययुतः प्रायः सुखधैर्ययुतो भवेत् ॥ २८ ॥

बुध, गुरु और शनि का योग हो तो सुन्दर स्त्रीवाला, बहुत भोगी धन और ऐश्वर्य से युक्त, विशेष करके सुख और धैर्य से युक्त होता है ॥ २८ ॥

बुधशुक्रार्किभियोगे मुखरः परदारगः ।
असंगत्यकलाभिज्ञः स्वदेशनिरतो जनः ॥ २९ ॥

बुध, शुक्र और शनि का योग हो तो वाचाल, पराई स्त्री से रमण करनेवाला, सत्संगरहित, कलाओं से अनभिज्ञ हो और सदा अपने देश में रहे ॥ २९ ॥

गुरुशुक्रार्किभियोगे राजा भवति कीर्तिमान् ।
नीचवंशेऽपि संभूतः शीलयुक्तो नृपोत्तमः ॥ ३० ॥

बृहस्पति, शुक्र और शनि का योग हो तो कीर्तिमान्, नीच वंश में उत्पन्न, शीलयुक्त और उत्तम राजा होता हैं ॥ ३० ॥

प्रायःपापैर्युते चंद्रे मातुर्नाशो रवौ पितुः ।
शुभग्रहैः शुभं वाच्यं मिश्रैर्मिश्रं फलं भवेत् ॥ ३१ ॥

पापग्रहों से युक्त चन्द्रमा माता को और सूर्य पिता को मार डालता हैं। शुभग्रह हो तो शुभ फल और मिश्रग्रह हो तो मिश्र फल होता है ॥ ३१ ॥

शुभास्त्रयो ग्रहा युक्ताः कुर्वन्ति सुखिनं नरम् ।
पापास्त्रयो दुःखितं च दुर्विनीतं विगर्हितम् ॥ ३२ ॥

तीन शुभग्रह एकत्र हो तो मनुष्य को सुखी करते हैं। तीन पापग्रह मनुष्य को दुःखी, दुर्विनीत और निंदित करते हैं ॥ ३२ ॥

अथ चतुर्ग्रहयोगाः ।

अर्केन्दुकुज्ञसौम्यानां योगे लिपिकरो भवेत् ।
तस्करो मुखरो वाग्मी मायायां कुशलो भिषक् ॥ १ ॥

सूर्य, चन्द्रमा, मंगल और बुध का योग हो तो बालक लेखक, चोर, मुँहफट, युक्ति से बोलनेवाला, मायावी और वैद्यक जाननेवाला होता है ॥ १ ॥

सूर्येन्दुकुजजीवानां संयोगे निपुणो धनी ।
तेजस्वी गतशोकश्च नीतिज्ञश्च भवेन्नरः ॥ २ ॥

सूर्य, चन्द्र, मंगल और बृहस्पति का योग हो तो निपुण, धनी, तेजस्वी, शोकरहित और नीति को जाननेवाला होता है ॥ २ ॥

रवीन्दुभौमशुक्राणां योगे विद्यार्थसंग्रही ।
सुखी पुत्री कलत्री च वाग्वृत्तिर्मनुजो भवेत् ॥ ३ ॥

सूर्य, चन्द्र, मंगल और शुक्र का योग हो तो विद्या और अर्थ को ग्रहण करनेवाला, सुखी, पुत्रवान्, श्रीयुत और वाणी से आजीविका करनेवाला होता है ॥ ३ ॥

अर्केन्दुकुजमंदानां योगे मूर्खश्च निर्धनः ।
ह्रस्वो विषमदेहश्च भिक्षावृत्तिर्भवेन्नरः ॥ ४ ॥

सूर्य, चन्द्रमा, मंगल और शनि का योग हो तो मूर्ख, निर्धन, छोटा विषम शरीर और भिक्षा की वृत्ति करनेवाला होता है ॥ ४ ॥

अर्केन्दुबुधजीवानां योगे शिल्पकरो धनी ।
सौवर्णिकः प्लुताक्षश्च रोगहीनश्च जायते ॥ ५ ॥

सूर्य, चन्द्रमा, बुध और बृहस्पति का योग हो तो शिल्प अर्थात् कारीगरी करनेवाला, धनवान्, सुवर्ण का व्यवहार करनेवाला, गड़ी हुई आँखोंवाला और रोगहीन होता है ॥ ५ ॥

रविचन्द्रज्ञशुक्राणां संयोगे सुभगो नरः ।
ह्रस्वश्च राजमान्यश्च वाग्मी च विकलो नरः ॥ ६ ॥

सूर्य, चन्द्र, बुध और शुक्र का योग हो तो सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, छोटा, राजमान्य, युक्ति से बोलनेवाला और विकल होता है ॥ ६ ॥

रविचद्रज्ञमंदानां योगे भिक्षाशनो नरः ।
वियुक्तः पितृमातृभ्यां विकलाक्षश्च निर्धनः ॥ ७ ॥

सूर्य, चन्द्र, बुध और शनि का योग हो तो भिक्षा का अन्न खानेवाला, माता-पिता से अलग रहनेवाला और विकल नेत्रोंवाला होता है ॥ ७ ॥

सूर्यचन्द्रज्यशुक्राणां सम्बन्धे राजपूजितः ।
जलारण्यमृगस्वामी नरः स्यान्निपुणः सुखी ॥ ८ ॥

सूर्य, चन्द्र, बुध और शनि का समन्वय हो तो राजा से पूजित, जल, वन और मृग का स्वामी, निपुण और सुखी होता है ॥ ८ ॥

सूर्यचन्द्रेज्यमंदानां मान्यश्च वनिताप्रियः ।
बहुवित्तसुतस्तीक्ष्णः समाक्षश्च प्रजायते ॥ ९ ॥

सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति और शनि का योग हो तो मान्य, स्त्री को प्रिय, बहुत धन, पुत्रोंवाला, तीक्ष्ण और समान नेत्रवाला होता है ॥ ९ ॥

रवींदुभृगुमंदानां योगे चात्यंतदुर्बलः ।
वनितासदृशाचारो भीरुरग्रे सरो नरः ॥ १० ॥

सूर्य, चन्द्र, शुक्र और शनि का योग हो तो अत्यन्त दुर्बल स्त्री के समान आचरण करनेवाला, डरपोक और आगे चलनेवाला होता है ॥ १० ॥

अर्कभौमबुधेज्यानां योगे सत्रकरो नर ।
परदारास्तः शूरो दुःखी चक्रधरो भवेत् ॥ ११ ॥

सूर्य, मंगल, बुध और बृहस्पति इनका योग हो तो सूत का काम करनेवाला, पर स्त्री से रमण करनेवाला, शूरवीर, दुखी और चक्रधारी होता है ॥११॥

रवींदुकुजशुक्राणां संयोगे परदारिकः ।
निर्लज्जो दुर्जनश्चौरो विषमांगो जनोभवेत् ॥ १२ ॥

सूर्य, चन्द्र, मंगल और शुक्र इनका योग हो तो पराई स्त्री रखनेवाला, निर्लज्ज, दुर्जन, चोर और विषम शरीरवाला होता है ॥ १२ ॥

रविभौमबुधार्कीणां योगे योद्धा कविर्जनः ।
मंत्री च भूपतिस्तीक्ष्णो नीचाचारश्च जायते ॥ १३ ॥

सूर्य, मंगल, बुध और शनि इनका योग हो तो योद्धा, कवि, मंत्री, सेनापति, तीक्ष्ण तथा नीच आचरणवाला होता है ॥ १३ ॥

रविभौमेज्यशुक्राणां योगे पूज्यो धनी जनः ।
शुभगो नृपमान्यश्च ख्यातो भवति नीतिमाक् ॥ १४ ॥

सूर्य, मंगल, बृहस्पति और शुक्र इनका योग हो तो पूज्य धनी, सुन्दर, ऐश्वर्यवाला, राजा से मान्य, विख्यात और नीति जाननेवाला होता है ॥ १४ ॥

रविभोमेज्यमंदानां संयोगे गणनायकः ।
सोन्मादो नृपमान्यश्च सिद्धार्थो जायते नरः ॥ १५ ॥

सूर्य, मंगल बृहस्पति और शनि इनका संयोग हो तो गणों में नायक, बहुत आदमियों में प्रधान, उन्मादी, राजा से मान्य और प्रयोजन सिद्ध करनेवाला होता है ॥ १५ ॥

रविभौमसितार्कीणां संयोगे जायते नरः ।
लोकद्वेष्टा समाक्षश्च नीचाचारो जडाकृतिः ॥ १६ ॥

सूर्य, मंगल, शुक्र और शनि इनका योग हो तो लोगोंसे वैर करनेवाला, समान नेत्रोंवाला, नीच आचरण तथा जड आकारवाला होता है ॥ १६ ॥

रविज्ञजीवशुक्राणां योगे बहुमतिर्नरः ।
धनी सुखी च सिद्धार्थः प्रगल्भश्च प्रजायते ॥ १७ ॥

सूर्य, बुध, बृहस्पति और शुक्र का योग हो तो बहुत बुद्धिमान्, धनी, सुखी रहे और प्रयोजन को सिद्ध करे तथा प्रगल्भ हो ॥ १७ ॥

सूर्यज्ञगुरुमंदानां संयोगे जायते नरः ।
भ्रातृमान्कलही मानी क्लीबाचारो निरुद्यमः ॥ १८ ॥

सूर्य, बुध, बृहस्पति और शनि ये एक राशि पर हों तो बन्धुवाला, कलह करनेवाला, नपुंसक के समान आचरणयुक्त और निरुद्योगी होता है ॥ १८ ॥

रविज्ञभृगुमंदानां योगे मित्रयुतः शुचिः ।
मुखरः सुभगः प्राज्ञो जायते च सुखी नरः ॥ १९ ॥

सूर्य, बुध, और शुक्र, शनि का योग हो तो मित्र से मिलाप हो, पवित्र रहे, वाचाल, सुन्दर, ऐश्वर्यवाला और पंडित तथा सुखी होता है ॥ १९ ॥

रविज्यभृगुमंदानां संयोगे लाभमानवात् ।
कविः कारुकनाथश्च राजप्रीतो भवेन्नरः ॥ २० ॥

सूर्य, बृहस्पति, शुक्र और शनि इनका योग हो तो लोभी, मानी, कवि, कारीगरजनोंका अधिपति और राजा से प्रीति रखनेवाला होता है ॥ २० ॥

चन्द्रारबुधजीवानां योगे शास्त्रविचक्षणः ।
नरेन्द्रस्य कृपापात्रं महाबुद्धिनरो भवेत् ॥ २१ ॥

चन्द्र, मंगल, बुध और बृहस्पति का योग हो तो शास्त्र में निपुण, राजा की दया का पात्र और महाबुद्धिमान् होता है ॥ २१ ॥

चन्द्रभौमज्ञशुक्राणामन्वये बन्धकीपतिः ।
निद्रालुः कलही नीचा वन्धुद्वेषी नरो भवेत् ॥ २२ ॥

चन्द्र, मंगल, बुध और शुक्र का योग हो तो वन्ध्या स्त्री का पति, बहुत निद्रावाला, कलह करनेवाला, नीच और बन्धुओं से द्वेष करनेवाला होता है ॥ २२ ॥

चंद्रभौमज्ञमंदानां योगे शूरकुलोद्भवः ।
पुत्रमित्रकलत्री च द्विमातृपितृको जनः ॥ २३ ॥

चन्द्र, मंगल, शुक्र और शनि का योग हो तो शूरवीर कुल में उत्पन्न, पुत्र-मित्र-स्त्रियों से युक्त और दो माता-पितावाला हो ॥ २३ ॥

चन्द्रारगुरुशुक्राणां योगे साहसिको नरः ।
विकलाङ्गो धनी पुत्री मानी प्राज्ञोऽपि जायते ॥ २४ ॥

चन्द्र, मंगल, बृहस्पति तथा शुक्र इनका योग हो तो हठी, विकलांग, धनी, पुत्रवान, अभिमानी तथा पंडित प्रकृति का मनुष्य होता है ॥ २४ ॥

चन्द्रारजीवमंदानां संयोगे बधिरोऽधनः ।
सोन्मादः स्थिरवाक्यश्च शूरा विज्ञो भवेन्नरः ॥ २५ ॥

चन्द्र, मंगल, बृहस्पति और शनि इनका मेल हो तो बहिरा, कंगाल, उन्माद-रोगी, स्थिर बोलनेवाला, शूर-वीर तथा विद्वान्, होता है ॥ २५ ॥

चन्द्रारभृगुमंदानां मिलने कुलटापतिः ।
सोद्वेगः सर्पतुल्याक्षः प्रगल्भो जायते नरः ॥ २६ ॥

चन्द्र, मंगल, शुक्र और शनि इनका योग हो तो कुल्टा स्त्री का पति, उद्वेगवान्, सर्प के समान नेत्रोंवाला और पाखण्डी होता है ॥ २६ ॥

चंद्रज्ञः जीवशुक्राणां संयोगे सुभगो धनी ।
द्विमातृपितृकः प्राज्ञो गतारिर्जायते नरः ॥ २७ ॥

चन्द्र, शुक्र, बुध तथा बृहस्पति इनका योग हो तो सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, धनी तथा दो माता और दो पितावाला, पंडित तथा शत्रुरहित होता है ॥ २७ ॥

चंद्रज्ञगुरुमंदानां योगे बंधुप्रियः कविः ।
तेजस्वी राजमंत्री च यशोधर्मयुतो नरः ॥ २८ ॥

चन्द्र, बुध, बृहस्पति और शनि इनका योग हो तो बन्धुजनों का प्रिय, कवि, तेजस्वी, राजा का मंत्री, यश और धर्मयुक्त होता है ॥ २८ ॥

इन्दुज्ञभृगुमंदानां योगे मात्रा विवर्जितः ।
त्वग्दोषी सुभगो दुःखी बहुभार्यो भवेन्नरः ॥ २९ ॥

चन्द्र, बुध, शुक्र और शनि का योग हो तो माता से रहित, त्वचा का रोगी, ऐश्वर्यवान्, दुःखी तथा बहुत स्त्रियोंवाला होता है ॥ २९ ॥

चंद्रेज्यसितसौरीणामन्वये पारदारिकः ।
प्राज्ञो निर्द्रव्यबंधुश्च स्थूलभार्यो भवेन्नरः ॥ ३० ॥

चन्द्र, बृहस्पति, शुक्र और शनि का योग हो तो पराई स्त्री से रमण करनेवाला, पण्डित, द्रव्यहीन, कई भाइयों से युक्त तथा मोटी स्त्रीवाला होता है ॥ ३० ॥

भौमज्ञगुरुशुक्राणां योगे स्त्रीकलहप्रियः ।
धनी सुशीलो नीरोगी च लोकपूज्यो भवेन्नरः ॥ ३१ ॥

मंगल, बृहस्पति, बुध तथा शुक्र इनका योग हो तो स्त्री से कलह करनेवाला, धनी, सुन्दर स्वभाववाला, रोगरहित और लोक में पूज्य नर होता है ॥ ३१ ॥

भौमज्ञगुरुसौरीणां योगे शूरश्च निर्धनः ।
सत्यशौचयुतो विद्वान्वादी वाग्मी नरो भवेत् ॥ ३२ ॥

मंगल, बुध, बृहस्पति और शनि का योग हो तो शूर-वीर, निर्धन, सत्य शौच से युक्त, विद्वान्, वाद करनेवाला और युक्ति से बोलनेवाला मनुष्य होता है ॥ ३२ ॥

भौमज्ञभृगुमंदानां सारमेयरुचिर्भवेत् ।
मल्लोऽन्नपुष्टो योद्धा च दृढांगो जायते नरः ॥ ३३ ॥

मंगल, बुध, शुक्र और शनि का योग हो तो कुत्ता सरीखी रुचियुक्त, मल्ल, अन्न से पुष्ट, योद्धा और दृढ़ अंगवाला होता है ॥ ३३ ॥

भौमेज्यभृगुमंदानां मिलने साहसप्रियः ।
धनी सतेजाः स्त्रीलोलः कितवो जायते नरः ॥ ३४ ॥

मंगल, बृहस्पति, शुक्र तथा शनि इनका योग हो तो हठी, धनी, तेजस्वी, स्त्रियों में चंचल और धूर्त होता है ॥ ३४ ॥

बुधेज्यभृगुमंदानां योगे कामातुरो नरः ।
विधेयभृत्यो मेधावी तीव्रः शास्त्ररतो भवेत् ॥ ३५ ॥

बुध, बृहस्पति, शुक्र तथा शनि का योग हो तो कामी, भृत्यों से सेवा करानेवाला, बुद्धिमान्, तीक्ष्ण प्रकृति, शास्त्र में रत होता है ॥ ३५ ॥

अथ पञ्चग्रहयोगाः ।

बहुप्रपञ्चो दुःखी च जायाविरहतोऽपि सः ।
सूर्याद्यैर्जीवपर्यन्तैर्नरः स्यात्पंचभिर्ग्रहैः ॥ १ ॥

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध तथा बृहस्पति इनका योग हो तो बहुत मायावी, दुःखी तथा स्त्री के वियोगवाला होता है ॥ १ ॥

गतसत्यो बन्धुहीनः परकर्मकरो नरः ।
क्लीबस्य च सखा सूर्यश्चन्द्रारबुधभार्गवैः ॥ २ ॥

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध तथा शुक्र ये ग्रह हों तो सत्यहीन, बन्धुहीन, पराये कर्म को करनेवाला और हिंजड़ों का सखा होता है ॥ २ ॥

अल्पायुर्विकलत्रश्च दुःखी सुतविवर्जितः ।
रवीन्दुभौमज्ञार्कीणां योगे बन्धनभागपि ॥ ३ ॥

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध और शनि ये ग्रह एक जगह होवें तो अल्प आयुवाला, स्त्रीरहित, दुःखी, पुत्ररहित और बन्धन का भागी होता है ॥ ३ ॥

जात्यन्धो बहुदुःखी च पितृमातृविवर्जितः ।
गानप्रीतो नरो भानुचन्द्रारगुरुभार्गवैः ॥ ४ ॥

सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु तथा शुक्र ये ग्रह एकत्र हों वो जाति से अन्धा, बहुत दुःखी, पिता-माता से वर्जित और गाने में प्रीतिवाला होता है ॥ ४ ॥

परद्रव्यहरोयोद्धा परतापकरः खलः ।
समर्थो जायते सूर्यचन्द्रारगुरुसौरिभिः ॥ ५ ॥

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बृहस्पति और शनि इनका योग हो तो पराया द्रव्य ऐंठनेवाला, योद्धा, लोगों को संताप देनेवाला, दुष्ट तथा समर्थ होता है ॥ ५ ॥

मानाचारधनैर्हीनः परदाररतो नरः ।
एकस्थैर्जायते भानुचन्द्रारभृगुसौरिभिः ॥ ६ ॥

सूर्य, चन्द्र, मंगल, शुक्र तथा शनि इनका योग हो तो मान, आचार तथा धन से हीन हो और पराई स्त्री से भोग करे ॥ ६ ॥

राजमन्त्री भूरिवित्तो यंत्रज्ञो दंडनायकः ।
ख्यातो जनो यशस्वी च रवींदुज्ञेज्यभार्गवैः ॥ ७ ॥

सूर्य, चन्द्र, बुध, बृहस्पति तथा शुक्र ये एक जगह हों तो राजा का मन्त्री, बहुत धनवाला, यन्त्र जाननेवाला, दण्ड देने का अधिकारी, विख्यात और यशस्वी होता है ॥ ७ ॥

परान्नभोजी सोन्मादः प्रियतमश्च वंचकः ।
उग्रो भीरुर्नरः सूर्यचन्द्रज्ञगुरुसौरिभिः ॥ ८ ॥

सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु तथा शनि ये एक जगह स्थित हों तो पराये अन्न का भोजन करनेवाला, उन्मादी, प्रिय जन को दुःख देनेवाला, ठग, भयानक तथा डरपोक होता है ॥ ८ ॥

धनपुत्रसुखैर्हीनो मृत्युत्साही च लोमशः ।
दीर्घो भवति सूर्येन्दुबुधशुक्रशनैश्वरैः ॥ ९ ॥

सूर्य, चन्द्र, बुध, शुक्र और शनि ये एक जगह स्थित हों तो धन, पुत्र और सुख से हीन, मृत्यु में उत्साहवाला और अधिक रोमोंवाला होता है ॥ ९ ॥

इन्द्रजालरतो वाग्मीचलचित्तोऽङ्गनाप्रियः ।
प्रायशः शत्रुभिर्भीतो रवींद्वीज्यसितासितैः ॥ १० ॥

सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति, शुक्र और शनि ये एक जगह स्थित हों तो इन्द्रजाल (बाजीगरी विद्या) में निपुण, युक्ति से बोलनेवाला, स्त्रियों का प्रिय और प्रायः अपने शत्रुओं से डरनेवाला होता है ॥ १० ॥

स्फीतो बहुहयः कामी नरोऽशोकश्चभूपतिः ।
सूर्याज्ञेज्यशुक्राणां योगे भूपतिवल्लभः ॥ ११ ॥

सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति तथा शुक्र ये एक जगह हों तो समृद्धिमान बहुत अश्वोंवाला, कामी, शोकरहित, सेनापति और राजा का प्रिय होता है ॥ ११ ॥

भिक्षाभोगी च रोगी च नित्योद्वेगी मलीमसः ।
जीर्णो नरो भानुभौमज्ञजीवशनिभिर्भवेत् ॥ १२ ॥

सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति और शनि ये एक जगह तो हो भिक्षा का भोजन करनेवाला, रोगी, नित्य उद्विग्न, मलिन तथा जीर्ण होता है ॥ १२ ॥

व्याधिभिः शत्रुभिर्ग्रस्तः स्थानभ्रष्टो बुभुक्षितः ।
नरः स्याद्विकलः सूर्यकुजज्ञभृगुसौरिभिः ॥ १३ ॥

सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र और शनि ये एक साथ हों तो सदा व्याधि और शत्रुओं से पीड़ा हो, स्थान से भ्रष्ट हो, भूखों मरे और सदा विकल रहे ॥ १३ ॥

विज्ञो विचारवांश्चैव धातुयंत्ररसायने ।
नरः प्रसिद्धो रव्यारगुरुशुक्रार्किभिर्युतैः ॥ १४ ॥

सूर्य, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि ये एक जगह हों तो पंडित धातु यन्त्र तथा रसायन में विचारवान् और प्रसिद्ध मनुष्य होता है ॥ १४ ॥

मित्रप्रियः शास्त्रवेत्ता धार्मिको गुरुसंमतः ।
दयालुः सूर्यसौम्येज्यभृगुपुत्रशनैश्चरैः ॥ १५ ॥

सूर्य, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि इनका योग हो तो मित्रों का प्रिय, शास्त्रवेत्ता, धार्मिक, गुरु का सलाहकार और दयालु होता है ॥ १५ ॥

साधुः कल्मषहीनश्च धनविद्यासुखान्वितः ।
बहुमित्रो नरश्चन्द्रभौमज्ञगुरुभार्गवैः ॥ १६ ॥

जिसके चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति और शुक्र ये एक जगह हों तो वह साधु, पापहीन, धन, विद्या तथा सुख से युक्त और बहुतेरे मित्रोंवाला होता है ॥ १६ ॥

परान्नपाचको निःस्वो मलिनस्तिमिरामयो ।
नरो भवति चंद्रारजीवशुक्रशनैश्चरैः ॥ १७ ॥

चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र और शनि इन ग्रहों का योग हो तो परान्नपाचक (रसोइया), दरिद्र, मलिन और तिमिररोगी होता है ॥ १७ ॥

बहुमित्रारिपक्षश्च दुःशीलः परपीडकः ।
मानी नरश्चन्द्रभौमबुधशुक्रशनैश्चरैः ॥ १८ ॥

चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र और शनि ये ग्रह एक जगह हों तो बहुत मित्र तथा शत्रुओंवाला, दुष्ट स्वभाव, परपीडक और अभिमानी होता है ॥ १८ ॥

राजमंत्री राजतुल्यो लोकपूज्यो गणाधिपः ।
चन्द्रज्ञगुरुशुक्रार्कियोगे जातो भवेन्नरः ॥ १९॥

चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र और शनि एक जगह हों तो राजा का मंत्री, राजा के समान माननीय, लोकपूज्य और अनेक मनुष्यों का स्वामी होता है ॥ १९ ॥

अशोकस्तामसो निःस्वः सोन्मादो राजवल्लभः ।
निद्रातुरो भौमबुधजीवशुक्रशनैश्चरैः ॥ २० ॥

मंगल, बुध, गुरु शुक्र और शनि इनका योग हो तो शोकरहित, तामसी (क्रोधी), दरिद्र, उन्मादी, राजा का प्रिय और निद्रा के वश में होनेवाला मनुष्य होता है ॥ २० ॥

अथ षड्ग्रहयोगाः ।

विद्याधर्मधनैर्युक्तो बहुभाषी च भाग्यवान् ।
सूर्याद्यैः शुक्रपर्यंतैलाभो भवति षड्ग्रहैः ॥ १ ॥

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु और शुक्र ये एक जगह हों तो बालक विद्या और धन से युक्त, बहुत बोलनेवाला तथा भाग्यवान् होता है ॥ १ ॥

परकार्यरतोदाता शुद्धात्मा चञ्चलाकृतिः ।
षड्भिर्ग्रहैर्विना शुक्रं रमते विजने जनः ॥ २ ॥

शुक्र को छोड़कर, सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति और शनि से छः ग्रह यदि एकत्र हों तो पराये काम में रत, दानी, शुद्ध आत्मा और चञ्चल आकारवाला होता है ॥ २ ॥

संशयी सुभगो मानी ख्यातो युद्धेऽरिमर्दकः ।
विनाजीवं ग्रहैः षड्भिर्वनादो रमते जनः ॥ ३ ॥

सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शुक्र तथा शनि ये छः ग्रह एक जगह हों तो संशययुक्त मनवाला, सुन्दर ऐश्वर्यवान्, मानी, विख्यात, युद्ध में शत्रुओं को परास्त करनेवाला और वन आदि में विचरने का प्रेमी होता है ॥ ३ ॥

अर्थप्रियो रणोत्साही पिशुनः क्रोधलोभवान् ।
अर्केन्दुभौमशुक्रेज्यमन्दैश्च सुभगो नरः ॥ ४ ॥

सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र, शनि ये ग्रह एक जगह हों तो धन का प्रेमी, युद्ध में उत्साही, चुगलखोर, क्रोधी, लोभी, सुन्दर और ऐश्वर्यवान् होता है ॥ ४ ॥

कलत्रहीनो निर्द्रव्यो राजमंत्री क्षमायुतः ।
रवीन्दुबुधजीवास्फुजिन्मन्दैः सुभगो नरः ॥ ५ ॥

सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र और शनि ये एक जगह हों तो स्त्री और द्रव्य से हीन, राजा का मन्त्री तथा क्षमाशील होता है ॥ ५ ॥

धनदारसुतैर्हीनस्तीर्थगामी वनाश्रितः ।
सूर्यारज्ञज्यशुक्रार्कपुत्रैर्योगे भवेन्नरः ॥ ६ ॥

सूर्य, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि ये एक जगह हों तो धन, स्त्री औ- पुत्र से हीन, तीर्थयात्री और वनवासी होता है ॥ ६ ॥

धनी पुत्री शुचिर्मंत्री बहुभार्यो नृपप्रियः ।
विनासूर्यग्रहैः षड्भिः प्रतापी जायते नरः ॥ ७ ॥

चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि ये छः ग्रह एक जगह हों तो धनी, पुत्रवान्, पवित्र, मंत्री, बहुत स्त्रियोंवाला, राजा का प्रिय और प्रतापी होता है ॥ ७ ॥

प्रायो दरिद्रो मूर्खश्च षड्भिर्वा पञ्चभिर्ग्रहैः ।
अन्योन्यदर्शनात्तेषां फलमेतत्प्रकीर्तितम् ॥ ८ ॥

छः या पाँच ग्रह एक जगह हों तो जातक दरिद्र और मूर्ख होता है, परस्पर दृष्टि सम्बन्ध होने से ही यह फल कहा गया ॥ ८ ॥

अथ नाभसयोगाः ।

नौका योग—

लग्नात्सप्तमपर्यन्तैर्ग्रहैः सर्वैः शुभाशुभैः ।
क्रमेण संस्थितैः प्रोक्तोयोगो नौकाभिधो बुधैः ॥ १ ॥

यदि लग्न से सातवें घर तक क्रमशः शुभाशुभ ग्रह निरन्तर स्थित हों तो उसे नौका कहेंगे ॥ १ ॥

अन्योपजीवविभवो बह्वायुः ख्यातकीर्तिमान् ।
कृपणो मलिनो लुब्धो नौयोगे चञ्चलो नरः ॥ २ ॥

नौकायोग में जन्म लेनेवाला मनुष्य पराधीन वृत्ति, धनी, विख्यात, बहुत आयुवाला, कीर्तिशाली, कृपण, मलिन, लोभी तथा चञ्चल होता है ॥ २ ॥

कूटयोग—

चतुर्थात्कर्मपर्यन्तैः क्रमेण पतितैर्ग्रहैः ।
विख्यातः कूटनामाऽसौयोगः प्रोक्तो मनीषिभिः ॥ ३ ॥

यदि चौथे घर से दशवें घर तक क्रमशः निरन्तर ग्रह पड़े हों तो उसे पंडित जन कूटयोग कहते हैं ॥ ३ ॥

मिथ्यावादी शठः क्रूरः कितवो बंधुपालकः ।
निष्किंचनः शैलवासी कूटयोगभवो नरः ॥ ४ ॥

कूटयोग में उत्पन्न मनुष्य मिथ्या विवादी, शठ, क्रूर, धूर्त, बन्धुओं का पालक, द्रव्यहीन और पर्वतवासी होता है ॥ ४ ॥

छत्रयोग—

सप्तमाल्लग्नपर्यंतैः खेटैः सर्वैः शुभाशुभैः ।
छत्रयोगः समाख्यातो ब्रह्मरुद्रादिभि सुरैः ॥ ५ ॥

यदि सातवें घर से लग्न पर्यन्त शुभाशुभ ग्रह पड़े हों तो ब्रह्मा शिव आदि देवता उसे छत्रयोग कहते हैं ॥ ५ ॥

प्रकृष्टधीर्दयालुश्च दीर्घायुः स्वजनाश्रयः ।
वयसि प्रथमेऽन्त्ये च सुखी क्षत्रप्रियो नरः ॥ ६ ॥

इस योग में जन्म लेनेवाला मनुष्य उत्तम बुद्धियुक्त, दयालु, दीर्घायु, स्वजनों का आश्रय और पहली तथा पिछली अवस्था में छत्रधारी राजा होता है ॥ ६ ॥

कार्मुक योग —

दशमाश्च चतुर्थान्तैर्गगनेन्द्रैः शुभाशुभैः ।
गतैर्योगः कार्मुकाख्यः ख्यातोऽसौ पंडितोत्तमैः ॥७॥

यदि दशवें घर से चौथे घर तक क्रमशः शुभाशुभ ग्रह पड़े हों तो उत्तम पंडितों ने इसे कार्मुकयोग कहा है ॥ ७ ॥

वयोमध्ये भाग्यहीनो गुप्तिपालो वने रतः ।
मिथ्यावादी च चौरश्च कार्मुके जायते नरः ॥ ८ ॥

कार्मुकयोग में जन्म लेनेवाला मनुष्य जेल का रक्षक, वनवासी, अवस्था के मध्य में भाग्यहीन, झूठा और चोर होता है ॥ ८ ॥

यव, पद्मयोग—

लग्नास्तयोर्ग्रहैः सौम्यैः पापैश्च सुखकर्मगैः ।
वज्रः स्याद्विपरीतस्थैर्यवः पद्मं च मिश्रितैः ॥ ९ ॥

यदि लग्न और सातवें घर में शुभग्रह हों, चौथे, दशवें घर में पापग्रह बैठे हों तो वज्रयोग कहा जाता है। यदि इससे विपरीत ग्रहों की स्थिति हो तो यवयोग होता है। यदि इन चारों घरों में शुभाशुभ मिश्रित ग्रह पड़े हों तो पद्मयोग होता है ॥ ९ ॥

वज्रयोग—

सुखी च सुभगः शूरो मध्ये भाग्येन वर्जितः ।
निःस्नेहश्च विरुद्धश्च वज्रयोगे खलो नरः ॥ १० ॥

वज्रयोग में जन्म लेनेवाला मनुष्य सुखी, सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, शूर-वीर, मध्य अवस्था में भाग्यहीन, रूक्ष स्वभाव और विरुद्ध प्रकृति का होता है ॥१०॥

दाता च स्थिरचित्तश्च व्रतादिनियमैर्युतः ।
मध्ये सुखार्थपुण्याढ्यो यवयोगे जनो भवेत् ॥ ११ ॥

यवयोग में जन्म लेनेवाला मनुष्य दानी, स्थिर चित्त, व्रत-नियमों से युक्त, मध्य-अवस्था में सुखी, धनी और पुण्यात्मा होता है ॥ ११ ॥

स्थिरायुर्दीर्घकीर्तिश्च कांताशुभशतैर्युतः ।
भूयोगुणमदैर्युक्तः पद्मयोगे जनो भवेत् ॥ १२ ॥

पद्मयोग में जन्म पानेवाला मनुष्य स्थिर आयु, दीर्घ कीर्ति, सैकड़ों स्त्रियों और गुणमद से युक्त होता है ॥ १२ ॥

वापी शकट विहगयोग—

केन्द्राद्द्वितीयगैः सर्वैर्वापी वापि तृतीयगैः ।
शकटं वास्तलग्नस्थैर्विहगैः सुखकर्मगैः ॥ १३ ॥

यदि केन्द्र से दूसरे घर में अर्थात् चारो पणफर में सब ग्रह स्थित हों या तृतीय केन्द्र अर्थात् चारों आपोक्लिम में सब ग्रह स्थित हों तो वापीयोग होता है। सातवें घर और लग्न में सब ग्रह स्थित हों तो शकट योग होता है। चौथे तथा दशवें घर में सब ग्रह हों तो विहगयोग होता है ॥ १३ ॥

वाणीयोग—

निपुणो निधिकार्येषु स्थिरद्रव्यः सुखैर्युतः ।
प्रहृष्टमुखनेत्रश्च तृप्तो वाप्यां नरः सदा ॥ १४ ॥

वापीयोग में जन्म पानेवाला मनुष्य सब कामों में निपुण स्थिर द्रव्य-वाला, सुखी, अतिशय प्रसन्न मुख और नेत्रवाला हो और सदा प्रसन्न रहे ॥ १४ ॥

शकटयोग—

मूर्खः कुभार्यो रोगार्तः शकटप्राप्तजीविकाः ।
निःस्वो बन्धुविहीनश्च शकटे जायते नरः ॥ १५ ॥

यदि शकटयोग में जन्म हो तो मूर्ख, दुष्ट स्त्रीवाला, रोग से पीड़ित, शकट (बैलगाड़ी से) जीविका करनेवाला, दरिद्र तथा बन्धुहीन होता है ॥ १५ ॥

भ्रमणेऽतिरुचिर्हृष्टः सुरतंप्राप्तजीविकाः ।
निकृष्ट कलहप्रीतो विहंगे मानवो भवेत् ॥ १६ ॥

विहंग योग में जन्म पानेवाला मनुष्य भ्रमण से प्रेम रखनेवाला, मैथुन करके जीविका चलानेवाला, निकृष्ट और कलही होता है ॥ १६ ॥

चक्रयोग—

अर्थादेकान्तरस्थैश्च ग्रहैर्जलधि रुच्यते ।
लग्नादेकांतरस्थैश्च चक्रं सर्वैर्ग्रहैः स्मृतम् ॥ १७ ॥

यदि दूसरे घर से एक अन्तर करके सब ग्रह (अर्थात् २।४।६।८।१०।१२) स्थानों में स्थित हों तो जलधियोग होता है और यदि लग्न से एकान्तर स्थानों (अर्थात् १।३।५।७।९।११) में सब ग्रह स्थित हों तो चक्रयोग होता है ॥ १७ ॥

जलधियोग—

बह्वर्थरत्नसम्पन्नः पुत्री भोगी जनप्रियः ।
सुशीलः स्थिरचित्तश्च जलधौ जायते नरः ॥ १८ ॥

जलधियोग में जन्म पानेवाला मनुष्य बहुतेरे द्रव्य तथा रत्न से युक्त, पुत्रवा , भोगी, सबका प्रिय, सुशील और स्थिरचित्त होता है ॥ १८ ॥

प्रणताशेषभूपालाः सत्सेवितपदांबुजः ।
चक्रयोगे समुत्पन्नो महाराजो भवेन्नरः ॥ १९ ॥

चक्रयोग में जन्म पानेवाले मनुष्य को सब राजा प्रणाम करते, बड़े लोग भी उसके चरण-कमल की सेवा करते हैं, वह ऐसा उत्तम राजा होता है ॥ १९ ॥

हल, शृङ्गाटकयोग—

धनस्थाने त्रिकोणे च ग्रहैः सर्वैर्हलं स्मृतम् ।
लग्नत्रिकोणगैः खेटैः शृङ्गाटकमुदाहृतम् ॥ २० ॥

यदि दूसरे, नवें और पाँचवें घर में सब ग्रह हों तो वह हलयोग होता है। यदि लग्न और नवें घर में सब ग्रह स्थित हों तो शृङ्गाटक योग होता है ॥ २० ॥

बह्वाशी च दरिद्री च कर्षको बंधुवर्जितः ।
सोद्वेगो दुःखितः प्रेष्यो हलयोगभवो नरः ॥ २१ ॥

हल हलयोग में जन्म पानेवाला मनुष्य बहुत भोजन करनेवाला, दरिद्र, किसान, बंधुजनों से रहित, उतावला, दुःखित और आज्ञाकारी सेवक होता है ॥ २१ ॥

हास्यवक्त्रः शुभाचारो नृपभीतः कलिप्रियः ।
धनाढ्यो युवतिप्रेष्यो योगे शृंगाटके नरः ॥ २२ ॥

शृङ्गाटक योग में जन्म लेनेवाला मनुष्य हँसमुख, शुभ आचरण करनेवाला, राजा से भयभीत, झगड़ालू, धनाढ्य और युवती स्त्री का गुलाम होता है ॥ २२ ॥

लग्नमारभ्यकेन्द्रेभ्यो चतुर्गृहगतैर्ग्रहैः ।
यूप-बाणौ शक्ति-दंडौ चत्वारोऽमी स्मृता बुधैः ॥ २३ ॥

लग्न से लेकर (चारों) केन्द्रों से चार घर में अर्थात् (१ । २ । ३ । ४ में, ४ । ५ । ६ । ७ में, ७ । ८ । ९ । १० में, १० । ११ । १२ । १ में) सब ग्रह स्थित हों तो पंडित जनों ने यथाक्रम से यूप, बाण, शक्ति और दंड ये चार योग कहे हैं। जैसे—लग्न दूसरे, तीसरे और चौथे घर में सब ग्रह हों तो यूप योग होता है। इसी तरह बाण आदि योगों को भी जानना चाहिये ॥ २३ ॥

यूपयोग—

आत्मरक्षारतस्त्यागी सुखसत्यव्रतैर्युतः ।
विशिष्टो मंत्रवादी च यूपयोगे नरो भवेत् ॥ २४ ॥

यूपयोग में जन्म पानेवाला मनुष्य अपनी रक्षा में तत्पर, त्यागी, सुखी, सत्य और नियम से युक्त, श्रेष्ठजन और मंत्रवादी होता है ॥ २४ ॥

बाणयोग—

शरकर्त्ता दस्युसेवी मांसादो मृगबंधकः ।
हिंसकः शिल्पकारी च शरयोगोद्भवो भवेत् ॥ २५ ॥

शर (बाण) योग में जन्म पानेवाला बाण बनानेवाला, चोरों का साथी, मांस भक्षणकारी, मृगों को बाँधनेवाला, हिंसक और शिल्पी होता है ॥ २५ ॥

शक्तियोग—

चिरायुर्युद्धदक्षश्च सुभगः सुस्थिरोऽलसः ।
नीचो दुःखी दरिद्रश्च शक्तियोगे भवेन्नरः ॥ २६ ॥

शक्तियोग में जन्म पानेवाला मनुष्य दीर्घायु, युद्ध में चतुर, सुंदर, ऐश्वर्यवान्, सुस्थिर, आलसी, नीच, दुःखी और दरिद्र होता है ॥ २६ ॥

दंडयोग—

निःस्वो नष्टसुतस्त्रीको बंधुबाह्यःसुनिर्घृणः ।
नीचप्रेष्यो दुःखितश्च दंडयोगे भवेन्नरः ॥ २७ ॥

दंडयोग में जो मनुष्य जन्मे वह दरिद्र, पुत्रहीन, स्त्रीहीन, बंधुहीन, दयालु, नीचों का आज्ञाकारी और दुखित होता है ॥ २७ ॥

अर्धचन्द्र, गदायोग—

केन्द्रादिभिन्नस्थानेभ्यः सप्तर्क्षगतैर्ग्रहैः ।
अर्धचंद्रो गदा प्रोक्ता केन्द्रात्पार्श्वद्वयस्थितैः ॥ २८ ॥

यदि केन्द्र से भिन्न स्थानों से लेकर सात राशि तक क्रमशः ग्रह पड़े हों तो अर्ध चन्द्रयोग होता है। यह योग आठ प्रकार का होता है, जैसे—द्वितीय से अष्टम तक एक, तृतीय से नवम तक द्वितीय, पंचम से एकादश तक तृतीय इत्यादि ऐसे ही छठाँ, आठवाँ, नवाँ, एकादश और द्वादश स्थानों से जाने। यदि केन्द्र स्थानों की दोनों ओर स्थित सातों ग्रह पड़े हों तो गदायोग होता है ॥ २८ ॥

बली राजप्रियः कांतो हेमरत्नैरलंकृतः ।
अर्धचंद्रे चमूनाथः सुभगो जायते नरः ॥ २९ ॥

अर्ध चन्द्रयोग में जन्म पानेवाला मनुष्य बली, राजा का प्रिय, सुवर्ण-रत्न से भूषित, सेना का पति, सुन्दर और ऐश्वर्यवान् होता है ॥ २९ ॥

शास्त्रे योगे प्रवीणश्च सद्यो युक्तार्थतत्परः ।
यज्वा धनी सुप्रसन्नो गदायोगोद्भवो नरः ॥ ३० ॥

गदायोग में जन्म लेनेवाला नर शास्त्र और योग प्रवीण, शीघ्र ही योग्य कार्य में तत्पर, यज्ञ करनेवाला, धनी, सुन्दर और प्रसन्न होता है ॥ ३० ॥

एकादिभिः स्थितैः सर्वैर्ग्रहैर्गोला युगः क्रमात् ।
शूलकेदारपाशाश्च दामिनी वीणया सह ॥ ३१ ॥

यदि एक से सात राशियों तक सब ग्रह पड़े हों तो क्रम से गोल, युग, शूल, केदार, पाश, दामिनी और वीणा योग होते हैं। अर्थात् जिस किसी एक स्थान में सातों ग्रह पड़े हों तो गोल, दो स्थानों में जहाँ-तहाँ सब ग्रह हों

तो युग, तीन स्थानों में शूल, चार स्थानों में केदार, पाँच स्थानों में पाश, छः में दामिनी और सात स्थानों से सातों ग्रह पड़े हों तो वह वीणायोग होता है ॥ ३१ ॥

गोलयोग—

विद्याहीनो धनैर्हीनो मानहीनोऽतिदुःखितः ।
गोलयोगे समुत्पन्नो मलिनो जायते नरः ॥ ३२ ॥

गोलयोग में जन्म पानेवाला मनुष्य विद्याहीन, धनहीन, मानहीन, दुखित तथा मलिन होता है ॥ ३२ ॥

युगयोग—

पाखंडभाग्यो निर्द्रव्यः पुत्रमातृविवर्जितः ।
युगयोगे धर्महीनो लोकनिंद्योऽपि जायते ॥ ३३ ॥

युगयोग में जन्म पानेवाला पाखण्डी, धनहीन, पुत्र और माता से हीन, धर्महीन तथा लोक में निन्दित होता है ॥ ३३ ॥

शूलयोग—

तीक्ष्णोऽलसो निर्धनश्च हिंस्रः शूरो बहिष्कृतः ।
संग्रामलब्धशब्दश्च शूलयोगे जनो भवेत् ॥ ३४ ॥

शूलयोग में जन्म पानेवाला मनुष्य हिंसक, आलसी, तीक्ष्ण प्रकृति, निर्धन, शूरवीर, समाज से बहिष्कृत, युद्ध में प्राप्त शब्द अर्थात् खिताब पानेवाला होता है ॥ ३४ ॥

केदारयोग—

कृषौ रतः सत्यवादी स्वबाहुविहितोदयः ।
धनी सुखी चञ्चलात्मा केदारोत्थो नरो भवेत् ॥ ३५ ॥

केदारयोग में उत्पन्न मनुष्य खेती करनेवाला, सत्यवादी, अपनी भुजा के बल से कमानेवाला, धनी, सुखी और चंचल स्वभाववाला होता है ॥ ३५ ॥

पाशयोग—

कार्ये दक्षः प्रपंची च बहुभाषी च बन्धुभाक् ।
विशीलो बहुलक्ष्मीकः पाशे भृत्ययुतो भवेत् ॥ ३६ ॥

पाशयोग में उत्पन्न मनुष्य कार्य में चतुर, मायावी, बहुत बोलनेवाला, शीलरहित, बहुत धनी और सेवकों से युक्त होता है ॥ ३६ ॥

उपकारी धनी मूढः पशुपुत्रसमृद्धिमान् ।
दामयोगभवो लोके रत्नैर्भवति पूरितः ॥ ३७ ॥

दामयोग में उत्पन्न मनुष्य उपकारी, धनी, मूढ़, पशु-पुत्रादिकों का समृद्धि से युक्त तथा रत्नों से विभूषित होता है ॥ ३७ ॥

वीणायोग—

नृत्यगीतप्रियो नेता बहुभृत्यो धनी सुखी ।
कार्येषु निपुणो लोके वीणायोगे च जायते ॥ ३८ ॥

वीणायोग में उत्पन्न प्राणी नृत्य-गीत का प्रेमी, नायक, बहुत भृत्योंवाला धनी, सुखी और सभी कार्यों में निपुण होता है ॥ ३८ ॥

द्विस्वभावे स्थिरे खेटैश्चरे च सकलैः स्थितैः ।
नलोऽथ मुसलो रज्जुर्योगाः प्रोक्ताः पुरातनैः ॥ ३९ ॥

द्विस्वभाव, स्थिर वा चर राशियों पर यदि सब ग्रहों की स्थिति हो तो क्रम से पुरातन पंडितों ने उसे नल, मुसल, रज्जु अर्थात् द्विस्वभाव राशि में सब ग्रह स्थित हों तो नल, स्थिर में मुसल और चर में रज्जु कहा है ॥ ३९ ॥

नल-मुसल-रज्जुयोग—

न्यूनातिरिक्तदेहश्च निपुणो धनसंचयी ।
बन्धुप्रियः सुरूपश्च नलयोगे भवेन्नरः ॥ ४० ॥

नलयोग में जन्म पानेवाला नर हीन अंगवाला, निपुण, धन-संग्रही, बन्धुओं का प्रिय और सुरूपवान होता है ॥ ४० ॥

राजमान्यो धनैर्युक्तः स्यात पुत्री नृपप्रियः ।
मुसले स्थिरचित्तश्च कर्मोद्युक्तश्च जायते ॥ ४१ ॥

मुसलयोग में उत्पन्न मनुष्य राजा से मान पानेवाला, धनी, पुत्रवान्, राजाका प्रिय, स्थिर चित्तवाला और कार्य में उद्योग करनेवाला होता है ॥ ४१ ॥

परदेशे द्रव्यभागी सुरूपो दानतत्परः ।
क्रूरः खलस्वभावश्च रज्जुयोगे जनो भवेत् ॥ ४२ ॥

रज्जुयोग में जायमान मनुष्य परदेश में द्रव्य प्राप्त करनेवाला, रूपवान्, दान में तत्पर, क्रूर और दुष्ट स्वभाव का होता है ॥ ४२ ॥

मालायोगः सर्पयोग—

केन्द्रस्थानेषु सर्वेषु शुभैः सर्वेश्च संस्थितैः ।
मालायोगः सर्वपापैः सर्पयोगः प्रकीर्तितः ॥ ४३ ॥

यदि सब शुभग्रह केन्द्र स्थानों में ही स्थित हों तो मालायोग होता है। इसी प्रकार केन्द्र में सब पापग्रह पड़े हों तो सर्पयोग होता है ॥ ४३ ॥

माला-सर्पयोग—

वस्त्रवाहनभोगाद्युक्तः कांतासुहृत्प्रियः ।
मालायोगे समुत्पन्नः सुखी भवति सर्वदा ॥ ४४ ॥

मालायोग में उत्पन्न मनुष्य वस्त्र, वाहन, धन तथा भोग से युक्त, स्त्री और मित्रजनोंका प्रिय और सदा सुखी रहे ॥ ४४ ॥

क्रूरो निःस्वो दुःखितश्च परान्ने निरतः सदा ।
दीनश्च विषमो लोके सर्पयोगे प्रजायते ॥ ४५ ॥

सर्पयोग में उत्पन्न मनुष्य क्रूर, दरिद्र, दुःखित, पराये अन्न का भोजन करनेवाला, दीन और कुटिल होता है ॥ ४५ ॥

अथ वर्षा-धान्यादि विचारः ।

शाकं वह्निगुणं कृत्वा मुनिभिर्भागमाहरेत् ।
शेषं नेत्रगुणं कृत्वा पंच पंच नियोजयेत् ॥ १ ॥
लब्धं वह्निगुणं कृत्वा धान्यादिः सप्तभागतः ।
शून्ये पञ्चैव विज्ञेयाः सर्वमेव निरूपयेत् ॥ २ ॥
वर्षा धान्यं तृणं शीतमुष्णो वायुश्च वृद्धयः ।
क्षयश्च विग्रहश्चैव ज्ञेयमेवं क्रमेण च ॥ ३ ॥

वर्तमान शक का तीन से गुणा करे, उसमें सात का भाग दे जो बाकी हो, दुगुना करके पाँच-पाँच मिला दे। लब्ध अङ्क को तिगुना कर फिर सात का भाग दे, जो बाकी रहे उसमें पाँच मिलावे। इसी प्रकार करता रहे। यदि शून्य बचे तो उसे पाँच ही जाने। फिर क्रम से वर्षा, धान्य, तृण, शीत, तेज (अग्नि) वायु, वृद्धि, क्षय तथा विग्रह इनको जाने।

उदाहरण—शाके १८१५ है इसको तीन से गुणा किया तो ५४४५ हुए। इसमें सात का भाग दिया तो ७७७ लब्ध हुआ। बाकी ६ बचे इसको दूना किया १२ हुआ। इसमें पाँच मिलाये तो १७ हुए। जिसका तात्पर्य निकला कि इस साल में १७ विश्वा वर्षा है। उधर लब्ध ७७७ हुए हैं। इनको तिगुना कर सात का भाग दे बाकी रहे में पाँच मिला के धान्य लब्ध को इसी तरह तिगुना करके सात का भाग देकर शेष में पाँच जोड़कर तृणादि का विचार करे ॥ १–३ ॥

शाकं शक्रगुणं कृत्वा भागो वेदैर्विधीयते ।
शेषे मेघा भवन्तीह चावर्ताद्या तथाक्रमम् ॥ ४ ॥

वर्तमान शाके को चौदह से गुणा कर चार का भाग दे, जो बाकी रहे उससे क्रमशः आवर्त्त आदि मेघ जाने ॥ ४ ॥

आवर्तं चिंतिता वृष्टिः समावर्ते सुशोभना ।
पुष्करे दुष्करा वृष्टिर्द्रोणो वर्षति सर्वदा ॥ ५ ॥

अर्थात् एक बचे तो आवर्त्त मेघ में सोची हुई वर्षा हो, समावर्त्त मेघ में शुभ वर्षा हो, पुष्कर में वर्षा दुर्लभ हो और द्रोण मेघ में सदा वर्षा होती रहे ॥ ५ ॥

दशाभिर्दिवसैर्मासो मासचतुष्केण लभ्यते दिवसः ।
दिवसद्वयेन घटिका घटिकायुग्मेन पलमेकम् ॥ ६ ॥

दश दिन से एक मास, चार महीनों से एक दिन, दो दिन से एक घटी और दो घटी से एक पल उपलब्ध होता है। (यह किसी दूसरे ग्रन्थ का श्लोक यहाँ आ पड़ा है। क्योंकि इसका पूर्वापर सम्बन्ध मालूम नहीं पड़ता) ॥ ६ ॥

ध्रुवांको दशभिर्गुण्यो भानुना त्रिंशताऽपि च ।
षष्ठिभिश्च हरेद्भागं दशा सूर्यादितो भवेत् ॥ ७ ॥

ध्रुवांक को दस से गुणा करे, फिर बारह से गुणा करके तीस से गुणे, फिर साठ से भाग दे। तदनन्तर सूर्यादिकों की दशा जाने ॥ ७ ॥

आदित्यात्त्रिगुणो राहुः सूर्यचंद्रयुतो गुरुः ।
आदित्याद्द्विगुणं भौमे मेलयित्वा शनिर्भवेत् ॥ ८ ॥
चंद्रभौमौ बुधो ज्ञेयः केतुश्च मंगलो यथा ।
चंद्रमा द्विगुणः शुक्रो दशाचक्रमुदाहृतम् ॥ ९ ॥

सूर्य से तीगुनी राहु की दशा होती है। सूर्य और चन्द्रमा से युक्त बृहस्पति की दशा, सूर्य से दूनी और मंगल से युक्त शनि की दशा होती है। चन्द्रमा और मंगल की दशा मिलने से बुध की दशा, मंगल के समान केतु की दशा और चन्द्रमा से दूने समय तक शुक्र की दशा होती है ॥ ८-९ ॥

अथ दशाभुक्तभोग्यविचारः ।

भयातघट्यो गुणिताःस्ववर्षैराप्ता भभोगैः शरदोवशिष्टम् ।
हन्यात्तुसूर्येण तथै मासं तथा खरामेण दिनानि शेषात् ॥ १ ॥

जिस नक्षत्र में जन्म हो, उसके पूर्व नक्षत्र की घटियों को साठ ६० में न्यून कर उसमें इष्ट काल को जोड़ दे, वही भयात है। फिर जन्म-नक्षत्र की घटियों को पूर्व ६० में न्यून किये घटी में जोड़ दे, वही भ-भोग होगा। अत्र भयात को नक्षत्रपति के वर्ष से गुण दे, फिर भ-भोग घटी से उसमें भाग दे। जो अङ्क आवे, उसे ही वर्ष जाने। शेष को बरह से गुणा कर मास जाने। उससे भी शेष बचे, उसे तीस से गुण कर भ-भोग का भाग देकर दिन जाने ॥ १ ॥

तथैव षष्ठ्या ६० घटिकाः पलानि
विशोधयेदायुषि तत्र शेषम् ।
आयुर्दशामिश्च दशाहताचेदन्तर्दशा
स्याद्दशमिश्च भागैः ॥ २ ॥

जो बाकी रहे, उसका साठ से गुणा करके भ-भोग की घटियों का भाग दे। जो लब्ध हो, उसे घटी जाने। पीछे साठ से गुणा करके भाग दे, जो पल लब्ध हो, उसे घटी जान कर भोग्य दशा जाने। भोग्य दशा से जिसकी अन्तर्दशा देखनी हो, उस ग्रह की दशा को गुणा कर दश का भाग दे, तिससे लब्ध को मासादिक जानना चाहिए ॥ २ ॥

अथ परमोच्चस्थग्रहफलम् ।

पूर्णो धनै परिजनैः सुतदारकोशै-
श्चण्डप्रतापनिकरैर्विजितारिपक्षः ।
कोपाकुलो निजजनैः परिपूर्णमान-
स्तुंगस्थिते दिनकरे भवतीह लोके ॥ १ ॥

यदि सूर्य परम उच्च का हो तो मनुष्य धन, परिजन, पुत्र, स्त्री, कोश इनसे परिपूर्ण हो। उसका प्रचण्ड प्रताप बढ़े, वह शत्रुओं को जीते और क्रोधयुक्त तथा अपने जनों से परिपूर्ण रहे ॥ १ ॥

दाता भोक्ता प्रचुरयुवतीनायको विश्वबंधु—
र्नानाक्रीडापरिणतमतिश्चंचलात्मस्वभावः ।
पुत्रैः पौत्रैर्हयगजरथैः पूर्णगेहो विलासो
चन्द्रे तुंगे भवति मनुजो लोकमान्यः प्रसन्नः ॥ २ ॥

यदि चन्द्रमा परम उच्च का हो तो दानी, भोगी, बहुत-सी स्त्रियों का पति, विश्व का बन्धु, अनेक क्रीडाओं में लगी हुई बुद्धिवाला, चञ्चल स्वभाव, पुत्र, पौत्र, घोड़ा, हाथी तथा रथ से भरपूर, विलासी, लोगों में मान्य तथा प्रसन्न रहता है ॥ २ ॥

चंडप्रतापवशिताखिललोकपालः
शस्त्रप्रहारनिपुणो धनधान्यपूर्णः ।
रक्ताधिको रणधरासु पुरः प्रयातो—
तुंगस्थिते क्षितिसुते मनुजः प्रतापी ॥ ३ ॥

यदि मंगल परम उच्च का हो तो वह अपने प्रचण्ड प्रताप से सब राजाओं को वश में करनेवाला, शस्त्र-प्रहार में निपुण, धन-धान्य से परिपूर्ण, अधिक रक्तवाला, रण भूमि में आगे रहनेवाला तथा प्रतापी मनुष्य होता है ॥ ३ ॥

अध्यापकःशुभमतिर्नृपतिप्रधानो
लोकोत्तरातिविभवो गुणवानुदारः ।
सत्कीर्तिमान्सुतनयो जिरुजः सुमित्र—
स्तुंगे बुधे भवति सर्वजनोपकारी ॥ ४ ॥

जिसके बुध परम उच्च का हो वह अध्यापक शुभ बुद्धिवाला, राजा का मन्त्री, बहुत धनी, गुणवान्, उदार, श्रेष्ठ, कीर्तिमान्, सुन्दर पुत्रोंवाला, रोगरहित, उत्तम मित्रोंवाला और सब जनों का उपकारी होता है ॥ ४ ॥

भूमण्डलीपतिरुदारमतिश्च दाता
ब्रह्मात्मबोधविमलो बहुपुत्रपौत्रः ।
तीर्थानुरागहृदयो दृढदेहबन्धु—
स्तुंगे गुरौ नरपतिर्धनवानुदारः ॥ ५ ॥

जिसके बृहस्पति उच्च का हो वह राजाओं में शिरोमणि, दानी, उदार बुद्धि, ब्रह्मात्मबोध से विमल, बहुत पुत्र-पौत्रोंवाला, तीर्थों में अनुरागयुक्त हृदयवाला, दृढ शरीर, बन्धुयुक्त उदार और धनवान् राजा होता है ॥ ५ ॥

देशाधिपी दृढमतिः सुतनुः सुमन्त्री
योद्धा समस्तजनपालनलब्धकीर्तिः ।
चौरादिशासनपरः सुकविः सुबुद्धि—
स्तुंगे कवौ कुलपतिर्मनुजोऽतिहृष्टः ॥ ६ ॥

यदि शुक्र उच्च का हो तो अनेक देशों का अधिपति, दृढ बुद्धि, सुन्दर शरीर, सुमन्त्री, योद्धा, समस्त जनों का पालन करने से लब्ध कीर्तिवाला, चोर आदिकों को दण्ड देने में निपुण, सुन्दर कवि, सुबुद्धियुक्त कुल का पति तथा अतिशय प्रसन्न मनुष्य होता है ॥ ६ ॥

आसागरं क्षितिपतिर्दृढदेहबन्धो
हिंसारतो रणभुवि प्रथितप्रभावः ।
हस्त्यश्वरत्नमणिभिः परिपूर्णगेहः
सूर्यात्मजे भवति तुङ्गगते मनुष्यः ॥ ७ ॥

शनि यदि परम उच्च का हो तो समुद्रपर्यन्त पृथ्वी का राजा, दृढ शरीर, बन्धुयुक्त, हिंसा में रत, रण-भूमिमें विख्यात, हस्ती, अश्व, रत्न तथा मणि इनसे भरपूर घरवाला होता है ॥ ७ ॥

भवति धरणिपालो नीचजातिः प्रतापी
हयगजरथयुक्तो जातिवर्गे विरक्तः ।

कुटिलमतिरनीतिभूरिभांडारयुक्त-
स्तमसि मिथुनसंस्थे जायते मानवेन्द्रः ॥ ८ ॥

यदि राहु मिथुन का हो तो नीच जाति, किन्तु प्रतापी राजा होता है। घोड़े, हाथी, धन से युक्त और जाति के लोगों से विरक्त रहता है। वह कुटिल बुद्धि, नीतिहीन, बहुत धनी तथा राजा होता है ॥ ८ ॥

अथ रव्यादीनां परमोच्चांशाः ।

दशांशेऽर्कः शशी त्र्यंशे भौमोऽष्टाविंशके तथा ।
बुधः पंचदशांशे च पंचमांशे बृहस्पतिः ॥ १ ॥
सप्तविंशांशके शुक्रो विंशत्यंशे शनैश्चरः ।
सैंहिकेयश्च विंशांशे परमोच्चं प्रकीर्तितम् ॥ २ ॥

सूर्य का दश अंश, चन्द्रमा का ३ अंश, मंगल का अट्ठाईस अंश, बुध का पन्द्रह अंश, बृहस्पति का ५ अंश, शुक्र का सत्ताईस अंश, शनि का बीस अंश, और राहु का भी २० ही अंश तक परमोच्च कहाता है ॥ १-२ ॥

इति भाषार्थसंयुक्ता ज्यौतिषे लग्नचन्द्रिका ।
वासुदेवेन संशोध्य परार्थाय परिष्कृताः ॥
शराश्विनखतुल्येऽब्दे वैक्रमे फाल्गुने सिते ।
पञ्चम्यां भृगुजे शम्भुकृपया पूर्णता गता ॥

इति राजस्थानमण्डलान्तर्गत 'बिसाऊ' ग्राम निवासि श्रीनागर-
मलगुप्तात्मज दैवज्ञवाचस्पति श्रीवासुदेवकृता
लग्नचन्द्रिका भाषाटीका समाप्ता ।